श्रीः

लॉर्ड किचनर।

लेखक

"मारवाड़ी" नागपुर तथा "बड़ाबाज़ार गज़ट" कलकत्ताके भूतपूर्व्व सम्पादक

पण्डित चन्द्रशेखर पाठक

मुद्रक और प्रकाशक

निहालचन्द वर्म्मा

दुर्गा प्रेस,

नं० ७४ बड़तल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ता

प्रथम बार १०००] सम्वत् १९७४ [मूल्य १)

ग्रन्थकर्त्ता रचित और अनुवादित अन्यान्य

पुस्तकें

रमा	(सामाजिक उपन्यास)	।)
मदालसा	(पौराणिक ,,)	।/)
शैव्या	(,, ,,)	।)
शोणित तर्पण	(जासूसी ,,)	१।)
शोणित चक्र	(,, ,,)	१।/)
भयानक बदला	(,, ,,)	॥।)
ठग वृत्तान्त	(,, ,,)	॥।)
अर्थमें अनर्थ	(इटलीका रहस्य) ३ भाग	१॥/)
वाराङ्गना रहस्य	(सामाजिक उपन्यास) ५ भाग	२॥)
भीमसिंह	(ऐतिहासिक उपन्यास)	१)
शशिबाला	(सामाजिक उपन्यास)	॥)
पीतलकी मूर्त्ति	(आस्ट्रियाकी इतिहासमय घटना) ५ भाग	५)
हेमलता	(ऐय्यारीका उपन्यास) २ भाग	१)
रामायण रहस्य	(रामायणकी कथा)	॥।)
नैपोलियन बोनापार्ट	(जीवनी)	१॥।)
संसार-सुख	(उपदेशप्रद ग्रन्थ)	१।)
अँगरेजी शिक्षा		॥)

मिलनेका पता—

मैनेजर, "दुर्गाप्रेस"

नं० ७४ बड़तल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ता।

अपना वक्तव्य ।

Whenever it should please God to bring the great World War to an end, the greatest name upon the immortal Roll would be that of Lord Kitchner.

Earnest Protheroe.

आज जिस जगद्विख्यात वीरश्रेष्ठकी जीवनी लेकर मैं फिर आप लोगोंके सम्मुख उपस्थित होता हूँ, उसका नाम इस भयानक विश्वव्यापी समरके उपरान्त ही प्रचारित न होगा ; बल्कि इसी समयसे उसके अद्भुत गुणोंके कारण संसारमें विख्यात हो रहा है और प्राणी प्राणी जानता है, कि यह लार्ड किचनरके ही अदम्य उत्साह, दृढ़ अध्यवसाय तथा कठोर परिश्रमका फल है, कि कई वर्षोंसे युद्धके लिये प्रस्तुत शत्रु सैन्यके आगे ब्रुटिश सैन्य अभीतक वीरतासे युद्ध कर रही है, नहीं तो अब तक क्या हुआ होता कौन कह सकता है। युद्ध आरम्भ होनेके पहले तथा बाद और उस समय जब कि "युद्धसचिव" का महान उच्च और दायित्वपूर्ण पद उसे मिला, लार्ड किचनरने क्या क्या कार्य किये, कैसी कैसी विचित्र घटनाओंसे उसका पाला पड़ा और किस किस विपत्तिमें कितनी धीरता, गम्भीरता, वीरता और दृढ़ता इस महापुरुषने दिखाई है यह सब बातें इस ग्रन्थमें ही नहीं बल्कि इतिहासके पन्नोंमें स्वर्णाक्षरसे लिखी जायँगी।

इस कर्ममय संसारमें जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। पाठकोंको ध्यान देना चाहिये, कि लार्ड किचनरमें क्या गुण थे, उसके चरित्रमें वह कौनसा विशेषत्व था तथा किस तरहकी नीति अवलम्बन कर उसने इतना उच्चपद, अटूट यश और उज्ज्वल कीर्ति उपार्जन की थी। इन बातोंपर ध्यान देनेसे ही

जीवनी पढ़नेका यथार्थ उद्देश्य सिद्ध होता है। यदि आप लोगोंने इस महापुरुषकी जीवनी पढ़ यथार्थमें उसके गुणोंका अनुकरण किया तो मैं भी अपना परिश्रम सफल समझूँगा और कोई दूसरा ग्रन्थ ले आप लोगोंकी सेवामें फिर उपस्थित होनेका साहस करूँगा।

अन्तमें मैं बाबू निहालचन्द वर्म्माको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनके उत्साह तथा साहित्यप्रेमके कारण यह जीवनी प्रकाशित हो सकी।

विनीत—
हिन्दीका तुच्छ सेवक
चन्द्रशेखर पाठक।

लॉर्ड किचनर।

प्रथम खण्ड।

बाल्यजीवन।

हर्बर्ट होरेशियो किचनरका जन्म सन् १८५० ईस्वीकी १४वीं जूनको आयर्लैण्ड देशके, केरीप्रान्तके गन्सबरो नामक ग्राममें हुआ था। यद्यपि इसका जन्म आयर्लैण्डमें हुआ था; परन्तु इसका पिता इङ्गलैण्डका ही अधिवासी था और घटना-चक्रके प्रभावसे वह गन्सबरोमें जा बसा था। प्रकृत बात यह थी, कि लार्ड किचनरका पिता कर्नल हेनरी होरेशियो किचनर १८४० सनके उस समयमें आयर्लैण्डकी राजधानी डब्लिनमें जा बसा, जब कि आलूकी फसल मारी जानेके कारण आयर्लैण्डमें घोर अकाल पड़ गया था और वहांके अधिवासी भूखों मरने लगे थे। इसी कारणसे कितने ही जमींदारोंने लिमरिक और केरी प्रान्तका बहुत बड़ा भूभाग बहुत ही कम मूल्यमें बेच डाला और लार्ड किचनरके पिता कर्नल हेनरी होरेशियो किचनरने एक बहुत बड़ा भूभाग कुल तीन हजार पौण्ड अर्थात् ४५००० रुपयेमें खरीद लिया।

इसके पहलेही किचनरका बड़ा भाई हेनरी इलियट शिवेलीर भारतवर्षमें ही पैदा हो चुका था। इसको साथ ले लार्ड किचनरका पिता कर्नल किचनर अपनी ज़मीदारी गन्सबरोमें चला गया और एक मनोहर स्थानमें जहाँका दृश्य बहुत ही सुन्दर था मकान बनवाकर रहने लगा और वहीं सन् १८५० ईस्वीमें हमारे उस वीरश्रेष्टने जन्म लिया; जिसने आधुनिक इतिहासमें उज्वल कीर्ति उपार्जन की। लॉर्ड किचनरके जन्मके बाद यह परिवार उससे भी उत्तम और सुदृश्यपूर्ण स्थान क्रोटामें चला गया और वहीं कर्नल किचनरको दो पुत्र तथा एक कन्या और भी उत्पन्न हुए।

कर्नल किचनरके चार पुत्रोंमेंसे तीन सेना विभागके उपयुक्त हुए। उनमें सबसे बड़ा हेनरी इलियट शिवेलीर ४३ वीं रेजिमेण्ट में नौकर हो गया और बहुत दिनों तक भारतवर्षके बर्मा तथा मनीपुर फील्ड फोर्समें काम करता रहा और अन्तमें वेष्ट इण्डीज़ टापूके जमाइका प्रान्तका शासक हो गया। दूसरा पुत्र ही हमारे इस ग्रन्थका नायक लार्ड किचनर था। तीसरे पुत्रका नाम अर्थर था; जो माइनका इञ्जिनियर बना और सन् १८०७ ईस्वीमें परलोक सिधार गया। चौथा पुत्र फ्रेडरिक वाल्टर किचनर था। जो अपने बड़े भाईके साथ एजिप्ट, अफ़गानिस्तान और दक्षिण अफ्रिकाके युद्धमें बराबर वीरता दिखाता रहा और अन्तमें बरमुडाका शासन कर्त्ता बना। वह सन् १८१२ में परलोक सिधारा। लार्ड किचनरकी बहिनका व्याह एच० आर० पार्कर नामक एक सुन्दर युवकसे हुआ जो विवाहके २१वें वर्ष परलोक सिधार गया। मिसेज पार्कर (लार्ड किचनरकी बहिन) सामाजिक कामोंकी बड़ी ही ज्ञाता स्त्री है और अभी तक दृढ़तासे अपना कार्य निर्वाह करती है।

लार्ड किचनरकी प्रारम्भिक जीवनीका ठीक ठीक पता यद्यपि नहीं चलता तथापि खोज करनेपर इतना प्रकट हुआ है, कि बालकपनमें ही वह एकान्त प्रेमी तथा गम्भीर था। शिक्षाकी ओर उसका अधिक ध्यान था और गणित शास्त्रकी ओर उसकी प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती थी। वह कभी खेलकूदमें सम्मिलित होता न दिखाई देता था और सदा अपने पाठकी ओर ही लगा रहता था। सम्भव है, कि इसका प्रधान कारण उसके पिताका कठोर व्यवहार ही हो ; क्योंकि उसके पिताको सन्देह हो गया था, कि हर्बर्ट किचनर केवल वृथा विचारोंमें ही अपने दिवस व्यतीत करता है। इसी लिये उसने हर्बर्ट किचनरसे कह भी दिया था, कि यदि इसबार वह परीक्षामें उत्तीर्ण न हुआ तो उसे बड़ी पाठशालासे छुड़ाकर डेम स्कूल (एक स्त्रीकी नियुक्त की हुई पाठशाला) में भेज देगा।

दुर्भाग्यवश वही हुआ। हर्बर्ट किचनर परीक्षामें उत्तीर्ण न हो सका और उसके पिताने उसे उस पाठशालासे छुड़ाकर डेम स्कूलमें भेज दिया, जहाँ उसे उन्हीं बालकोंकी सङ्गतिमें रहना पड़ा; जिन्हें बालक सुलभस्वभावके कारण वह घृणा करता था। इस समय उसके पिताने फिर समझाया, कि यदि इस बार भी वह उत्तीर्ण न हुआ तो उसका पढ़ना बन्द कर किसी व्यापारीकी दूकानमें कार्य सीखने के लिये भेज दिया जायगा। आह! यदि वास्तवमें वह किसी व्यापार का कार्य सीखता तो इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वह एक बड़ाही उच्च श्रेणीका व्यापारी होता।

परन्तु किचनरके भाग्यमें व्यापारी होना बदा न था, बल्कि इस संसारमें अपनी अखण्ड कीर्त्ति स्थापित करनी थी, इसलिये इसबार वह परीक्षामें उत्तीर्ण हो गया और इसी समयसे उसकी प्रतिभा प्रकट होने लगी।

किचनर सपरिवार इस समय जिस स्थानमें रहता था, वहाँसे ऐटलाण्टिक महासागर केवल सात मीलकी दूरी पर था। यद्यपि किचनरके परिवारमें हर्बर्ट किचनर सब पुत्रोंमें गंभीर था और कभी खेलकूदमें सम्मिलित न होता था, तथापि वह जब कभी समय मिलता तब अपने भाइयोंके साथ समुद्रके किनारे चला जाता और तैरनेका अभ्यास करता था। इस तरह थोड़े ही दिनोंमें वह एक उत्तम तैराक हो गया और इधर कई उत्तमोत्तम शिक्षकोंसे उसे भिन्न भिन्न भाषाओंकी भी शिक्षा मिलती गई। परिणाम यह हुआ, कि थोड़े ही वर्षोंमें हर्बर्ट किचनर एक तीव्रबुद्धि, गंभीर चिन्ताशील तथा प्रतिभाशाली नवयुवक प्रतीत होने लगा।

किचनरका पिता जिस तरह एक योद्धा था, उसी प्रकार व्यापार की दृष्टिमें भी उसकी उत्तम गति थी। उसने थोड़े ही वर्षोंमें परिश्रमकर अपनी जमींदारीकी पैदावार बढ़ा ली और इसके बाद कितनी ही जमीन ऊँची दरमें बेच डाली। इसके अतिरिक्त उसने ईंटों, टालियाँ, मिट्टीके वर्त्तन आदिका कारखाना खोलकर अच्छा धन और नाम दोनों ही उपार्जन किया।

इस समय बालक हर्बर्ट किचनरकी अवस्था चौदह वर्षकी हो चुकी थी। अब वह इस योग्य हो गया था, कि विदेशमें उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिये जा सके। इसी लिये उसके पिताने लेक जेनिवा स्वीट्जलैंण्डके किनारेकी एक पाठशालामें उसे पढ़नेके लिये भेज दिया।

१८६४ में किचनरकी माता एकाएक परलोक सिधार गई। इस आकस्मिक विपत्तिका समाचार जब हर्बर्ट किचनरके कानोंमें पड़ा, वह व्याकुल हो उठा, साथ ही इस विपत्तिने उसे एक ऐसी शिक्षा दी जिससे वह भयानकसे भयानक समयके लिये तय्यार हो गया। उसका पिता अपनी नवासी वर्षकी अवस्थामें उस

समय परलोक सिधारा जब लॉर्ड किचनर मिश्रकी फौजका जेनरल हो चुका और अभी कितने ही प्रकारके सौभाग्यसूचक पद उसकी अपेक्षा कर रहे थे।

अस्तु, अपनी शिक्षा समाप्तकर जर्म्मनी इत्यादि देशोंमें घूमता हुआ किचनर फिर इङ्गलैण्ड लौट आया और रेवरेण्ड जार्ज फ्रॉस्ट नामक एक बड़े प्रतिभाशाली मनुष्यके साथ रहने लगा। जिसकी सहायतासे वह उस शाही सैनिक पाठशाला (Royl Military academy) में प्रवेश कर सका जो "दी शॉप" कहलाती थी, जो विख्यात योद्धाओंकी शिक्षाके लिये प्रसिद्ध थी और जहाँकी परीक्षामें उतीर्ण होनेपर "ब्रिटिश सेना" में लोग प्रवेश कर सकते थे।

यह पाठशाला युद्ध शिक्षा तथा सैनिक कार्य्यकी शिक्षाके लिये बहुत ही विख्यात है और उस महकमेके बड़े बड़े पदाधिकारी इसकी उन्नति और सुप्रबन्ध पर सदा ध्यान रखते थे। इस पाठशालाका प्रधान उद्देश्य सैनिकोंको गणितकी वैसी ही शिक्षा देना था जिससे गोले गोलियां चलानेकी शक्ति हो। गणित शास्त्रकी इसमें बहुत ही विशेषता रखी गई थी। यह कहना वृथा है, कि किचनरने गणितमें बड़ी ही योग्यता दिखाई और वह इस पाठशालामें ले लिया गया।

सन १८६६ में कर्नल किचनरने अपनी आयर्लैण्डकी समस्त सम्पत्ति बेच डाली और दूसरा विवाहकर फ्रांसके डिना नामक स्थानमें जा बसा तथा इस तरह किचनरको भी फ्रांसमें रहकर वहाँकी नीति तथा पथोंका उत्तम ज्ञान हो गया।

सन् १८७० में जिस समय फ्रांस तथा प्रशिया युद्धमें छिड़ गया था, उस समय भी हर्बर्ट किचनर फ्रांसमें ही था। उसने

अपनी परीक्षाका अच्छा अवसर समझकर न तो अपने पिताकी ही आज्ञा ली, और न उलविचकी उस पाठशालासे ही कोई आज्ञा माँगी, जिसका वह विद्यार्थी था, बल्कि सीधा युद्ध क्षेत्रमें चला गया और जेनरल चैञ्जीकी अधीनस्थ मोबाइल गार्ड नामक सेनाके छठें बटेलियनमें भरती हो गया।

यद्यपि विख्यात जेनरल चैञ्जी बड़ी बहादुरी और वीरतासे लड़ा; परन्तु प्रशियनोंकी सेनाके आगे उसकी एक न चली और उसे पीछे हट आना पड़ा और इसके बाद तीन दिनोंके भयानक युद्धने उसे और भी अधिक पीछे हटा दिया।

रक्षित सेनामें रहनेके कारण यद्यपि किचनरको सम्मुख युद्धमें प्रवृत्त होनेका अवसर न मिला परन्तु बैलूनके युद्धमें उसने कुछ प्रशंसा पाई। इसके बाद ही उसके भाग्यने पलटा खाया और भयानक न्यूमोनिया रोगसे पीड़ित हो उसे अपने पिताके घर लौट आना पड़ा।

यद्यपि किचनर थोड़े ही समय तक युद्ध क्षेत्रमें था; परन्तु उतने ही समयमें उसे घटनाओंने कितनी ही बहुमूल्य शिक्षा दे दी; क्यों कि रसद न जुटनेके कारण चैञ्जीके कितने ही सिपाही भूखों मर रहे थे। कितने ही सिपाहियोंकी कतार शीतसे जड़ित हो रही थी। इन घटनाओंने किचनरके हृदयपर विचित्र प्रभाव जमाया और उसे विश्वास हो गया, कि उत्साह और वीरता उस समय कुछ काम नहीं करते जहाँ सुप्रबन्ध और सुव्यवस्थाका अभाव है। सेना अपने उदरके लिये प्राण देती है और सैनिकोंके लिये इससे बढ़कर विपत्तिकी बात दूसरी नहीं हो सकती है; जब उन्हें क्षुधा यन्त्रणाका दुःख भोगना पड़ता है। इसमें सन्देह नहीं, कि फ्रांसके पास रसदकी कमी नहीं थी और चैञ्जीकी सेनाको चालीस मील तक की रेल रसद से भरी ही दिखाई देती' यदि कोई सुव्यवस्थित रसद पहुंचानेवाला प्रबन्ध होता।

फ्रांसकी इस हारने किचनरको सिखा दिया कि सुदृढ़ व्यवस्थाकी कितनी अधिक आवश्यकता है और यह शिक्षा ज्यों ज्यों वह बड़ा होता गया त्यों त्यों उसे अधिकाधिक उपयोगी प्रमाणित होती गई; क्यों कि जितने बड़े बड़े अँगरेजी जेनरल हुए उनमें किचनर आलस्यका सबसे अधिक विरोधी था। न्यायके समय यद्यपि वह दयार्द्र व्यवहार करता था परन्तु काममें शिथिलता देख वह आग बबूला हो जाता था। अस्तु:

रोग मुक्त होनेपर जब रायल अकेडमीमें वह फिर शिक्षा ग्रहण करनेके लिये लौटा; उस समय उसने देखा, कि ब्रिटिश सेनाके अधिकारी अब उसे पाठशालामें नहीं घुसने दिया चाहते; क्योंकि उसने न केवल पाठशालाकी आज्ञा न लेकर उसका अपमान किया था; बल्कि प्रशियाके साथ इङ्गलैण्डका स्वार्थ विजड़ित रहनेके कारण यह समझा गया, कि उसने ब्रिटिश स्वार्थको हानि पहुँचाई है। जो हो बड़े परिश्रम और उद्योग तथा कितने ही मनुष्योंके सिफारिश करनेपर वह फिर उस पाठशालामें लिया गया।

उसकी उन्नतिका पथ और भी दृढ़ हो गया। उस समय लार्ड किचनरका गणित शिक्षाका अभ्यास इतना बढ़ा चढ़ा था, कि वे बड़े से बड़े प्रश्न जो अन्य उत्तमोत्तम विद्यार्थी हल नहीं कर सकते थे; वह सहजमें ही कर लेता था और लम्बी २ जोड़ोंको शीघ्रतासे देते देख, उस पाठशालाके विद्यार्थी कहा करते थे, कि सेना विभागमें किचनरका प्रवेश मानवी युक्तिका खजाना लूट रहा है।

इस पाठशालाकी परीक्षा दो वर्षमें समाप्त होती है और इसी परीक्षामें मालुम हो जाता है कि विद्यार्थी सुरङ्ग खोदनेवालोंकी लाल जाकिट पहनेगा या तोप चलाने वालोंकी नीली वर्दी। कितने ही उत्तम विद्यार्थी युद्धके इञ्जीनियरिङ्ग विभागमें जाना ही पसन्द करते हैं; क्योंकि इसमें उन्नति करनेके बहुतसे अवसर प्राप्त होते,

हैं; परन्तु गोलन्दाज़ सैन्यके सिपाहियोंको सदा अपने भाग्यपर निर्भर रहना पड़ता है; क्योंकि उनका सम्बन्ध सम्मुख युद्धसे रहता है।

इञ्जीनियरिङ्ग सेनाका एक ऐसा विभाग है, जिसकी बहुतसी शाखायें रहती हैं; क्योंकि आधुनिक विज्ञानकी उन्नतिके कारण अब युद्धके बहुतसे कार्यों ने विचित्र रूपधारण किया है। इसमें भूमिका मापना, दुर्ग बनाना, खाई खोदना, सुरङ्ग बनाना जलका प्रबंध करना, तारके काम, टेलीफ़ोन, फ़ोटोग्राफ़ी आदि कई विभाग हो गये हैं और गैसके आक्रमणने एक और भी नया कारखाना जारी कर दिया है। जिससे ऐसे युद्धमें सब जगह इञ्जीनियर ही काम करते दिखाई देते हैं।

शाही इञ्जीनियरोंका पहिरावा लाल जाकिट रहता है। और नीली गोठके साथ ही साथ उसपर पीली डोरी लगी रहती है। पैजामे नीले रहते हैं और उसपर चौड़ी लाल पट्टी रहती है। प्रत्येक सिपाहीके पास एक छोटी राइफल बन्दूक और पचास गोलियाँ रहती हैं।

विलायती सैनिक इञ्जीनियरोंमें नेपियर 'मगडला' और 'चाइनीज' गोर्डन ये दो नाम बहुत ही विख्यात हैं और यह अन्तिम मनुष्य किचनरके प्रवेशके बीस वर्ष पहले था और इसी ने इस पाठशालाको तथा शिक्षा देनेकी नीव ऐसी सुदृढ़ की थी कि, इससे निकले हुए सैनिकोंने बड़ा नाम कमाया तथा इसी पाठशाला से लार्ड किचनर भी परीक्षा देकर १८७१ के जनवरी महीनेमें रायल इञ्जीनियर सेनाका लेफ्टिनेण्ट बना। इसके बाद तीन वर्ष तक वह चैथम और अलडरशॉटमें तारवर्खी तथा सेनाके अन्य कार्य सीखता रहा।

दूसरा अध्याय

पलेस्टाइनका पर्य्यवेक्षण।

विलायतमें स्मिथ नामकी एक ऐसी पुस्तक प्रकाशिका कम्पनी है, जो उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित किया करती है। इसीने बाइबिल डिक्शनरी नामकी एक पुस्तक प्रकाशित करनी आरम्भकी थी ; इसमें सभी धार्म्मिक स्थानोंके नाम तथा उनकी समस्त ख्याति है। जिस समय यह बाइबिल कोष प्रकाशित होने लगा; उस समय मालुम हुआ, कि पलेस्टाइनके गाँव, जँगल, गुहायें, पर्वत इत्यादिका कोई भी समाचार अभीतक नहीं मिला है। पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि पलेस्टाइन एक तीर्थस्थान है और उसकी सब बातें इस कोषमें रहनी अत्यन्त ही आवश्यक था। पलेस्टाइनका नकशा, उसकी सब इमारतोंका हाल, शिला लेख, तथा प्राचीन भवनोंका सब समाचार देना अत्यन्त ही आवश्यक था। इसी लिये एक ऐसी समिति निर्मित हुई, जो वहाँ आकर वहाँका पूरा पूरा हाल लिख भेजे और वहाँके सब गुप्त रहस्य प्रकट हों।

यह कार्य सन् १८७२ ईस्वीमें कप्तान स्टुअर्ट आर० ई०ने आरम्भ किया था और लेफ्टनेण्ट क्लोड आर० कोण्डर आर० ई० तथा सी० एफ० टिर्विटड्रेक उनके सहायक नियुक्त हुए थे। यह अन्तिम मनुष्य सन् १८७४ में जेरुज़ेलममें मर गया और इसीका स्थान लेफ्टेनेण्ट

हर्बर्ट होरेशियो किचनरको दिया गया, जिसने अपने दृढ़ अध्यवसाय और ज्ञानसे यह प्रमाणित कर दिया, कि वह कठिनसे कठिन कार्यमें भी कभी विचलित नहीं हो सकता।

अन्य सैनिकोंकी भाँति यह विख्यात सिपाही किचनर कट्टर धार्मिक पुरुष था और यही कारण था, कि इसने बड़ी प्रसन्नतासे इस कार्यका भार उठा लिया और अन्तमें इसे पूरा किया। यह कार्य भयसे भरा था। इस स्थलका विवरण कितनी ही विभिन्न घटनाओंसे परिपूर्ण था और इसकी आबहवा अत्यन्त उष्ण तथा कभी अत्यन्त ही शीतमय हो जाती थी। इसके जङ्गल शेर तथा उन जङ्गली मनुष्योंसे परिपूर्ण थे जो सभ्य जातिको देखते ही क्रोधित हो उठते थे और इसके अधिवासियोंमें अधिक संख्या उन पुरुषोंकी थी जो पश्चिमीय सभ्य पुरुषोंको देखते ही उत्तेजित हो जाते थे और इस बातका अवसर ढूँढ़ा करते थे, कि कब मौका मिले और वे अपनी घृणा चरितार्थ करनेमें समर्थ हों।

किचनर अपने इस नवीन कार्यके सब भेद अच्छी तरह जानता था; परन्तु अरब जातिके साथ रहने और उनकी भाषा सीखनेकी उत्सुकताके कारण उसने बड़ी ही प्रसन्नतासे यह कार्य स्वीकार कर लिया।

सन् १८७४ ईस्वीके दिसम्बर मासमें लेफ्टेनेण्ट किचनर अपने उस दलमें सम्मिलित होनेके लिये जेरुज़ेलम जा पहुँचा; जो नाना प्रकारके रोगोंसे पीड़ित हो रहा था। सबसे पहले उसने नौकरसे मिल कर जेरुज़ेलमकी नाप आरम्भ कर दी और प्रथम प्रथम डेविड नगरमें यह काम आरम्भ हुआ। परन्तु भयानक तूफानने कुछ ही दिन बाद इनके खेमे उखाड़ पुखाड़कर फेंक दिये और एक मास बाद किचनर भी भयानक ज्वरसे पीड़ित हो शय्यापर जापड़ा।

अपनी पलेस्टाइन नामक पुस्तकमें कोण्डरने जुड़ाके रेगिस्तानोंका पूरा पूरा हाल बताया है, और लिखा है, कि उसे भयानक तूफानमें उन्नीस मीलकी राह समाप्त करनी पड़ी थी और इन घटनाओंके कारण उसे ऐसी ऐसी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं; जिन्होंने उसका भविष्य जीवन सुधार दिया। उसके सदस्योंमेंसे एक शेख हमजा था जो कई बार तूफानमें अपने घोड़ेसे गिर पड़ा और अन्तमें उसे घोड़ेसे बाँध देना पड़ा। सीरियन जातिके घोड़ोंने ऐसे समय उनको बड़ी सहायता की और ग्यारह घण्टे तक तूफानमें ही यात्रा करनी पड़ी। आठ बजे रातके बाद यह दल हेब्रन नगरमें जा पहुँचा और एक जर्म्मन व्यापारीके यहाँ उन्हें आश्रय मिला।

इस बारकी सफरमें किचनरने बहुतसे चित्र लिये थे, उसने सभी भग्नगृह और बड़ी बड़ी इमारतोंकी तस्वीरें लेली थीं और कितने ही ऐसे कार्य्य किये थे जिससे उसके साथियोंके हृदयमें यह विश्वास हो गया, कि उससे बढ़कर दूसरा साथी मिलना अब असम्भव है। इसका कारण यही था, कि किचनरमें आलस्यका नाम निशान ही नहीं था और भयानकसे भयानक समयमें भी वह कार्य्य करनेके लिये तयार रहता था।

दिनभर कठोर परिश्रम करने बाद एक दिन यह दल अस्कलन नगरमें जा पहुँचा; जो समुद्रके किनारे बसा हुआ है और मेडिटरेनियनके नील जलसे इसका रूखा किनारा सदा टकराया करता है। कर्नल कोण्डर स्नान करनेके लिये समुद्रमें उतर गया। परन्तु तुरत ही तरंगका एक ऐसा झोका आया, जिसने कोण्डरको उठाकर दूर फेंक दिया और उसको जान बचनी कठिन हो गई। किचनरका अभीतक उसकी ओर ध्यान न था; परन्तु एकाएक उसकी दृष्टि कोण्डरपर जा पड़ी और तुरत ही उसे मालुम हो गया, कि कोण्डर भयानक विपत्तिमें जा पड़ा है। समुद्रने इस समय

भीषण आकार धारण किया था और इस अवस्थामें कोण्डरको समुद्र-मेंसे निकालना बड़ा ही भयानक कार्य था; परन्तु बहादुर किचनरने इस समय अपने प्राणोंकी ममता त्याग दी, वह बड़ी वीरतासे समुद्रमें कूद पड़ा और बहुत देरतक परिश्रम करने बाद उसने अपने विख्यात बाहुबलकी सहायतासे उसे तरंगोंसे बाहर निकाला।

सन् १८७५ ईस्वीकी १० वीं जुलाईको इससे भी एक भयानक घटना घटी। गैलिली प्रान्तमें सफेद नामक एक छोटा ग्राम है, जो मुसल्मानी अधिवासियोंके भिन्न भिन्न कार्योंके लिये विख्यात है। ज्योंही ये वहाँ पहुँचे एक मुसलमान अमीर अपने सहचरोंके साथ इन्हें लूटनेके लिये आ पहुँचा। एक नौकरने यद्यपि अमीरको इस कार्यके लिये रोका और बहुत तरहसे समझाया; परन्तु वह तुरत ही मार डाला गया और कोण्डर जब उसे बचानेके लिये अग्रसर हुआ तब अमीरने उसका गला जोरसे पकड़ लिया; परन्तु इसी समय बहादुर किचनरने वहाँ आकर उस अमीरको ऐसा धक्का दिया कि, वह दूर जा गिरा और उसके कई दांत टूट गये। यह विद्वेषाग्नि बढ़ती ही गई और अमीर कितने ही मुसलमा-नोंको एकत्रकर इनसे बदला लेनेके लिये वहां आ पहुंचा। उनमेंसे कितने ही पुरानी चालकी बन्दूकें लिये हुए थे, जिन्हें उन लोगोंने आते ही दागना आरम्भ किया। यद्यपि इससे विशेष हानि न हुई, परन्तु किचनरकी दाहिनी जाँघमें एक गोली लगी।

इतनेपर भी किचनरने यह झगड़ा नम्रतासे शान्त कर देनेका बहुत कुछ उद्योग किया; परन्तु वे मुसल्मान "अल्ला" "अल्ला" चिल्लाकर "इन क्रिश्चियन कुत्तोंको मारो" कहकर सबको कसम देने लगे। यह दल बढ़ता ही गया और कुछ शेख वहाँ ऐसे भी आ पहुँचे; जो यह झगड़ा शान्त करनेके बदले मुसल्मानोंको ओर

भी उत्तेजित करते गये। परिणाम यह हुआ, कि उनमेंसे एक कोण्डर पर टूट पड़ा और उसे ज़मीनमें गिरा मस्तकपर अपने डण्डेसे मारने लगा। यह अत्याचार किचनर सहन न कर सका, वह उस दलमें कूद पड़ा और बड़ी धीरता तथा गम्भीरतासे उसने यह झगड़ा निपटाया।

यद्यपि अङ्गरेज़ोंके पास अच्छी अच्छी बन्दूकें थीं; परन्तु इस अवसर पर गोली चलाना कदापि उचित न था; क्योंकि यह दल जिस कार्य्यके लिये यहाँ आया था, वह कार्य युद्धसे अथवा बल-प्रयोगद्वारा कदापि पूरा नहीं हो सकता था। अतः कोण्डरने यह सब समाचार तुर्की गवर्नरको लिख भेजा। इस समय भी कितने ही मुसलमान इस ताकमें इधर उधर छिपे हुए थे, कि अवसर मिलते ही इन लोगोंको लूटलें। कोण्डर भली भाँति समझता था, कि उनकी दशा इस समय ऐसी शोचनीय है, कि सफेडसे पुलिसकी सहायता मिलनेके अतिरिक्त उनसे बचनेका और कोई उपाय नहीं है।

इस झमेलेमें कोण्डरके माथे और गर्दनमें भयानक चोट आई थी, किचनरके हाथमें भी भयानक चोट पहुँची थी, तथा सब मिलाकर सात मनुष्य इस दलके घायल हुए थे।

अब यह दल हलीफ़ाकी ओर चला और तीन दिन बाद माउण्ट कार्मलके खृष्टीय मठमें जा पहुँचा। अभी तक उनकी कठिनाइयोंका अन्त न हुआ था; क्योंकि उस दलके कितने ही मनुष्य भयानक ज्वरसे पीड़ित हो रहे थे और इनमें किचनरकी अवस्था सबसे अधिक खराब थी। किचनर ज्वरके वेगमें प्रलाप बक रहा था; इसी प्रलापमें ही वह शराब माँग बैठा और उसके रोगसे एक अनभिज्ञ मनुष्यने उसे शराब देदी। फल यह हुआ, कि रोग बहुत ही बढ़ गया और अब वह दल अपने सबसे बड़े उद्योगी और परिश्रमी साथीके जीवनसे निराश हो गया; परन्तु ईश्वरकी दयासे ज्वर धीरे

धीरे कम होता गया और कुछ दिनों बाद किचनर आरोग्य हुआ।

अब किचनर और कोण्डरके लिये यह अत्यावश्यक था, कि एकर जायें; क्योंकि सफेडके अत्याचारियोंका वहां मुकद्दमा हो रहा था। किचनर अभीतक बहुत ही दुर्बल हो रहा था; परन्तु वह साहस कर घोड़े पर चढ़ा और जाफ़ाको ओर रवाना हुआ। यह "जाफ़ा" नगर राहमें ही पड़ता था; परन्तु दुर्बलताके कारण वह अधिक समयतक घोड़े पर बैठ न सका और फिसलकर नीचे बालूमें गिरतेही बेहोश हो गया। अकेले कोण्डरको यह सामर्थ्य न थी, कि उसकी रक्षा करे और उसे उठाकर किसी सुरक्षित स्थानमें ले जाये, अतः वह किचनरको उसी अवस्थामें छोड़, सहायताके लिये कुछ मनुष्य बुलाने चला गया और कुछ ही देर बाद जब वह सहायकोंके साथ लौटा, उस समय उसके आश्चर्य और दुःखका वारापार न रहा; क्योंकि किचनर उस स्थान पर न था। वह फिर घबड़ाया हुआ जाफ़ा लौट गया। उसे और भी आश्चर्य उस समय हुआ, जब उसने देखा कि किचनर बिछावन पर सोया हुआ है। कारण यह था, कि कोण्डरके जानेके कुछही क्षण बाद किचनर होशमें आ गया; और अधिक चोट न लगनेके कारण, खेमेमें चला गया।

ग्यारहवीं सेप्टेम्बरको एकरका मुकद्दमा सरायमें आरम्भ हुआ और चौदह दिनोंतक यह मुकद्दमा चलता रहा। १६ मनुष्य अपराधी प्रमाणित हुए। दोको दो दो वर्षका भयानक कारादण्ड मिला, बाकी थोड़े दिनोंके लिये दण्ड देकर छोड़ दिये गये। सफेड नगरपर ११८ पौण्ड जुर्माना किया गया। ऐसे भयानक कार्यके लिये इतना थोड़ा दण्ड होता देख, इस अङ्गरेज़ दलको सन्तोष न हुआ और इन लोगोंने फिर इसके लिये प्रार्थना की। फल यह हुआ कि जुर्मानेकी रकम ३४० पौण्ड करदी गई और उनमेंसे २७० पौण्ड पैलेस्टाइनके एक्सप्लोरेशन फण्डमें दिये गये।

इस समय वहां हैज़ेका ज़ोर फैला हुआ था, इसी कारणसे किचनरके दलके बहुतसे मनुष्य पहले ही इङ्गलैण्ड लौट आये थे और ये दोनों अकेले ही रह गये थे। अब लाचार हो इन दोनोंको भी लौट आना पड़ा। इसके बाद जब कमिटीने अपनी त्रैमासिक कार्यसूची प्रकाशित की, तब उसमें स्पष्ट लिखा, कि वे उपादान जो किचनर तथा कोण्डर अपने साथ लाये हैं, बहुत ही आवश्यक और बहुमूल्य हैं और ऐसे उपादानोंके आगमनकी कभी प्रत्याशा न थी। वे जुड़ा तथा फिलिस्टिआके १६०० मीलका विस्तृत वर्णन तथा नकशा ले आये हैं। लोवर गैलिलीके १८० मीलका नकशा भी इतने ही दिनोमें आगया है और अब पश्चिमीय पलेस्टाइनका नकशा पूरा करनेके लिये कुल १४०० मीलोंके पर्य्यवेक्षणकी और भी आवश्यकता है।

इसके बाद सन् १८७६ का समस्त वर्ष नकशा बनाने तथा इतने दिनोंका कार्य पूरा करनेमें व्यतीत हुआ। किचनर बाइबल कोषमें देने योग्य दृश्योंके पचास चित्र अपने साथ लाया था और इन्हींके सहारे सन् १८७६ के ईस्टरमें "लेफ्टेण्ट किचनरकी गिनी बुक आफ बाइबिल फ़ोटोग्राफ् स" प्रकाशित हुई। यह पहला अवसर था, जब ऐसी पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसने पलेस्टाइनके सब दृश्य ब्रिटिश जातिके सम्मुख उपस्थित कर दिये।

सन् १८७७ की ६ठी फरवरीको किचनरकी अध्यक्षतामें बाकी कार्य पूरा करनेके लिये यह दल फिर बेरूट पर उतरा। सबसे पहले किचनर घोड़े खरीदने डमस्कस गया और उसने अपना काम करनेका पूरा पूरा प्रबन्ध कर लिया। परन्तु इसके बाद ही जो समाचार उसके कानोंमें पड़ा वह बड़ा ही भयानक था। उसे खबर मिली, कि डमस्कसकी राहमें लोगोंके गले काट डाले जाते हैं और अङ्गरेज इस दण्डके योग्य माने गये हैं, तथा दूसरी बात यह सुन

पड़ी, कि अरब जातियोंमें बड़ा झगड़ा हो गया है, जिसमें लगभग एक सौ अरब मारे गये हैं।

किचनर समझता था, कि इस बार सफेडमें उसका भयानक अपमान होगा, परन्तु इस बातसे वह विचलित न हुआ और अपने उद्देश्यकी पूर्त्ति के लिये उत्साहसे अग्रसर हुआ। राहमें ही उसे सफेडके गवर्नर तथा अन्य पदाधिकारियोंसे भेंट हुई जिन्होंने किचनरका बड़ा सन्मान किया और इससे प्रमाणित हो गया, कि वे भी अब इस कार्यकी उत्तमता समझने लगे हैं। और उस समय उसे और भी प्रसन्नता हुई जब अली आगाखां नामक एक विख्यात दुष्टसे उसकी बातें हुईं। इसीके साथियोंको सफेडमें लूटनेके कारण कारादण्ड तथा जुर्मानेकी सजा मिली थी। किचनरने उसकी प्रार्थना सुनकर उसे जुर्मानेकी रकमसे वह ६० पौण्ड छोड़ दिये, जो वह अभीतक दरिद्रताके कारण वह न दे सका था।

अपनी एक रिपोर्टमें किचनरने लिखा है;—

“मैंने मुकाम बेनात याकूब नामक वह स्थान निरीक्षण किया जो जेकबकी कन्याका विख्यात स्थान है। मुझे बिना किसी आपत्तिके वहांके अधिवासियोंने पहले बड़ी मसजिद तथा फिर ऐसी गुफा दिखाई जो बहुत ही विचित्र है और जो वास्तवमें एक धर्म्म मन्दिरके समान मालूम होती है। यहां कब्रकी दो कतारें दीवालसे घिरी हुई बनी हैं। यह किम्बदन्ती है, कि इसमें जेकब और उसके लड़के रहते थे और जब जेकब बूढ़ा तथा दोनों आखोंका अन्धा हो गया तब उसके लड़कोंने उसे जोसेफका एक पुराना कोट ला दिया; जिसके स्पर्श तथा सुगन्धसे वह आरोग्य हो गया। बाहरी मसजिदमें निकलनेपर मुझे एक छोटा दरवाजा मिला जिसपर हरा पर्दा पड़ा हुआ था और उसके सामने सुगन्धित द्रव्य जल रहे थे। पूछनेपर मालुम हुआ, कि यह जेकबकी कन्याओंका मक-

बरा है। साथ ही यह भी कहा गया, कि यहाँ अभीतक वे कन्यायें वैसी ही सुन्दर तथा जीवित अवस्थामें दिखाई देती हैं। वहांके अधिवासी मुझे भीतर जाने नहीं दिया चाहते थे और कहते थे, कि यह इतना पवित्र है, कि दृढ़ धार्म्मिक और उनपर विश्वास करनेवालेके अतिरिक्त इसमें दूसरा प्रवेश नहीं कर सकता। जब मैंने इसपर और भी अधिक जोर दिया, तब मुझे धमकाया गया, कि जैकबकी कन्यायें अप्रसन्न होते ही बदला लेनेके लिये तय्यार हो जाती हैं और उनका बदला बड़ा ही भयानक होता है; परन्तु मैं ये सब बातें जितनी ही सुनता था; मेरी उत्सुकता उतनी ही बढ़ती जाती थी। अन्तमें मैं अपने साथी शेखको हटा उसमें घुस गया। भीतर घुसते ही मुझे एक प्रकारकी कड़ी दुर्गन्ध मालुम हुई। कुछ पद आगे बढ़ने पर मैं एक मांदके दरवाजे पर जा पहुँचा जिससे दूसरी गुहामें जानेकी राह थी। जो हो, मैं दूसरी गुहामें भी घुसा, यही वह मक़बरा था, जिसके विषयमें मैं ऊपर कह आया हूँ। इसकी छत गिर पड़ी थी और अभीतक इसकी मरम्मत न हुई थी, परन्तु मुझे वहां कोई सुन्दरता न दिखाई दी; अन्तमें मैं बाहर निकल आया।"

इसी वर्षके एप्रिल मासके अन्तमें रूस तथा रूममें युद्ध छिड़ गया और तुरत ही देशके योग्य तथा युवा पुरुष देश सेवाके लिये बुला लिये गये और अब बाकी कार्य समाप्त करनेके लिये वृद्ध तथा स्त्रियाँ रह गई।

किचनर तथा उसके दलने उत्तरी विभागका पर्य्यवेक्षण ११ जुलाईको समाप्त कर दिया।

नजारथ पहुँचनेपर किचनरको अत्यन्त ऊष्णतासे पाला पड़ा और सिडनमें सूर्य्यकी गर्म्मीसे किचनर भी घबड़ा गया। अब इन लोगोंको बाध्य होकर लौट आना पड़ा। इसके बाद कोई भी

विशेष वर्णनीय घटना न घटी और लेफ्टिनेण्ट किचनर आनन्दसे अपना काम करता गया।

अब यह दल बीरशेबामें आ पहुँचा। यहाँ आकर भोजनके पदार्थ कम पड़ गये और पानी भी बदरङ्ग तथा खारा मिलने लगा। यहाँ वे पुरुष जो ऊँटोंकी रखवाली करते थे, इस दलको छोड़कर चुपचाप भाग जानेका विचार करने लगे; परन्तु किचनरको उनका यह विचार मालूम हो गया और उसने सब ऊँटोंपर अधिकार जमा लिया। इसी प्रकारकी कितनी ही घटनायें और घटीं, जिनसे स्पष्ट मालुम होता था, कि इस देशके अधिवासी इस अङ्गरेज दलसे घृणा करते हैं। जो हो, यह कार्य्य समाप्त हुआ और जब इसकी रिपोर्ट किचनरने विलायत भेजी; उस समय उसका बड़ा नाम हुआ और वह एक आदर्श पुरुष समझा जाने लगा; क्योंकि समय से पहले यह कार्य समाप्त हो जानेके अतिरिक्त इसमें खर्च भी बहुत ही कम पड़ा था।

परन्तु इङ्गलैण्ड देशको इस पर्य्यवेक्षणसे जो लाभ पहुँचा था, उससे कहीं अधिक लाभ स्वयं किचनरको हुआ था। उसे मुसलमानी चाल ढालका पूरा पूरा हाल मालूम हो गया था, अब वह मुसलमानी रीति रिवाज, उनकी इच्छा और घृणायें अच्छी तरह समझ सकता था। इसके अतिरिक्त अरबी और तुर्की भाषाका ज्ञान भी उसे हो गया था। ये गुण किसी भी ब्रटिश अफसरमें नहीं दिखाई देते थे और यही कारण था, कि ईश्वरने थोड़े ही वर्षों बाद उसके मस्तकपर एक ऐसा भार सौंपा, जो आज तक किसीको भी न मिला था।

किचनर अपने दलके साथ इङ्गलैण्ड नहीं लौटा; क्योंकि वह सम्मुख युद्ध देखनेके लिये टर्की जाया चाहता था; वह अपना मस्तिष्क कुछ ऐसे विचारोंसे अभी और भी परिपूर्ण किया चाहता था जिसकी कुछ दिन बाद ही उसे आवश्यकता पड़नेवाली थी।

तीसरा अध्याय।

किचनर बालकनमें।

इस समय बालकनमें भयानक लड़ाई छिड़ी हुई थी। रूसी तथा रूमी सेना भीषणतासे युद्ध कर रही थीं तथा इस भयानक युद्धके कारण कितने ही गाँव तथा शहर उजाड़से हो रहे थे। किचनरने इस युद्धसे भी शिक्षा ग्रहण करनेका विचार किया और यही कारण था, कि अपने साथियोंके साथ विलायत न जाकर सीधा कुस्तुन्तुनिया चला गया।

सन् १८७७ ई०की १२ वीं दिसम्बरको लेफ्टनेण्ट किचनरको रूम राज्यसे पासपोर्ट मिल गया और वह अपने एक मित्रके साथ बड़ी प्रसन्नतासे उस गाड़ीमें बैठकर युद्धक्षेत्रकी ओर चला, जो सोफिया तथा शिपकाघाटीकी ओर जा रही थी।

जिस समय अपने साथियोंके साथ किचनर ऐड्रियानोपल पहुँचा, उस समय उसे किसी होटलमें रहनेके लिये स्थान न मिला, लाचार हो, उसे स्टेशनके यात्रीगृहमें ही पड़े रहना पड़ा। जो हो, दूसरे दिन ये तातार बाजारजिक जा पहुँचे। इस शहरकी अवस्था भयानक हो रही थी। बुलगेरियन सिपाही अधिकतासे दिखाई देते थे और मालुम होता था, कि मानो यह शहर शत्रुके दबावमें पड़ा हुआ है। कोई मनुष्य भी संध्या होनेके बाद राहमें घूमता न दिखाई देता था और यदि कोई दीख जाता तो उसी समय कैद कर लिया जाता था।

एक फ्रांसीसी होटलमें, किचनर तथा उसके साथीपर भी वृथा ही सन्देह हो गया; और बड़ी कठिनतासे अङ्गरेज होनेका प्रमाण देनेपर उन्हें छुटकारा मिला और सम्मान भी हुआ। यहीं किचनरकी भेंट कर्नल बुरट, डाक्टर स्मिथ तथा टेम्पल बे नामक ऐसे तीन पुरुषोंसे हुई; जिनसे उसे बहुतसा हाल मालुम हुआ और यह भी मालुम हुआ, कि युद्धक्षेत्रमें कैसी कैसी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ता है।

अब आगेके लिये रेलकी राह न थी अतः लाचार हो इन्हें गाड़ियोंपर आगे बढ़ना पड़ा। राह पथरीली तथा बड़ी ही कष्टदायक थी, इन लोगोंको राहमें इतना कष्ट होने लगा, कि इनके नौकरोंने अपना अपना स्थान छोड़ दिया। कुछ देर बाद जब गाड़ीवालेको यह मालुम हुआ, कि इन अङ्गरेज मनुष्योंके पास नक़द रुपये नहीं हैं, बल्कि नोट हैं, तो उसने इन्हें अपनी गाड़ीमें बैठने देना भी उचित न समझा। इसी समय डाक्टर स्मिथ घायलोंकी गाड़ी लिये उसी स्थानपर आ पहुँचा और उसी गाड़ीमें किचनर तथा उसके साथी सवार हो गये।

तीन घण्टे गाड़ी बड़े कष्टसे बराबर आगे बढ़ती गई और बालकनके किनारेपर जा पहुँची, जिस समय ये गाड़ीसे उतरे हैं, उस समय सड़कोंकी अवस्था बहुत ही खराब हो रही थी, राह कहीं ऊँची, कहीं नीची पड़ती थी और कहीं कहीं घुटनेतक कीचड़में घुस जाते थे। यद्यपि डाक्टर स्मिथने गाड़ी साथ रखनेका बहुत कुछ उद्योग किया; परन्तु घायलोंके सामानकी गाड़ी किसी तरह भी साथ न जा सकी। ये ठीक नौ बजकर ३० मिनिटमें इचमैनमें जा पहुँचे और बड़ी कठिनतासे इन्हें सरायमें जगह मिली।

इसी सरायमें इन्हें कार्केसियन उपद्रवियोंके कई दल दिखाई दिये, जो छोटे झबरे पहाड़ी टट्टुओंपर सवार रहते थे और उसी

टट्टूपर अपने आवश्यक सामान भी आगे पीछे बाँध देते थे। इनका काम शहर तथा गाँवोंको लूटना था और इसी कारणसे इनमें किसी प्रकारकी सज्जनता अथवा सदाचारिता नहीं दिखाई देती थी। वे अपने सरदारके अतिरिक्त और किसीकी भी आज्ञा न मानते थे तथा सदा इसी फिराकमें घूमा करते थे, कि किसी तरह धन उनके हाथ लगे। उन्होंने गाँवोंके लूटनेका एक अच्छा पर भयानक ढङ्ग यह फैला रखा था, कि एकाएक किसी शांत गाँवमें जाकर हल्ला मचाने लगते थे, कि रूसी आ पहुँचे हैं। बस इतना सुनते ही, गाँववाले भयसे अपने निवासस्थान त्याग, भाग जाते थे और ये लुटेरे आनन्दसे धन लूटते थे।

किचनरने बलगेरियनोंके विषयमें अपनी जो सम्मति प्रकट की है, उसमें उसने कहा है;—यह एक घृणा करने योग्य जाति है और चरित्र सम्बन्धमें यह अन्तिम स्थानपर जा पहुँची है।" उसका यह वचन सन् १८१५ में और भी सत्य प्रमाणित हो गया जब बलगेरियाने जर्मनोंका साथ दिया और अपने पड़ोसी सर्वियाको पददलित करनेके लिये खड़ा हो गया।

जो हो, वकेरेल गाँवसे होता हुआ, किचनर अपने साथीके साथ सोफिया आ पहुँचा. राहमें ही उसे घायल सिपाहियोंसे भरी हुई कई गाड़ियाँ मिलीं। इन घायलोंका कष्ट देख उसे बड़ा ही दुःख हुआ; क्योंकि सड़क खराब रहनेके कारण तथा कम्बलोंके अभावसे उन्हें बड़ा ही कष्ट हो रहा था और इस विषयकी सुधि कोई भी न लेता था।

उस समय यूरोपीय रूमके प्रधान नगरोंमें सोफिया तीसरी श्रेणीमें गिना जाता था पर अब वह बुलगेरियाकी राजधानी हो रहा है। उस समय उसकी सुन्दरता बहुत ही बढ़ी चढ़ी थी। इस शहरकी अच्छी तरह देख भालकर किचनर २० दिसम्बरको टशकेसेन गाँवमें जा पहुँचा।

यहाँसे युद्धक्षेत्र केवल एक घण्टेकी राहकी दूरीपर था और तुर्की सेनापति कमलें इस स्थानकी रक्षा कर रहा था। राहमें उसे कितने ही घायल सिपाही इधर उधर बर्फमें पड़े दिखाई देते थे। कितने ही उन्मादावस्थामें अपने वस्त्र फाड़ते और कितने ही सर्दीके कारण ऐंठ रहे थे; परन्तु वहाँ उनकी सुधि लेनेवाला या रक्षा करनेवाला कोई भी न था। जिनकी अवस्था अत्यन्त खराब थी, उन्हें गाड़ीपर उठा ले जाया जाता था; परन्तु इसी तरह लगातार मृत्यु संख्या इतनी बढ़ती गई, कि वह राह मुर्दोंसे भर गई और उस राहसे जाना आना कठिन हो गया।

अरबी सेनाके कुछ सिपाही, जो पलेस्टाइनके उष्ण देशसे इस शीतमय युद्धक्षेत्रमें आये थे, नहीं समझते थे, कि उनके हाथ पैरोंकी उँगलियाँ किस तरह गलती जा रही हैं। यद्यपि उनकी अवस्था अच्छी नहीं थी तथापि वे सदा प्रसन्नतासे जाफ़ाकी उष्ण ऋतु तथा सुन्दर बागोंके विषयमें बातें करते और प्रसन्न रहते थे।

ब्रटिश सेनाके कर्नल वैलेण्टाइन बेकर और आफ्रिकन योद्धा सर सैमुअल बेकर ये दोनों ही तुर्कोंकी ओरसे उस समय लड़ रहे थे। किचनर कुछ दिन इनके साथ रहा, फिर अपने साथीके साथ बेकर पाशासे मिलनेके लिये चला गया जो तुर्की सेनाके सेनापति थे।

यहाँ आकर किचनरने देखा, कि इस प्रान्तके रक्षक ऐसी झोपड़ियोंमें रहते हैं, जो केवल पेड़ोंकी डालियोंसे बनी हैं और जिनपर बर्फ जमा दी गयी है। वे सदा लम्बे लम्बे कोट पहिना करते थे; परन्तु इनसे उनका जाड़ा न जाता था तथा वे भयानक कष्ट पा रहे थे। इनके खीमोंकी अपेक्षा अङ्गरेजी सेनापतिका खीमा कहीं अच्छा था; परन्तु अभी भी उनके आगे बहुतसी कठिनाइयाँ थीं।

बेकर पाशा किचनरसे मिलकर बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे अपना तोपखाना तथा खाइयाँ और किले दिखानेके लिये ले गया। यद्यपि बेकर पाशाने बहुत उन्नति कर ली थी और यद्यपि जिस समयसे बेकर पाशाको इस ओरकी रूमी सेनाका सेनापतित्व मिला था, उस समयसे उसने अपनी अधीनस्थ सेनाकी अवस्था बदल दी थी; तथापि उसे अभी ऐसे इञ्जीनियरोंकी अत्यन्त आवश्यकता थी, जिनकी सहायतासे वह तोपखाने तथा गोलन्दाज सेनाको सहायता पहुँचा सके। किचनरने इस समय बेकर पाशाको बहुत कुछ सहायता पहुँचाई और उन दोनोंमें एक प्रकारकी मित्रता स्थापित हो गई।

किचनरने यहाँ एक बहुत बड़ी भूल पकड़ी। यद्यपि बेकर पाशा एक अनुभवी मनुष्य था, तथापि उसने न जाने क्या समझकर अपनी लाइन ठीक करनेमें भूल कर दी और सेनाकी बाईं ओर एक ऊँची पहाड़ी पड़ती थी, उसपर अधिकार न जमाकर अपनी सेना ऐसे स्थानपर छोड़ दी, जो उससे नीची भूमिमें पड़ती थी। इस भूलने रूसी सेनाको उस पहाड़ीपर अधिकार जमा लेने और उसपर तोपें सजा देनेमें बड़ी सहायता पहुँचाई और अब बहुतसी सेना उस पहाड़ीपर लगी हुई तोपोंकी मारके सामने जा पड़ी।

यह तो वामपार्श्वके युद्धक्षेत्रकी दशा थी। परन्तु दाहिनी ओरकी अवस्था ऐसी खराब न थी। पहाड़के नीचे नीचे ही तुर्की सेनाकी कतार बराबर यल्डिस और स्तार नामक सैनिक दुर्गतक चली गई थी; जो २२०० फीट ऊँची पहाड़ीपर बने थे: इसमें कोई सन्देह नहीं, कि इन किलोंमें तोप चढ़ा देनेमें बड़ा ही कष्ट हुआ होगा; क्योंकि किचनरने लिखा है कि, हम लोगोंको उन किलोंतक पहुँचनेमें बड़ा कष्ट हुआ था। यहाँसे दृश्य बड़ा

ही सुन्दर दिखाई देता था; परन्तु हमलोग यह मनोहर दृश्य देखनेके लिये अधिक क्षणतक न ठहर सके; क्योंकि नीचे खाइयोंमें रूसी सेना छिपी थी। हमलोग उन्हें अच्छी तरह देख सकते थे और वे सरलतापूर्वक बन्दूकके निशाने बन सकते थे।

किचनर समझता था, कि रूसी सेना यदि तुर्कोंपर आक्रमण भी करेगी तो उसके दक्षिण-पार्श्वका कुछ बिगाड़ नहीं सकेगी; परन्तु यदि यह सेना बाईं ओर घूम गई तो इसमें कोई सन्देह नहीं; कि तुर्कोंको बड़ी विपत्तिमें पड़ना पड़ेगा और यही हुआ भी। २४ वीं दिसम्बरको बेकर पाशाने अपना समरस्थल एक बार फिर निरीक्षण किया और अन्तमें जब किचनर तथा बेकर पाशा भोजनके लिये बैठे, उस समय बेकर पाशाने कहा, कि रूसी सेनाने बहुत कुछ सफलता प्राप्त की है और अब तेजीसे आगे बढ़ रही है।

दूसरा दिन अङ्गरेजोंका मङ्गलमय क्रिस्टमसका दिवस था; क्योंकि आज ही पच्चीस तारीख थी। अतः आज किचनर फिर कॉन्स्टैण्टिनोपलको ओर लौट पड़ा; परन्तु उसका बन्धु वहीं रह गया और दो दिन बाद ही रूसियोंने उस स्थानपर अधिकार जमाकर उसे पकड़ लिया।

यद्यपि किचनरने तुर्कोंका बहुत बड़ा कुप्रबन्ध, रूसी सिपाहियोंकी दुर्दशा, तथा सुरक्षित सेनाका बड़ा अभाव तथा घायलोंकी सेवाका कुप्रबन्ध देखा, तथापि उनमें किचनरने एक ऐसा गुण पाया, जिससे उनकी प्रशंसा किये बिना उससे न रहा गया। यह गुण उनकी युद्ध शक्ति थी। इसी लिये उसने लिखा है;—"वे सदा युद्धके लिये तय्यार रहते हैं। वे पूरे बहादुर हैं और बहुत ही अधिक शक्तिके बिना कभी जीते नहीं जा सकते। इसके भीतर उनका उद्देश्य यही हो सकता है, कि जबतक जीवन है तबतक

लड़ेंगे।" और तेंतीस वर्ष बाद किचनरकी यह भविष्यवाणी सत्य भी हुई; जब ब्रिटेनने गैलीपोलीमें अपनी सेना भेजी और उसे हार खानी पड़ी। इसके बाद अपनी सम्मति परिवर्त्तन करनेका किचनरको कभी अवसर न मिला।

कुस्तुन्तुनियाँ लौटते समय वह राहमें ही सोफ़िया उतर पड़ा; जहाँ उसने कई अङ्गरेज़ डाक्टरोंके साथ क्रिसमस बनाया। दूसरे दिन वह तातार बाजारजिकमें जा पहुँचा; परन्तु यहाँ आनेपर उसे मालुम हुआ, कि योद्धाओंके अतिरिक्त किसीको भी इन गाड़ियोंमें यात्रा करनेकी आज्ञा नहीं है, इस समय किचनरने चाल चली और चुपचाप एक गाड़ीमें जा छिपा और तीन घण्टेतक उसीमें छिपा बैठा रहा।

यद्यपि गाड़ी चल पड़ी; परन्तु उसे यह विश्वास न था, कि यह ऐड्रियानोपल जायगी और वह किसीसे पूछ भी नहीं सकता था; क्योंकि यह मालुम होते ही कि यह सैनिक नहीं है, वह गाड़ीसे उतार दिया जाता। जिस समय वह टिर्नोवा पहुँचा, उस समय अपना सामान फेंक वह गाड़ीसे कूदनेके लिये तय्यार था; क्योंकि उसने निश्चित कर लिया था, कि यदि ऐड्रियानोपलकी ओर न जाकर यह गाड़ी दूसरी ओर घूमी तो वह अवश्य ही कूद पड़ेगा। जो हो, गाड़ी सीधी ऐड्रियानोपल आई और किचनर आनन्दसे अपने अभिलिषित स्थानपर आ पहुँचा।

यद्यपि इस युद्धक्षेत्रमें किचनर केवल चौदह दिवस ही रहा, तथापि उसने परिश्रम कर, युद्धक्षेत्रका सब तरहसे निरीक्षण किया और अपना युद्ध-क्षेत्रका ज्ञान इतना बढ़ा लिया, कि उसकी भविष्य उन्नतिकी राहमें बिछे हुए बहुतसे काँटे आपसे आप कुचल गये और धीरे धीरे उसकी असाधारण बुद्धिमत्ता, दृढ़ता तथा कार्यपटुता जनसमाजपर प्रकट होने लगी।

चौथा अध्याय।

साइप्रसके कार्य।

विलायत लौटनेपर किचनर पलेस्टाइनका नक्शा पूर्ण करनेके कार्यमें फिर लगा। इस कार्यमें लेफ्टेनेण्ट कोण्डर तथा और भी कितने ही मनुष्य उसके सहायक बने तथा यह कार्य इङ्गलैण्डके केन्सिङ्गटनके अजायब घरमें होने लगा। ठीक उसी समय जब, कि किचनर पलेस्टाइनका कार्य परिपूर्ण करनेमें इधर उलझा हुआ था, बर्लिनकी राष्ट्रसभा भी बहुत उन्नति कर रही थी और इसी राष्ट्रसभाके उन्नत कार्यका फल यह हुआ, जिसने वह विख्यात सन्धिकी नीव डाली जिससे यूरोपके दक्षिण-पूर्वीय भागका नक्शा बिलकुल बदल गया। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि रूम-रूस युद्धमें टर्कीकी हार हो जानेके कारण ब्रिटिश स्वार्थको बड़ा धक्का पहुँचा; क्योंकि रूसने कुस्तुन्तुनियापर अधिकार जमा लिया और अब भूमध्यसागर (Mediterranean Sea) में रूसी जहाजी बेड़ा आनेकी राह खुल गई, और इससे सम्भव था, कि वह पूर्वकी ओर भी स्वेजकी राहसे झुक पड़े, जो अङ्गरेज़ नहीं करने देना चाहते थे।

इसी बर्लिनकी राष्ट्रसभामें अँगरेज़ोंकी ओरसे लार्ड बेकन्सफील्ड और लॉर्ड सैलिस्बरी प्रतिनिधि होकर गये और इस शर्तपर सन्धि हुई कि रूमानिया, सर्विया और माण्टिनीग्रो स्वतन्त्र राज्य हो जायें।

बुलगेरिया स्वराज्य प्राप्त राज्य हो, परन्तु टर्की (रूम)के अधिकारभुक्त अथवा करद राज्य रहे। इस सन्धिसे रूम राज्यका फैलाव बहुत कम होगया और कितने ही छोटे छोटे राष्ट्र उसके निर्दय व्यवहारसे मुक्त हो गये। यह हुआ अवश्य, परन्तु अभी वह रूसके विपक्षमें हम लोगोंका सीमा रक्षक रह गया। अब ध्यान देनेकी बात यह है, कि लगभग चालीस वर्षके अँगरेज़ोंके स्वार्थकी इसी तरह रक्षा होती रही; परन्तु इसके बाद ही १८१४ में यह भयानक युरोपीय महासमर छिड़ा, जिसमें रूस अँगरेज़ोंका मित्र और साथी बना और रूमने अपना राज्य बढ़ानेके लिये जर्मनीका साथ दिया।

पाठकोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये, कि यह भीषण समर जिसे आप लोग आजकल देख रहे हैं, १८७८ से भविष्यकी ओटमें छिपा हुआ था, और उसी समय यह निश्चित हुआ था, कि जब तक रूसका एशिया माइनर तथा रूमसे छीने हुए किलोंपर अधिकार है, तबतक ब्रिटेनको भी साइप्रसपर अधिकार जमा लेना चाहिये।

जो हो, किचनरने जो कार्य पलेस्टाइनमें किया था, उसका फल अब फूटने लगा; क्योंकि विदेश आफिसने, किचनर पर ही साइप्रसका भार दिया। अस्तु, कुछ ही दिन बाद एक ब्रटिश रिसाला साइप्रसमें आ पहुँचा और यह कार्य आरंभ हो गया।

सन् १८७८ के सेप्टेम्बर मासमें किचनरने अपना कार्य आरंभ किया। उसे १२०० मीलका वह स्थान निरीक्षण और पर्य्यवेक्षण करना पड़ा, जो भयानक पर्वत तथा मलेरियापूर्ण जल-भूमिसे परिपूर्ण हो रहा था और जहाँ पैर रखते ही ज्वरके आक्रमणका भय लगा रहता था। यहाँका कार्य पलेस्टाइनसा सीधा नहीं, बल्कि उसके विपरीत ही था। यहाँकी कानूनहीन प्रजाको शासनमें लाना बड़ा ही कठिन था। साइप्रसमें किचनरको यद्यपि इस कार्यमें ब्रटिश

सरकारसे कमीशन मिलता था; परन्तु इसने किसी प्रकारका कुव्यवहार न किया।

बहुतसे विषयोंमें पलेस्टाइनके समान ही साइप्रस भी था; क्योंकि इसमें बहुत सी ऐतिहासिक बातें छिपी हुई थीं। उस ज़मानेके बहादुर जहाज़ी फिनीशियनका इस पर बास था जो मिश्र-वासियोंसे सदा वाद विवादमें लगे रहते थे। तथा ग्रीक, असीरियन, पर्शियन, रोमन, सरासेन और वेनीशियन आदि जातियोंके चिन्ह भी इस टापू पर दिखाई देते थे। सन् ११९१ ई० में इसी टापूके लिमासल नगरमें भीषण अँगरेज़ी धर्म्म योद्धा लायन हार्टके रिचार्डने बेरेंगरिया आफ़ नवारेसे विवाह किया था, इसीमें उसे सलादीनसे युद्ध भी करना पड़ा था। इसीके किनारे रिचार्ड-के जहाज़ने सरासेन युद्ध जहाज़ पर आक्रमण कर उसे डुबो दिया था। इसके बाद रिचार्डने सम्राट् इसाकको गद्दीसे उतार दिया और अब फिर लगभग सत्तर वर्ष बाद यह टापू ब्रटिश झण्डे के नीचे आता हुआ दिखाई दिया।

लेफ्टनेण्ट किचनरका कार्य उस टापूका केवल पर्य्यवेक्षण ही नहीं था; क्योंकि हज़ार वर्षसे भी अधिक समयसे यह टापू रूमी शासनके अन्तर्भुक्त था और यही कारण था, कि उसमें सभी स्थानों पर दरिद्रता, बद्धावस्था, निराशा तथा शक्तिहीनता दिखाई देती थी। जहाँ कहीं किचनर जाता वहीं उसे नाली, जल प्रणाली, स्वास्थ्यकी व्यवस्था और सभ्यताकी उन्नति करने वाली कोई बात भी नहीं दिखाई देती थी और स्पष्ट मालुम होता था, कि यहाँकी शासक जाति इसके बिल्कुल ही विपक्षमें है।

यहाँ न्यायालय स्थापित करते समय ही किचनरको मालुम हो गया, कि इस स्थानमें सभ्यताका प्रचार हो सकता है और उसे अपनी प्रवीणता दिखानेका अवसर प्राप्त हो सकता है, तुर्कोंको भूमि-

करके प्रबन्धमें घूस और धोखा भरा हुआ था, जमीन खरीदते समय अधिकारियोंको घूस देनेकी चाल चली आती थी तथा इसीप्रकारकी और भी कितनी ही अनियमित बातें वहाँ दिखाई देती थीं।

सर सैमुएल बेकर सूडानके शासन कर्त्ताका पद त्याग सन् १८७८ में साइप्रस आये और उस स्थानका निरीक्षण कर उन्होंने अपनी जो पुस्तक प्रकाशित की उसमें उसने किचनरकी योग्यता दिखाते हुए कहा :—

"जब यह बात प्रकाशित हुई, कि साइप्रसपर ब्रिटिश अधिकार हो गया, उस समय कितने ही मनुष्योंने जाल बनाकर अपने स्वत्वका मूल्य बढ़ा लेना चाहा और वहाँकी धूर्त्तताका पता इसी बातसे लग सकता है, कि ऐसे ऐसे लगभग चालीस हजार दस्तावेज हस्ताक्षरके लिये उस समय मौजूद थे; जिस समय तुर्की अफसरके बदले अङ्गरेज अफसर वहाँ आये।" जो हो उन धोखेबाजोंको इतनेसे ही सजा मिल गई, कि उनके इन जाली दस्तावेज़ों पर दस्तखत न किया गया और वे उसी तरह रोते कलपते छोड़ दिये गये।

ऐसी विशृङ्खल अवस्थामें देशको सुशृङ्खल अवस्थामें लाना यद्यपि कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव मालुम होता था; परन्तु धीर और विचारशील किचनरकी बुद्धिमत्ताने अपना परिचय प्रदान करना आरम्भ कर दिया। साइप्रसमें जमीदारी कचहरियाँ स्थापित की गईं और सभी बातें इतने अच्छे ढङ्गसे सुधर गईं; कि तुर्की न्याय या शासन कभी उसे सुधार नहीं सकता था।

अपनी उस पुस्तकमें जिसमें सैमुएल बेकरने साइप्रसके निरीक्षणका हाल लिखा है। लिखा है, कि किचनरने मुझे अपने साथ लेजाकर वह झरना दिखाया जो गांवसे लगभग एक मीलकी ऊंचाईसे बहता है।

किचनरने साइप्रसमें अपने कार्यों का हवाला देते हुए एक स्थान पर लिखा है :—

"हम लोगोंकी साइप्रसमें आनेका सबसे प्रधान कारण कदापि भूल न जाना चाहिये। प्रधान कारण यही है, कि साइप्रसमें हम लोग इसी लिये आये हैं, कि तुर्की शासन अच्छी तरह एशिया माइनरमें प्रचलित हो और उसकी ओरसे अनधिकार हस्तक्षेपका अब भय न रह जाये। जब तक हम लोग एशिया माइनरमें पूरा पूरा सुधार न देख लें, तब तक उस कृस्तान अभयकारीके आगे किस तरह उत्तर दे सकते हैं, जो दुःखित कृस्तानोंकी रक्षा करनेके लिये उन्हें ऊपर उठा देता है।"

उस सेनाकी ओर भी हम लोगोंको ध्यान देना चाहिये जो भविष्यमें हमारी मित्र हो सकती है। हम लोग जानते हैं, कि रूमी सेनामें कौनसा बहुमूल्ययुद्ध पदार्थ है। इतना ही नहीं, बल्कि हम लोग यह भी जानते हैं कि वे क्या चाहते हैं—अच्छी सभ्यता सुधार और रसद पहुँचानेवाला विभाग। साइप्रसमें एक तुर्की सेना दल रखनेपर हम लोगोंको ये सुधार अवश्य दिखाई देने लगे हैं। यह स्थान उन अफसरोंके लिये शिक्षादात्री पाठशालाके समान हो जायगा जो एशिया माइनरमें सुधार करना चाहेंगे और युद्धके समय हमें ऐसे मनुष्य मिलेंगे जो सीरिया, एशियामाइनर से बहुतसे योद्धा एकत्र कर लेंगे और जो अपने अङ्गरेजी नेताके साथ मृत्यु तक युद्ध करनेके लिये तय्यार रहेंगे।

"साइप्रसको इस तरह बना लेने पर हमें उसका अधिकार राजनीतिक दृष्टिसे बड़े ही महत्वका होगा और तब वास्तवमें पूर्वकी प्रकृत कुंजी हम लोगोंके हाथ लगेगी।"

यद्यपि किचनर साइप्रसमें बड़े उत्साहसे कार्य करता था परन्तु सन १८७९ ई० में उसके कार्यमें बाधा आ पड़ी क्योंकि सर

चार्लस विलसन एनोटोलियाका ब्रिटिश कौन्सल जेनरल नियुक्त हुआ और उसने किचनरको सहायक स्वरूपमें बुला भेजा। इसी लिये उसे बाध्य होकर वाइस कौंसलका पद ग्रहण करना पड़ा और फिर अर्धचन्द्राकार तुर्की झण्डे के नीचे आकर रूस रूम युद्धके कितने ही कार्य उसे करने पड़े।

अनटोलिया एशिया माइनरका एक ऐसा प्रान्त है जो युरोपीय रूमके बहुत ही निकट होनेके साथ ही साथ एक धार्मिक स्थान है और जहाँ उस समय सेनासे भगाये हुए कितने ही मनुष्य भरे थे। इन पलातकोंकी अवस्था बड़ी ही खराब हो गई थी। उनके शरीरपर वस्त्र तक न थे और भयानक उदर ज्वाला उनमें फैल रही थी। इनमें अधिक संख्या स्त्रियाँ तथा बच्चोंकी ही थी जो दुःखसे जर्ज्जरित तथा शोकमें अभिभूत होरहे थे। उनके मकान मटियामेट हो गये थे तथा भीख माँगनेके अतिरिक्त उनके भरण पोषणकी और कोई राह न रह गई थी।

किचनरने इस समय आश्रय भोजन आदि सब प्रकारका प्रबन्ध इतनी उत्तमतासे उनके लिये किया जिससे सभी आश्चर्य्यसे चकित रह गये। इसी लिये उसे सभी प्रकारके मुसलमानोंसे काम पड़ा। उसने उनके लिये घोर परिश्रम किया अपने ज्ञानको उनकी भाषा व्यवहार आदिसे अच्छी तरह परिपूर्ण किया। परन्तु तुर्कोंने इस वीर शान्त और सुशील मनुष्योंके लिये क्या किया? वे इसके अतिरिक्त और कुछ न कर सके, कि उसे रूमी राज्यके सभी धार्मिक स्थानोंमें जानेकी आज्ञा दे दी। बस इसीसे मालुम होता है, कि किचनरने उनका हृदय जीत लिया था और उनकी इच्छा और घृणाके बीच अपनी राह बना ली थी।

सन १८८१ ई० लेफ्टिनेण्ट किचनर साइप्रस चला गया और तुर्की तथा अरबी बाधायें जो उसे राहमें मिलती गईं झेलता गया।

इसी प्रकारसे साइप्रसमें उसने इतने ऊँचे दर्जेकी शिक्षा प्राप्त की जिसने उसे उस कार्यके योग्य बना दिया जिसका वर्णन आगे किया जाएगा।

पाँचवाँ अध्याय।

मिश्रमें किचनर।

अब हम अपने पाठकोंका ध्यान एक दूसरे प्रतिभाशाली राजयकी ओर आकर्षित करते हैं, जो तुर्कोंके भयानक शासनमें पड़कर नाशकी ओर अग्रसर हो रहा था और साथ ही साथ आन्तर्जातिक स्वार्थोंमें भयानक भय उत्पन्न कर रहा था। जब ब्रटेनने भारतपर अधिकार जमा लिया उस समय मिश्र (एजिप्ट) अङ्गरेजोंके लिये बड़े ही मार्केका स्थान हो गया; क्योंकि भारतकी राहमें पड़नेके कारण यह एक बहुत ही उपयोगी स्थान था; क्योंकि उस ज़मानेमें आवागमन करनेवाले जहाज़ बहुत कम थे। स्वेज़की नहर उस समय तय्यार न हुई थी और इसी लिये यात्री तथा व्यापारियोंको बहुत कुछ कष्ट उठाते हुए, उत्तरीय मिश्रकी मरु भूमिको पारकर आना पड़ता था और सिवा ऊँटके उन्हें कोई सवारी नहीं मिलती थी, एक जहाज़में जितना माल लदा रहता है, उसको ले जानेके लिये तीन हज़ार ऊँटोंकी आवश्यकता पड़ती थी और बाकी राह नील

नदी अथवा महमूदिया नहरकी राहसे तय करनी पड़ती थी। इस तरह तीन तीन बार भूमध्यसागर और लोहितसागरके बीचसे आवागमन करना पड़ता था।

यद्यपि १८४० में रेल बननेके कारण कुछ लाभ हुआ ; परन्तु इससे व्यापारी अधिक लाभ न उठा सके ; परन्तु जब १८६८ में स्वेज़की नहर खुल गई उस समय व्यापारियोंको बड़ा लाभ हुआ। इस नहरके बनवानेका सब श्रेय एम० डी० लेसेपके इञ्जीनियरियङ्ग दलको है, जिसने यात्रियोंका ४८८८ मीलका चक्कर और समय तथा कितनी ही कठिनाइयाँ छुड़ा दीं ; क्योंकि केप आफ़ गुड् होपसे आनेमें इतना चक्कर और समय वृथा ही नष्ट हो जाता है।

मिश्रका खेदिव (मिश्रके शासनकर्त्ताकी उपाधि) रूमके सुलतानको कर दिया करता था। परन्तु १८६३ में जब दुर्बल इस्माईल पाशा गद्दीपर बैठा, तब उसने ऐसे कार्य्य करने आरम्भ किये जिसमें बहुतसा धन वृथा ही नष्ट होने लगा। उसको रेल बनवानेकी प्रबल इच्छा थी ; परन्तु बहुतसे मुसल्मान इसे बुराइयोंकी जड़ समझते थे। इस ओर उलझकर वास्तवमें इस्माईलने अपने देशको बहुत कम लाभ पहुँचाया और यदि यही धन वह किसी दूसरे कार्य्यमें लगाता तथा रेलवे इञ्जीनियरोंको परामर्शका उल्लङ्घन न करता तो अवश्य ही उसका धन अच्छे उपयोगमें लगता और उसे भी विशेष लाभ होता।

परन्तु व्यक्तिगत दम्भ और बाहरी असार शानशौकतमें उलझे रहनेके कारण इस्माईल पाशा दिनोंदिन फजूल खर्च ही होता गया। लगभग दस वर्षमें उसने अपना जातीय ऋण लगभग ८६०००००० पाउण्ड बढ़ा लिया ; परन्तु इतना धन खर्च होकर देशका कुछ भी उपकार न हुआ और न उसके व्यक्तिगत स्वार्थोंमें ही कुछ लाभ दिखाई दिया। प्रमाण स्वरूपमें उसने स्वेज़ नहर

खुलनेका इतना बड़ा उत्सव मनाया जिसमें उसका बीस लाख पाउण्ड खर्च हो गया।

इस लिये सन् १८७५में वह ऐसे आर्थिक सङ्कटमें जा पड़ा, जिससे बचनेका कोई भी कौशल न रह गया।उसका ख़ज़ाना ख़ाली हो गया और इसे पूरा करनेका इसके अतिरिक्त और कोई उपाय न रह गया, कि वह स्वेज नगरके शेयर बेच डाले। स्वेज नहरके बनवानेमें मिस्रके साथ ही साथ फ्रांसका भी बहुतसा धन व्यय हुआ था और उस समय ब्रटेनने इसे बहुत ही कम उपयोगी समझ कर विशेष भाग न लिया था; परन्तु पीछे ब्रटिश गवर्नमेण्टकी आँखें खुलीं, जब इस्माईल पाशाने सब शेयर फ्रेंच सरकारके पास भेज दिये। न जाने क्या सोचकर फ्रेंच सरकारने इसमें बिलम्ब किया और यह अच्छा अवसर मिल जानेके कारण ब्रटेन बीचमें कूद पड़ा और उसने ४० लाख पौण्डमें सब शेयर खरीद लिये।

इस समय भी मिस्रकी दशा दिनों दिन शोचनीय ही होती जाती थी; क्योंकि अब विदेशी उसमें विशेष हस्तक्षेप करने लगे थे। अब ब्रटेन और फ्रांस दोनों मिलकर उस देशका निरीक्षण करने लगे और १८७९ में ब्रटेन और फ्रांसके मतसे इस्माईल पाशा गद्दीसे उतार दिया गया और उसका बेटा तौफ़ीक पाशा गद्दी पर बैठाया गया।

यद्यपि यह विदेशी हस्तक्षेप क्रिश्चियन मतानुयायी तथा कितने ही उन मुसलमानोंको उस समय अच्छा मालुम हुआ जो अपने देशकी उन्नति चाहते थे; परन्तु मुसलमानोंके अधिक दलने इसपर अपनी विपरीत सम्मति प्रकट की; क्योंकि वे विदेशी हस्तक्षेप उचित न समझते थे। इसलिये युद्ध सचिव अरबी पाशाने एक ऐसा दल बनाया जो विदेशी शासनमें प्रत्यक्ष रूपसे बाधा देनेवाला रहनेपर भी अन्तमें क्रस्तानोंकी ओरसे घृणा तथा विद्वेष फैलाने-

वाला हो गया और इसने तौफ़ीक पाशाको गद्दीसे उतार देना चाहा।

किचनर साइप्रसमें बैठा बैठा यह समाचार सुनता था अन्तमें उसने १८८२ में कुछ दिनोंकी छुट्टी ले ली और मिश्र चला गया। यहाँ उसने देखा, कि अरबी पाशाका राजद्रोही दल बढ़ता ही जाता है और सम्भव है, कि भविष्यके लिये यह कोई नया उपद्रव खड़ा करदे।

जून १८८२ में अलेक्ज़ेण्ड्रियामें और भी भयानक उत्पात मचा; क्योंकि युरोपियनोंपर एक भयानक आक्रमण हुआ। इस आक्रमणकी जड़में भी अरबी पाशा ही था और लाचार होकर लगभग तीस हज़ार युरोपियनोंको नगर त्याग देना पड़ा। यह आग धीरे धीरे फैलती ही गई। अरबी पाशा अपना दल बढ़ानेके साथ ही साथ अलेक्-ज़ेण्ड्रियाके किलेकी रक्षाका प्रबन्ध करने लगा। इस समय इन युरोपीय महाशक्तियोंके युद्ध जहाज़ किनारेसे कुछ दूरी पर थे और कोई नहीं कह सकता था, कि यह झगड़ा किस तरह शान्त होगा। किचनरकी छुट्टी अब पूरी होने पर आई थी और यद्यपि उसने थोड़े दिनोंके लिये और भी छुट्टी ले ली थी; परन्तु उसे यह आशा कदापि न थी, कि वह अधिक दिनोंतक यहाँ रह सकेगा। यह दूसरी बारकी छुट्टी भी शीघ्र ही समाप्त हो गई और अब उसे पूरी तरह विश्वास हो गया, कि नवीन कौन्सल सर राबर्ट बिडलफ अब उसे छुट्टी न देंगे।

जो हो, किचनरकी, झगड़ा निपटाये बिना हटनेकी इच्छा न होती थी। उसने सर राबर्टके पास फिर तार भेजा और जो उत्तर आया, उसे उस पत्र-सम्पादकने जिससे वह पूछने गया था, छिपा रखा और इस तरह उसे एक सप्ताहका समय और मिल गया; क्योंकि यात्री जहाज़ एक सप्ताह बाद खुलता था।

१० वीं जुलाईको इन विदेशियोंकी ओरसे अरबी पाशाको सूचना दी गई, कि किलेकी मरम्मत छोड़ यह झगड़ा निबटा डालो ; परन्तु अरबी पाशाने इस बातपर कोई ध्यान न दिया, वह अपने किलेको दृढ़ करने और रसद बढ़ा लेनेमें ही लगा रहा। परिणाम यह हुआ, कि नवसेनापति सर ऐडमिरल बूचन सीमूरकी अध्यक्षतामें आठ ब्रिटिश जहाज़ लङ्गर उठा किनारेपर आ पहुँचे और अलेक्जेण्ड्रियाके किलेपर गोले दागने लगे। इसमें सबसे प्रधान जहाज़ "इन्फ्लेक्सिबल्" था और इस जहाज़पर ब्रिटिश जातिको पूरा पूरा गर्व था, यह ११००० टनका जहाज़ था और उस समयके सब युद्धके जहाज़ोंमें बड़ा था। उसपर ८४ इञ्चकी लोहेकी चद्दर चढ़ी हुई थी, १६ इञ्च मुंहकी ४ तोपें रखी थीं, जो १७५ पौण्ड वजनका गोला ६॥ मीलकी दूरीतक फेंक सकती थीं। उसका कप्तान जान ए० फिशर "जैकी" था। यह वही पुरुष था, जिसने कुछ दिन बाद "ड्रेटनॉट" नामक योद्धा जहाज़ बनवाकर पहलेके युद्धजहाज़ोंकी असारता प्रकट कर दी थी। हमलोगोंको जलयुद्धकी विशालता; प्रवीणता और उन्नतिके लिये इसी लॉर्ड फिशरको धन्यवाद देना चाहिये, जिसके भयसे सन् १९१४ में जर्मन बेड़ा अपने घरमें जा छिपा और कैसरके व्यवसाई जहाज़ समुद्र तटपर दिखाई न देने लगे।

जो हो दोनों ओरसे भीषण अग्नि वर्षा होती रही। परन्तु थोड़ी ही देरमें अलेकजेण्ड्रियाके किलोंसे गोलोंका आना बन्द हुआ। किचनर यह सब हाल एक स्टीमरसे खड़ा हो देखता और इन्फ्लेक्सिबलके कप्तानको समय समयपर अपना मत प्रकट करता जाता था।

इस बार कोण्डर नामक छोटे जहाजने भी बड़ी वीरता दिखाई और जब तक युद्ध बन्द न हुआ तब तक वह बड़ी बहादुरीसे लड़ता रहा। इसका कमाण्डर लार्ड चार्लस बेरेसफोर्ड था।

सन्ध्याके पाँच बजते बजते ब्रटिश जहाज़ोंसे गोले दागना बन्द हुआ। जितनी देर तक गोले चलते रहे, उतनी देरमें ब्रटिश जहाज़में १४ गोले लगे जिनसे ६ मनुष्य मरे और २७ घायल हुए। परन्तु अलेक्ज़ेण्ड्रियाके किलोंकी अधिक दुर्दशा हो गई और उसकी रक्षा करनेवालोंको भयानक हानि उठानी पड़ी। दूसरे दिन सवेरे ही शत्रुओंकी ओरसे शान्तिका झण्डा उड़ता हुआ दिखाई दिया।

अलेक्ज़ेण्ड्रिया शहरकी बड़ी दुर्दशा हो रही थी और इसका एक बड़ा भाग जल रहा था। इसी समय सेनापति सेमूरने अपनी सेना शहरकी रक्षा करने और खासकर खेदिवके महल की रक्षा करनेके लिये भेज दी, जिसके प्राण जानेका भय था। अरबी पाशा उस समय अलेक्ज़ेण्ड्रियामें न था और सेना एकत्र करनेके लिये चला गया था।

इस समय यद्यपि सब कार्य लार्ड फिशरने ही किये थे और किचनर केवल तमाशा देख रहा था; परन्तु इनके अतिरिक्त एक मनुष्य और भी उस स्थान पर ऐसा था, जिसे हमलोग भूल नहीं सकते। यह लेफ्टेनेण्ट जॉन आर जेलिको नामक एक वीर और साहसी युवक था, जो यद्यपि अलेकजेण्ड्रियाके तटसे दूरीपर एक जहाज़में था; परन्तु वहींसे अपना उत्साह प्रदर्शित कर रहा था। कौन जानता था, कि एक दिन वह आयगा, जब इन तीनोंको एकत्र मिलकर उस विश्वव्यापी महासमरमें कार्य करना पड़ेगा जिसका स्वप्नमें भी उन्हें गुमान न था।

६

छठाँ अध्याय ।

मिश्रकी रक्षा ।

मिश्रकी यह दुर्दशा देख अङ्गरेज़ोंने अरबी पाशाको हटा देना ही उचित समझा और तुरत ही अलेक्जैण्ड्रियाको घेर लेनेके लिये ब्रटिश सरकारने अपनी सेना भेज दी। इस सेनाके सेनापति सर गार्नेट उल्सेली बनाये गये, जो कई लड़ाइयोंमें बहादुरीसे लड़कर अच्छा नाम कमा चुके थे।

साइप्रसमें उल्सेली और किचनरसे भेंट हो चुकी थी। दोनों ही आपसमें एक दूसरेकी प्रकृतिसे भली भाँति परिचित थे। इस समय मिश्रमें बहुतसे अङ्गरेज़ अफसरोंकी आवश्यकता थी और उनकी तो और भी अधिक जरूरत थी, जो अरबी जानते थे। सर गार्नेट उल्सेलीके हृदयमें किचनरने अपने गुणोंके कारण अच्छी जगह बना ली थी। इस लिये उसने किचनरको बुला लिया और मिश्रकी सेनामें इसे मेजरका पद देना निश्चित किया। पाठकोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये, कि युरोपीय सेना-विभागमें यह सबसे छोटा पद है तथापि उसने यह पद स्वीकार कर लिया और इतनी योग्यतासे कार्य सम्पादन किया, कि देखनेवाले चकित रह गये।

इस समय अरबी पाशा कैरोका मालिक हो रहा था। उसने कैरो और इस्माइलियाके बीच तेल-एल-केबिरमें अपनेको

खूब ही सुरक्षित बना रखा था। ब्रटिश सेनाने सबसे पहले इस्माइलिया और पोर्टसेडको अपने जहाज़ी बेड़े से घेर लिया। ज्यों ही यह घिराव ठीक हो गया, त्योंही उल्सेली अपनी सेना ले शत्रुकी ओर अग्रसर हुआ। यद्यपि मरुभूमिने उसके सामने बहुतसी विपत्तियाँ उपस्थित कीं और उपद्रवियोंने भी राहमें इन्हें अनेक प्रकारकी वाधायें पहुँचाईं ; परन्तु उल्सेली इन बाधाओंपर ध्यान न दे आगे बढ़ता ही गया।

जिस समय अपनी सेनाके साथ उल्सेली कसासिन पहुँचा। दूसरी ओरसे सर जेरल्ड ग्राहम दो हजार पैदल सेना, कितनी ही तोपें और कितनी ही घुड़सवार सेना ले, उस ज़िनेकी पानीकी नहरकी ओर अग्रसर हो रहा था, जिसपर शत्रुओंका अधिकार हो जानेका बड़ा भय था।

२८ वीं अगस्तको सवेरे ही उल्सेलीकी सेनाने ग्राहमकी सेनासे पाँच मीलकी दूरीपर पड़ाव डाला। अभी इसे पड़ाव डाले थोड़ी ही देर हुई थी, कि तोपोंका भयङ्कर निनाद सुन पड़ा। तुरत ही जासूस इसका पता लगानेके लिये भेजे गये ; परन्तु कुछ भी पता न लगा, कि यह शब्द कहाँसे आया। पीछे मालुम हुआ, कि अरबी पाशाने विपक्षियोंको लक्ष्यकर ये तोप दागी थीं।

जिस समय यह सेना ग्राहमकी सेनाके पास पहुँची, उस समय उसे मालुम हुआ, कि शत्रु दाहिने पार्श्वसे आक्रमण किया चाहता है; जिससे बचनेके लिये ग्राहमने पहले ही खाई खोद रखी थी और इसी खाईकी ओर शत्रु बढ़ रहे थे।

इस समय जेनरल ड्रूरी लोवेकी सेनाने बड़ी सहायता पहुँचाई और वह मिश्रकी सेनापर अन्धकारमय रात्रिमें ही झपट पड़ा। बड़ी बड़ी तोपोंसे गोले दागे जाने लगे। इससे मिश्रकी सेनामें हलचल मच गई। इसी समय जब कि मिश्रवासी अपनी

सेनाको ठीक करनेका उद्योग कर रहे थे। ड्रूरीकी सेना शत्रु के दक्षिण पार्श्व में घुस पड़ी और उसे छिन्न भिन्न कर डाला।

इस युद्धमें यद्यपि मिश्रवासियोंकी हार हुई; परन्तु ग्यारह दिन बाद उन्होंने फिर आक्रमण किया और इस बार १३ वीं बेंगाल लैन्सर सेनाने उन्हें मार भगाया।

अरबी पाशा अब तेल-एल-कैबिरमें चला गया, उसने चार चार मीलतककी खाईसे अपनेको खूब ही सुरक्षित बना रखा। इस स्थानकी रक्षा २६००० मिश्रवासी, न्यूबियन और अरबी कर रहे थे। इतनी बड़ी सेनाके सामने उल्सेलीकी १३००० सेना आधी ही थी। यह दशा देख उल्सेलीने दिनमें आक्रमण करनेका विचार त्याग दिया और १२ वीं सितम्बरको अन्धकारमयी रात्रिमें एकाएक शत्रु सेनापर इस तरह टूट पड़ा, कि शत्रुओंको कुछ भी पता न लगा। जिस समय यह सेना शत्रु सेनासे लगभग हज़ार गज़की दूरीपर रह गई है; उस समय शत्रुओंको इसका पता लगा और वे भयानक अग्निवर्षा करने लगे। परन्तु अङ्गरेजी सिपाही उस अग्निवर्षाकी पर्वाह न कर वीरतासे, गोले गोलियोंके बीचसे ही खाई पार गये और अब उनके बिल्कुल ही पास जा पहुँचे। अब शत्रु सेना ठहर न सकी और छिन्न भिन्न हो गई। इसी समय ब्रिटिश सेनाने गोले दागने आरम्भ किये और शत्रु भयसे विचलित हो इधर उधर भागने लगी।

आध घण्टे तक यह युद्ध होता रहा, और सूर्योदय होते होते अरबी पाशाकी समस्त सेना भाग गई तथा मिश्रपरसे अरबीका अधिकार सदाके लिये दूर हो गया।

इस युद्धमें ब्रटेनके १०० सिपाही मारे गये और ३५० घायल हुए। अरबी पाशाकी सेनाके कमसे कम एक हजार सिपाही मारे गये और बहुत ही अधिक घायल हुए तथा कई तोपें, बहुतसे खेमे और युद्ध-सामग्री अङ्गरेजोंके हाथ लगी।

अब भारतीय सेना उन भागते हुए शत्रुओंके पीछे दौड़ पड़ी और भागती हुई सेनाका पीछा करती हुई ज़गज़िग स्थानपर दोपहर होते होते जा पहुँची। इस तरह ज़गज़िगपर भी उसी दिन दोपहर होते होते अधिकार हो गया; परन्तु अभी भी सेनाको शान्ति न थी; क्योंकि शत्रु भागते हुए बेलवाइस जा पहुँचे और ब्रटिश सेना बेलवाइससे भी उन्हें खदेड़ती हुई चौबीस घण्टेमें ही कैरोके निकट आ पहुँची।

इस तरह कैरो भी विपत्तिसे बच गया और जिस समय अरबी पाशाने अङ्गरेज़ी सेनाको इतना शीघ्र यहाँ पहुँचते देखा, उसने शस्त्र रख दिये। विद्रोह मचानेके कारण उसका विचार हुआ और फाँसीकी आज्ञा मिली।

चौदह तारीखको कैनाटके ड्यूक, सर गार्नेट उल्सली, स्कॉट सेनाके साथ कैरो जा पहुँचे। कैरोने इन विजेताओंका बड़ा आदर किया। २८ सितम्बरको खेदिवका लड़का अङ्गरेज़ी शासन-कर्त्ताके साथ आ पहुँचा और उसका भी वहाँ बड़ा आदर हुआ। इसके बाद इन दोनों दलोंमें सन्धि हुई और इस तरह तुर्की शासनसे मिस्रकी रक्षा हुई।

सातवाँ अध्याय।

सूडानकी आग।

यद्यपि मिश्रका युद्ध समाप्त हो चुका था और यद्यपि मिश्र की रक्षाका भार तब तकके लिये ब्रिटिश जातिपर आ चुका था; जब तक वहाँकी सेना सुचारु रूपसे संगठित हो और अपने देशकी रक्षाके योग्य शिक्षित न हो जाये। इसी लिये १२००० सेना वहाँ रख दी गई थी।

परन्तु मिश्रके भाग्यमें अरबी पाशाकी उत्पन्न की हुई विपत्तिके अतिरिक्त एक दूसरी विपत्ति भी बदा थी। मिश्रका सूडान प्रदेश जिसकी राजधानी खारतूम है, बहुत दिनोंसे अशान्त अवस्थामें पड़ा था और ऐसा मालुम होता था कि यह सूडानकी अशान्तिकी आग धीरे धीरे बढ़कर न्यूबियासे अबिसीनिया तक फैल जायगी। मिश्र नीलके दर्रेसे लेकर इक्वेटर तक बराबर ही फैल हुआ है और लगभग पाँच लाख वर्ग मील भूमि घेरे हुआ है। यहाँकी आबादी लगभग १५ करोड़ मनुष्योंकी है। इनमेंसे एक तिहाई जङ्गली नीची जाति हैं और बाकी अरब है। उस समय अरबी ही वहाँकी प्रधान भाषा और मुसलमानी धर्म ही वहाँका प्रचलित धर्म था।

सन १८७४ से १८७९ तक (जेनरल गोर्डन) गोर्डन पाशा सूडानका शासनकर्ता था। उसने बड़ी कठिनतासे वहाँ कानून प्रचलित किया था और वहाँकी मनुष्य विक्रयकी चाल बन्द कर दी थी।

सन १८७९ में ईस्माईल पाशाके स्वभावके कारण गोर्डनने अपना पद त्याग दिया और इसीका यह फल हुआ कि इतने दिनों तक जिस उपद्रवकी आग गोर्डनने दबा रखी थी, वह फिर भभक उठी और गुलामोंकी बिकरी फिरसे जारी हो गई और इसके बाद जब वहाँ मिश्रकी सरकारने कर बैठाया उस समय समस्त प्रजा विद्रोह मचानेके लिये तय्यार हो गई।

अब हम अपने पाठकोंका ध्यान एक बढ़ईके पुत्र मुहम्मद अहमदकी ओर दिलाया चाहते हैं जिसने सूडानमें धर्म प्रचारके बहाने बहुत अधिकार प्राप्त कर लिया और विद्रोहकी आग भड़का दी।

यह मुहम्मद अहमद पहले मिश्रकी सरकारका एक कर्मचारी था। इसने दास विक्रय प्रथापर बहुत ही जोर दिया था। इसने अपनी छोटी अवस्थामें खारतूम और बरबरमें कुछ धार्मिक शिक्षा भी पाई थी; जिसकी उन्नति उसने व्हाइट नील नदीके अब्बा टापूमें जाकर कर ली और यहीं इसने धर्मकी ओर अपनी प्रबल भक्ति दिखलाई।

सन १८७४ की २६वीं मार्चको गोर्डन पाशा रात्रिके समय इसी टापूके किनारेसे स्टीमर पर जा रहा था। उसे हँसीका एक भयानक ठहाका सुन पड़ा और पीछे उसे किसीके व्याख्यान देनेकी ध्वनि मालुम पड़ी। यदि उसी समय गोर्डनको यह मालुम होता, कि मुहम्मद अहमद यहाँ है तो अवश्य ही कोई न कोई प्रबन्ध कर अहमदका अन्त कर देता और सूडान को विपत्तियों से रक्षा हो जाती।

मुहम्मद अहमदने कई स्त्रियोंसे विवाह किया; जिनमें सभी ऊँचे और धनी घरानोंकी थीं। इससे उसका अधिकार और बल दिनो दिन बढ़ता ही गया। सन १८८१में उसने अपनेको

मादी (एक मुसल्मान धार्म्मिक नेता) प्रचारित किया और इस तरह उसने अपना एक ऐसा दल बना लिया जिसका काम सूडानसे मिश्रकी शक्तिका नाश कर देना ही था। इस समय बहुतसे सरदारोंने भ्रमवश मुहमद अहमदका पक्ष ग्रहण किया और उस दलमेंधीरे धीरे बहुतसे मनुष्य उसके झण्डेके नीचे एकत्र हो गये।

यह अवस्था देख मिश्रकी सरकार जाग उठी और उसने मादी के विरुद्ध किसानोंकी एक प्रबल सेना भेजी। मुहम्मदने उस समय विचारा, कि यदि वह हार गया तो उसकी समस्त कीर्ति नाश हो जायगी। इस लिये वह अपनी सेना संगठित करनेके बहाने व्हाइट नील नदीके एक टापूमें चला गया। सन १८८२में वह फिर आ पहुँचा और बहर-एल-गज़लमें उसने छ हज़ार मिश्रकी सेनाको सम्पूर्ण रूपसे विध्वस्तकर डाला तथा कुछ ही दिन बाद उसने फिर एक हजार मिश्रियोंको परलोक भेजा और इस तरह गाँवोंको लूटना और उपद्रव मचाना आरम्भ किया कि उसके नामसे ही लोग भयान्वित होने लगे।

इसके बाद ही मिश्र सरकार ने उससे बदला लेनेके लिये ४५०० मनुष्योंकी एक सेना भेजी। इस आकस्मिक आक्रमणके कारण मादी को स्वयं युद्धक्षेत्रमें उपस्थित होकर हार खानी पड़ी। उसके दस हजार मनुष्य मारे गये और उसे भागकर अपना धर्म और प्राण बचाना पड़ा।

लार्ड डफरिनके मतानुसार मिश्रमें चुने हुए योद्धा अङ्गरेजोंकी एक सेना रखी गई और सर एवेलीन उसके सेनापति बनाये गये। जो १८८२के सेप्टेम्बरमें कैरो आ पहुंचे और और सन १८८३में किचनर भी कप्तान बनकर वहाँ पहुँचा।

पाठकोंको यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि, वही सेना जो तौफीक पाशा के विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये एक बार तय्यार हुई थी और जिसे सर उल्सेलीने पददलित किया था। इस बार

मादी से सामना करनेके लिये मिली थी। यह चुनाव अङ्गरेजों की ओरसे न होकर खेदिवकी ओरसे हुआ था। जो हो, उस सेनाका भार कर्नल हिक्सको दिया गया था, जो यद्यपि सिंहके समान बहादुर था; परन्तु उसमें सेना संगठित की दूरदर्शिता का भयानक अभाव था।

एल ओबिदमें हार खाकर मादी यद्यपि सेना त्याग अकेला ही भाग गया परन्तु कुछ ही दिवस बाद अर्थात १८८३ के जनवरी मास में कई गाँव फिर उसकी अधीनतामें आ गये और धीरे धीरे समूचा कारदूफान मादीके शासनमें हो गया। अब सूडानमें उसकी शक्ति इसी तरह बहुत ही बढ़ गई और उसका निकालना भारी हो गया।

लार्ड डफ़रिनने तौफ़ीक पाशासे कुछ दिनो तक शान्त रहकर अपनी सेनाका बल बढ़ानेके लिये और उचित समयके लिये अपेक्षा करनेको कहा था। परन्तु तौफीक पाशाने उसकी बात न मानी और उसने हिक्स पाशा तथा और दूसरे ब्रटिश अफसरोंके साथ एक ऐसी सेना मादीको हटा देनेके लिये भेजी, जो युद्ध विद्यासे अनभिज्ञ और अनियमित थी और जिसके लिये घर्ड मिश्रके स्वामी मादीको निकाल बाहर करना एक प्रकारसे असम्भव ही था।

४ थी मार्चको हिक्स पाशा खारतूम जा पहुँचा और उसने दूसरे मासमें कुछ सफलता प्राप्त भी की। ९ वीं मार्चको दस हजार मनुष्योंके साथ उसने एल ओबीदकी ओर यात्रा की। कुछ दिनोंतक इसके बाद शान्ति रही। परन्तु इसके बाद ही मृत्यु, निष्ठुरता और संहारके भयानक समाचार आने लगे। एलओबीदमें यद्यपि शत्रुओंसे हिक्स पाशा बड़ी बहादुरीसे लड़ा और तबतक लड़ता रहा, जबतक घोड़ेसे गिराकर मार न डाला गया; परन्तु इससे कुछ लाभ न हुआ। हिक्स पाशा तो मारा ही गया, और उस ब्रटिश सेनाका भी जो वहाँ गई थी ऐसा संहार

हुआ, कि खबर पहुंचाने वाला एक भी बाकी न रहा। जो कैदी बने उनका मुँह भी इस तरह बन्दकर दिया गया मानो वे सभी अपनी जान बचानेके लिये मादीके दलमें मिल गये हों।

तौफ़ीक पाशाके विचित्र विचारोंका ही यह भयानक परिणाम हुआ मिश्रवासियों पर यह विजय प्राप्त होनेके कारण सूडानवासियोंका पूरा पूरा विश्वास मादीपर हो गया। वे मुहमद अहमदको ईश्वरी दूत समझने लगे और उसे केवल सूडानका ही नहीं बल्कि समस्त मुसलमानी साम्राज्यका रक्षक मानने लगे।

पाठकोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि इस हारसे तथा हिक्स पाशाकी मृत्यु से और किचनरके कार्य्यसे कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि अभी इसके हाथोंमें किसी प्रकारका अधिकार नहीं दिया गया था क्योंकि वह इस युद्धके पहले ही वहाँसे सिनाईकी मरुभूमिकी ओर चला गया था। परन्तु उसी समय इन स्थानोंके उद्धारका भार मानो ईश्वरने किचनरको दे दिया था। उस समय कोई भी नहीं जानता था, कि किचनर ही इन स्थानोंका उद्धार करनेवाला तथा मादीसे बदला लेने वाला होगा। यह बात पाठकोंको आगे चलकर मालुम होगी।

आठवाँ अध्याय

सूडानका उपद्रव ।
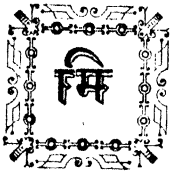
मिस्रसे सूडानका भिन्न हो जाना एक ऐसी घटना थी, जिसको फिरसे सुराहपर लाना कोई सहज कार्य नहीं था। विलायतकी कामन्स सभामें भी इस घटनाके कारण भयानक हलचल मची हुई थी और कोई भी ऐसा उपयुक्त मनुष्य नहीं दिखाई देता था ; जो सुचारु रूपसे यह कार्य सम्पन्न कर सके।

बहुत कुछ सोच विचार कर विलायतके प्रधान मन्त्री ग्लैड-स्टोनने कामन्स सभामें "चाइनीज़ गोर्डन"की बहुत कुछ प्रशंसा करते हुए, गोर्डनको ही इस पदके उपयुक्त बताया और सर्व सम्मतिसे गोर्डन ही मिस्रका भार लेनेके उपयुक्त समझा गया।

वास्तवमें गोर्डनमें कितने ही असाधारण गुण थे, वह बहादुर और धर्म्माभिमानी था। उसके नामके पहले "चाइनीज़" इसी लिये लगाया था, कि उसने चीनमें कितने ही धार्म्मिक और सैनिक सुधार किये थे ; परन्तु वास्तवमें वह क्रिस्तान था। उसने अपना समस्त जीवन लोक सेवामें निःस्वार्थ भावसे अतिवाहित किया था। उसे कितनी ही बार ऐसा अवसर प्राप्त हुआ था, कि अपने लिये बहुतसा धन एकत्र कर ले। चीनमें उसे एक बार ऐसा ही अवसर मिला था। जिस समय वह सूडानका शासनकर्त्ता था, उस समय भी वह अपना खजाना भर ले सकता था ; परन्तु वह सदा शुद्ध और न्यायी रहता था और स्वार्थपर भावका उसमें

लेशमात्र भी न था। उसका यह गुण उस समय और भी प्रत्यक्ष हो गया जब वह खेदिवकी सेवामें था और उसने उस देशको राजस्व-करकी आपदासे बचा दिया था। उसने अपने ६००० पौण्डके वेतनसे भी आधा त्याग दिया था और इसीसे उसपर सब किसीका पूर्ण विश्वास था।

सूडानके विषयमें कितनी ही अभिज्ञता रहनेके कारण, इस बार गोर्डनको अपना काम ठीक ठीक करनेमें किसी प्रकारकी बाधा न दिखाई दी। उसने वहाँ जाते ही अपना सबसे पहला मत यही प्रकाशित किया, कि पूर्वीय सूडानपर अधिकार जमा लेना चाहिये। जो हो, २५ जनवरीको गोर्डन कैरो जा पहुँचा। दूसरे दिन उसने खेदिवसे भेंट की और उसी दिवस वह दक्षिण आसुअनकी ओर होता और बराबर रेगिस्तान पार करता हुआ १८ फरवरीको खारतूम पहुँच गया।

जिस समय गोर्डन बेरबेर, उस्मान डिगनाके पास पहुँचा उसी समय मादीके साथी अमीर एक हज़ार अरबोंके साथ एल-टेबके पास बेकर पाशाकी सेनापर टूट पड़े। यद्यपि अरबोंकी संख्या अत्यन्त हीन थी; परन्तु कादर मिश्रवासी बेकर पाशाके बहुत कुछ उत्साह दिलाने पर भी भाग खड़े हुए। परिणाम यह हुआ, कि सिनकात और टोकर शहर भी मादीके हाथोंमें आ गया और वहाँ मादियोंने भयानक मारकाट, लूटपाट और उपद्रव मचाना आरम्भ कर दिया।

तुरत ही ५००० मनुष्योंकी सेना स्वेजके पास एकत्र की गई और १८८४ को २८ वीं फरवरीको जेनरल सर जेराल्ड ग्राहमने उस्मान और तमाईमें विजय पाई। यदि इसी तरह विजय मिलती जाती तो गोर्डनका इतिहास दूसरा ही कलेवर धारण करता; परन्तु उस समय इङ्गलैण्डकी सरकार मौन धारण किये थी।

इसके बाद जब मिस्रका समाचार पा इङ्गलैण्डकी प्रजामें बहुत जोश फैल गया। तब वहाँ एक बड़ी सेना भेजनेकी तय्यारियाँ होने लगी जिसकी आधी भी उस समय यदि गोर्डनको मिल जाती जब कि वह बारबार सहायताके लिये चिल्ला रहा था तो सभी काम पूरे हो जाते।

जिस समय गोर्डन खार्तूममें पहुँचा, उसी समय उसने वहाँकी प्रजाको सान्त्वना देनेके लिये एक घोषणापत्र निकाला जिसमें उसने स्पष्ट लिखा था, कि खारतूम वासियोंको जो कुछ क्लेश है उसके निवारणका अभी अभी उपाय किया जायगा और रूमी शासनमें जो आपदायें उन पर आई हैं उन सबका अवश्य और शीघ्र प्रतिकार होगा। उसी समय एक दरबार किया गया, जिसमें दरिद्रसे दरिद्र अरबको आनेकी आज्ञा दे दी गई और इस तरह वह दरबार ऐसे हजारों मनुष्यों की भीड़से भर गया जो गोर्डनको अपना उद्धार कर्ता मानने लगे। बहुतसे ऐसे दफ्तर खोल दिये गये जिसमें खारतूम वासी अपना क्लेश सुनाने लगे, वह सरकारी दफ्तर जिस पर प्रजा का कर सम्बन्धी पावना लिखा हुआ था जला दिया गया। इसके बाद कितने ही निरपराधी कैदी जिनका विचार तक न हुआ था और वे जेलमें पड़े सड़ रहे थे छोड़ दिये गये और गोर्डनके स्वागतके लिये शहर रोशनीसे जगमगा उठा तथा आतशबाजियोंने खूब धूम मचा दी।

इसके बाद गोर्डनने मिस्रकी सेनाको हटा देनेका पूरा पूरा प्रबन्ध किया और लगभग ६०० सिपाही तथा २००० बालक और स्त्रियाँ सुरक्षित भावसे मिस्रकी ओर भेज दिये गये। अभी तक मादी छिपा हुआ बैठा था। परन्तु १२ वीं मार्चको उसने हलीफ़िया नामक ग्राममें जो खारतूमके उत्तरमें है, ८०० मिस्रवासी काट

डाले। उसके साथियोंने भी ३०० मिस्रवासियोंके प्राण लिये और फिर नीलके किनारे जा बसे। जब यह समाचार गोर्डन को मिला तब उसने शीघ्र ही तीन स्टीमर जिसमें दो पर भोजनके सामान भरे थे और एकपर १२०० मनुष्योंकी सेना थी, मिस्रियों की सहायताके लिये भेजे। इन स्टीमरोंने वहाँ पहुँचकर हलीफ़िया की सेना भगा दी और इस तरह मिस्रवासियोंको अमूल्य सहायता पहुँचाई।

गोर्डनकी इच्छा थी, कि मादीसे मिलकर सुलह करले, इसी लिये उसने मादीसे मिलनेका विचार भी प्रकट किया। परन्तु यह कार्य न हो सका। इसके कुछ ही दिन बाद मादीने खारतूमपर आक्रमण किया और बेरबेरके दक्षिणका सब प्रांत बागी हो उठा तथा अप्रेल अन्त होते होते बेरबेर पर भी शत्रुओं ने अधिकार जमा लिया। इस समय गोर्डन बराबर इङ्गलैंडको सहायता करनेके लिये लिखता गया। परन्तु कोई सहायता शीघ्र न पहुँच सकी। ८ वीं मेको कैरोके अङ्गरेज अधिकारियोंको सूचना मिली, कि बिलायतकी सरकार अकटूबरमें सहायता भेजेगी।

जूनमें कठिनाइयाँ और भी बढ़ती गईं; क्योंकि बेरबेरपर शत्रुओंका प्राधान्य हो गया था इसके बाद समाचार मिला कि डङ्गोलाके अमीरने ५००० विद्रोहियोंको पराजित किया है। इस अन्तिम सुखप्रद समाचारके लिये हमें किचनरको धन्यवाद देना चाहिये। क्यों कि वह इस समय नील नदी और लोहित सागर (Red sea) के बीचके प्रदेशोंमें कार्य्य कर रहा था तथा उसने अपनी असाधारण बुद्धिमत्ताके कारण अरबोंका हृदय जीत लिया था। अरब उससे इतने हिल मिल गये थे, कि किचनरकी आज्ञानुसार ही वे चलते थे। यदि किचनर वहाँ न होता तो वे वास्तव में शत्रुओंसे मिल जाते।

जो हो, एक महीनेतक यही अवस्था रही, इसके बाद मादीकी सेना धीरे धीरे आगे बढ़कर खारतूमके पास आ गई। इन विद्रोहियोंके बीचसे कोई भी समाचार बाहर जाना कठिन हो गया। इसके कुछ ही दिन बाद विद्रोहियोंने खारतूमपर एक भयानक आक्रमण किया; परन्तु दुर्भाग्यवश वे सभी पराजित हुए और इस युद्धमें शत्रुओंके दो हज़ार मनुष्य काम आये। इसके बाद ही समाचार मिला, कि डङ्गोलाके मुदीरने विद्रोहियोंको फिर पराजित किया है।

अभीतक किचनर डङ्गोलामें ही बैठा हुआ कार्य कर रहा था, यद्यपि उसका प्राण इस समय विपत्तिमें था और मादीके उपद्रवियों-के आक्रमणका बराबर भय लगा रहता था; परन्तु किचनर इन बातोंपर ध्यान न दे दृढ़तासे अपना कार्य करता जाता था। इस समय वह मुदिरके साथ अरबी पोशाकमें ही रहता था; परन्तु कार्य अङ्गरेज़ी शासनकर्त्ताके समान किये जाता था। यद्यपि वह जानता था, कि वह यह कार्य अपनी जान हथेलीपर लिये ही कर रहा है; परन्तु इसके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न था।

सेप्टेम्बर मासमें गोर्डनने जलपथद्वारा बेरबेरपर आक्रमण किया और खारतूमके दक्षिण उसने ६००० मनुष्योंको साथ ले जो आक्र-मण किया उसमें उसे पूरी विजय प्राप्त हुई तथा इस आक्रमणमें उसे जो धन और अन्न मिला; उससे उसने फिर अपना खज़ाना और भण्डार भर लिया। इसके बाद गोर्डनने मादीको वश्यता स्वीकार करनेके लिये लिखा; परन्तु वश्यता स्वीकार करना तो दूर रहा। उसने ३०००० मनुष्योंके साथ खारतूम नगरपर आक्र-मण कर दिया; परन्तु इस बार उसे फिर हार खानी पड़ी और आठ घण्टेके युद्धमें गोर्डनने उसे मार भगाया।

इसके बाद ६ ठी अक्टूबरको कर्नल स्टुअर्ट किसी आवश्यक

कार्यके लिये जा रहा था, कि बीचमें ही अरबोंने उसे काट डाला । उसके साथ ही और भी कई अङ्गरेज अफसर मारे गये और अब खारतूममें गोर्डन अकेला ही रह गया ।

नवाँ अध्याय ।

लार्ड उल्सली ।

सन् १८८४ के अगस्तमें लार्ड उल्सली खारतूनकी सहायक सेनाका सेनापति बनाया गया और १०वीं सेप्टेम्बरको वह कैरो आ पहुँचा । इसके बाद कैरोका कुछ कार्य समाप्त कर दूसरी नवम्बरको वह डङ्गोला जा पहुँचा । इस सेनाका प्रधान अड्डा डङ्गोलामें था, इसी समय खारतूमसे एक दूत कर्नल स्टुअर्टका मृत्यु समाचार लेकर आ पहुँचा ।

६ सप्ताह बाद उल्सली अम्बुकाल जा पहुँचा । इस समय लार्ड चार्लस बेरिसफोर्डकी अध्यक्षतामें एक जलसेना तय्यार की गई और जेनरल अर्लकी अध्यक्षतामें नील नदीकी राहसे एक सेना चल पड़ी ।

किचनर इस समय मेजरके पदपर पहुँच चुका था और कोर्टीमें क्वार्टरमास्टर जेनलरके पदपर कार्य्य कर रहा था । वह कोर्टीसे मेटेमेकी राहतककी रक्षामें नियुक्त था ।

आबू क्लियामें १६ वीं जनवरीको अरब फिर दिखाई दिये, यह मालुम होते ही उनसे सेनाकी रक्षाका प्रबन्ध किया जाने लगा और जबतक कि सेना सुरक्षित स्थानमें पहुँच जाये उसके पहले ही पाँच हजारसे अधिक अरब झाड़ियोंमेंसे निकलकर अङ्गरेजी सेना-

पर टूट पड़े। यद्यपि अङ्गरेज़ी सेनाने उनका अच्छी तरह सामना किया और यद्यपि उनमेंसे बहुतसे परलोक सिधारे ; परन्तु ब्रिटिश सेनाकी भी बहुत क्षति हुई और बड़ी कठिनतासे शत्रु भगाये जा सके। इसमें शत्रुओंके ११०० मनुष्य हताहत हुए।

अब अङ्गरेज़ी सेना मेटेमेकी ओर बढ़ती गई और दूसरे ही दिन उसे फिर विपत्तिमें पड़ना पड़ा ; क्योंकि बहुत कुछ उद्योग करनेपर भी उस मरुभूमिमें वे अठारह मीलसे अधिक अग्रसर न हो सके, प्यासके मारे उनके कण्ठगत प्राण हो रहे थे। ज्यों ही यह अङ्गरेज़ी सेना एक कूँएके पास पहुँची है, त्यों ही अरबोंकी एक बड़ी सेना इन्हें रोकनेके लिये आ पहुँची। फिर युद्ध हुआ और इस भयानक युद्धके बाद अरब फिर वहाँसे हटे।

यद्यपि किचनर इस युद्धमें सम्मिलित नहीं था ; परन्तु उसका कोर्टी पहुँच जाना भी अच्छा ही हुआ ; क्योंकि डङ्गोलाके अधिवासियोंपर भी विपक्षमें मिल जानेकी सम्भावना दिखाई देती थी। यदि वास्तवमें उस समय मुदीर विपक्षमें हो जाता तो अङ्गरेज़ी सेना और मिश्रकी सेनाकी बड़ी ही दुर्दशा होती ; परन्तु इसके पहले ही, कि मुदीर विपक्षमें मिले, किचनरने आश्चर्यजनक रीतिसे यह भण्डा फोड़ दिया और अङ्गरेज़ी सेना विपत्तिसे बच गई।

एक दिन सन्ध्याके समय एक दरवेश (मुसलमान फ़कीर) कोर्टीमें मुदीरके खीमेके पास घूमता हुआ दिखाई दिया। वह तुरत ही शत्रुका भेदिया समझकर पकड़ लिया गया ; उसे कितना ही प्रलोभन दिया गया और कितना ही भय दिखाया गया, परन्तु वह एक शब्द भी न बोला, मानो वह गूँगा बहरा हो। इसके थोड़ी ही देर बाद एक दूसरा दरवेश भी आ पहुँचा और आश्चर्यकी बात यह है, कि वह भी वैसा ही गूँगा, बहरा निकला। अब सन्देह बढ़ता ही गया और जब रात्रिके समय खीमोंकी

रक्षाका प्रबन्ध हो रहा था, उस समय एक तीसरा दरवेश भी आ पहुँचा और पहले दोनों दरवेश जिस खीमेमें कैद थे, उसीमें रखा गया। रात्रिके समय पहरेदार सिपाहीने सूचना दी, कि ये दरवेश आपसमें बातें करते हैं और वास्तवमें गूँगे बहरे नहीं हैं; परन्तु अरबी भाषा न जाननेके कारण वह उनकी बातें न समझ सका। इसके थोड़ी ही देर बाद इन दरवेशोंका भण्डा फूट गया; क्योंकि किचनर उनके ऐसा ही वेश बना उनके खीमेके पास पहुँचा। उसने इशारेसे सिपाहीको हटा दिया और उस तीसरे आये हुए दरवेशने अपना साथी समझकर किचनरके आगे अपना भेद प्रकट कर दिया।

दूसरे ही दिन लार्ड उल्सली और किचनर अङ्गरेज़ी लिवासमें एकत्र बैठे और इन दरवेशोंका विचार आरम्भ हुआ, परन्तु बहुत कुछ पूछनेपर भी किसीने कोई उत्तर न दिया। केवल वह तीसरा दरवेश घूर घूरकर किचनरकी ओर देखता था। किचनर अङ्गरेज़ी लिवासमें था और चुपचाप बैठा हुआ था। वह अरबी दरवेश बराबर सन्देहसे देख रहा था; परन्तु वह उसे अभीतक ठीक ठीक पहचान न सका था। एकाएक किसी आवश्यक कार्यवश किचनर ज़ोरसे बोल उठा। अब उस अरबका सब सन्देह जाता रहा, उसने आवाज़ सुनते ही किचनरको पहचान लिया, कि यही वह चौथा दरवेश है। उसने तुरत ही झपटकर किचनरका गला दोनों हाथोंसे पकड़ लिया और चाहता ही था, कि गला दबाकर उसका प्राण हरण कर ले, कि इसी समय किचनर और उसमें हाथा बाहीं होने लगी, तुरत ही उल्सली और बाहरके सिपाही टूट पड़े और बड़ी कठिनतासे किचनरकी प्राणरक्षा हुई। इसके बाद ही कार्य आरम्भ हुआ; और दस मिनिट बाद ही डङ्गोलाके मुदीर का खीमा घेरकर वह कैद कर लिया गया।

इस समय चार्लस विल्सन अपनी सेनाके साथ गुबात नदीके किनारे किनारे आगे बढ़ रहे थे। २१ वीं जनवरीको उन्होंने खारतूमसे एक सौ मील उत्तर मेटेमे पर आक्रमण किया। इसी समय गोर्डनने भी नदीकी राहसे चार स्टीमर सहायताके लिये भेज दिये। चार्लस विल्सनने अपनी बहुतसी सेना स्टीमर द्वारा खारतूम रवाना करदी और स्वयं गुबातकी राह आगे बढ़ता गया। इधर चार्लस बेरेसफोर्डने नदीकी ओरसे शत्रुओंके कितने ही कारखानों पर गोले बरसाकर उनका नाश कर दिया और सेनाके लिये बहुतसे भेंड़ और बकरे बकरियाँ पकड़ लीं।

पहली फरवरीको एक लेफ्टेनेण्ट यह भीषण समाचार लेकर आ पहुँचा, कि खारतूममें शत्रुओंपर अधिकार हो गया और बहादुर गोर्डन मारा गया। यह समाचार सुनते ही विल्सन खारतूमकी ओर दौड़ पड़ा परन्तु उसे वहाँ पहुँचनेके पहले ही मालुम हुआ, कि मिस्रका झगड़ा उतार दिया गया और मादीका पूर्ण अधिकार हो गया।

विलायतसे सहायता बहुत देरसे आई। यद्यपि चार्लस विल्सन खारतूमकी ओर दौड़ पड़ा, परन्तु वृथा। इस शीघ्रतामें दोनों स्टीमर पहाड़से टकराकर नाश हो गये और स्वयं चार्लस विलसनको बाध्य होकर गुबातसे ३० मील दूर एक टापूमें आश्रय ग्रहण करना पड़ा। इसके पास ही एक दूसरे टापूमें ५००० दरवेश थे। यदि इस समय लार्ड बेरेसफोर्ड उद्योग न करता तो विलसनको भी अपने साथियों समेत परलोक जाना पड़ता। परन्तु बेरेसफोर्ड शत्रुके गोलोंकी चोट बचाता और उन पर आक्रमण करता हुआ बड़ी कठिनतासे विलसनकी सेनाको उस टापूसे गुबात ले आया और उनके प्राण बचे।

खारतूमकी असफलताने बड़ा ही भयङ्कर प्रभाव जमाया, उस्मान डिगनाने उस सेना पर भी अधिकार जमा लिया जो सुआ

किनमें पड़ी थी। सन १८८५ के मार्चके आरम्भमें एकबार खार तूमपर अन्तिम आक्रमण करनेका विचार किया गया। बारह हजार अङ्गरेज़ी सेना, हिन्दुस्तानी रिसाला और छः सौ अफसरोंके साथ यह सेना आगे बढ़ी। उस्मान डिगनाकी सेनासे कई बार युद्ध हुआ; परन्तु इनकी विजय होनेपर भी कोई विशेष फल न हुआ।

परन्तु इस असफलताके कारण ब्रिटिश सरकारने सूडानसे अपनी सेना हटा लेना ही स्थिर किया। यद्यपि उल्सलीने खारतूमपर आक्रमण करनेका कई बार आग्रह प्रकाश किया। परन्तु उसे आज्ञा न मिली बल्कि सेनाको लौट आनेकी आज्ञा दी गई। इस तरह सूडान मादीके अधिकारमें छोड़ दिया गया और ब्रिटिश सेना लौट आई।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि गोर्डनको खारतूममें भयानक धोखा दिया गया। मादीके भेदिये चारों ओर लगे थे और वे प्रजाको विद्रोह मचानेके लिये उसका रहे थे। गोर्डन बीमार पड़ा और रविवार रहनेके कारण वह दरबारमें न आया। उसी दिन सन्ध्याको इस्माइलिया नामक स्टीमरपर गोर्डन तूतु टापूमें घूमनेके लिये चला गया। विपच्छियोंको यह अवसर अच्छा मिल गया और उन लोगोंने हल्ला मचा दिया, कि गोर्डन भाग गया; परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि वह शीघ्र ही, खारतूम लौट आया क्योंकि वह ठीक महलके दरवाजे पर मारा गया था।

२१ वीं तारीखको साढ़े तीन बजे रात्रिके समय ही विद्रोहियोंने खारतूमपर आक्रमण किया। नगरके मसलामिया नामक फाटकके आगे जो खाइयाँ थीं वे घास फूस और पेड़की डालियोंसे भर दी गईं और विद्रोही शस्त्र ले नगरमें घुस पड़े। शहरमें घुसते ही विद्रोही चारों ओर फैल गये और बड़ी ही निर्दयतासे जो रास्ते में मिलता गया उसका संहार करते गये। इस तरह नगरमें

बड़ी ही हलचल मच गई और सभी अधिवासी इधर उधर भागने लगे। यद्यपि गोर्डनकी सेनाने इसमें वाधा पहुँचाई परन्तु वह पराजित होती गई और इसी गड़बड़ और शहरकी रक्षा करनेके झमेलेमें महलके दरवाजे पर ही गोर्डन मारा गया।

इसके बाद भीषण संहार आरम्भ हुआ। यह कत्ले आम लगभग छः घण्टे तक होता रहा और लगभग सात हजार मनुष्य मारे गये। जिनमें कितने ही दास दासियाँ तथा खारतूम नगरके अधिवासी थे। ५१५७ तो सेना ही थी। यह एकदम मार डाली गई।

दूसरे दिवस दस बजे दिनके समय यह संहार बन्द करनेकी आज्ञा आई और अब नगरकी लूट आरम्भ हुई और अधिवासियोंको घर छोड़ निकल जानेकी आज्ञा हुई। ज्योंही वे नगरके द्वारपर आते थे; उनके पास जो कुछ धन सम्पत्ति थी, सब रखवा लिया जाता था। स्त्रियाँ पकड़ पकड़कर दासियोंके स्वरूपमें मादीके पक्षपातियोंको दे दी जाती थीं तथा पुरुष तीन दिनोंतक कैद रखे जाकर अन्तमें छोड़ दिये जाते थे।

मादीने अपने साथियोंको आज्ञा दे दी थी, कि जितना सोना चाँदी मिले सब उठा ले जाओ। इस तरह बड़ा ही भयानक काण्ड मचा और लुटेरोंने सोने चाँदीका एक तार भी न छोड़ा; परन्तु सरकारी खजानेका मादीको पता न लगा। इसलिये उसने फराग पाशा नामक एक अधिकारीको पकड़वा मँगाया; परन्तु उसे भी खजानेका कोई हाल मालुम न था और न बता सकनेके कारण वह भी मार डाला गया।

लूटमें अधिक धन न मिलनेके कारण बेगारा अरब (एक अरबकी जाति) ने मादीका साथ छोड़ दिया और भविष्यमें इनके द्वारा ही मादीको कष्ट उठाना पड़ा।

इस तरह समय पर सहायता न पहुँचनेके कारण सूडानका अन्त हुआ और अपने ही दोषके कारण, ब्रटेनको सूडानपरसे अधिकार त्यागना पड़ा।

दसवाँ अध्याय।

खलीफ़ा अब्दुल्ला।

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि गोर्डनकी मृत्यु तथा सूडान का ब्रटिश सेना द्वारा परित्याग देना ही भयानक घटनायें घटीं। किचनरने भी अपना पद त्याग दिया और इङ्गलैण्ड लौट गया।

खारतूमके पतनके बाद ही मादीने उमदुर्मानमें नदीके दूसरे तटपर अपनी राजधानी बसाई और खारतूमकी पूरी पूरी दुर्दशा कर दी गई। उसकी बड़ी बड़ी इमारतें ढाहकर नई राजधानी बनानेमें लगा दी गईं और बहुत थोड़ी अच्छी इमारतें वहाँ छोड़ दी गईं। परन्तु मादी सुख न भोगने पाया और इसके थोड़े ही दिन बाद वह मर गया।

अपनी मृत्युके पहले ही मादीने खलीफ़ा अब्दुल्लाको अपना उत्तराधिकारी बनाया था। उसकी मृत्युके बाद खलीफ़ाने राजधानीमें प्रवेश कर मादीकी क़ब्र बनवाई। यह नवीन उत्तराधिकारी चिड़चिड़ा और उदण्ड था। इसके हृदयमें दया न थी

और यही कारण था, कि उसके शासनका प्रभाव सूडानपर और भी भयानक पड़ा।

ब्रिटिश सेनाके चले आने पर मिस्रके उत्तरी सरहद तक खलीफ़ाका प्राधान्य अच्छी तरह फैल गया; परन्तु न्यूबिया तथा अरबकी कितनी ही जातियोंने खलीफ़ाका प्राधान्य न माना। आप लोगोंको यह स्मरणमें रखना चाहिये, कि इन्हीं जातियोंके साथ पहले किचनर काम करता था।

सन् १८८५ ई०के अन्तमें किचनर ज़ंजीबारका कमिश्नर नियुक्त होकर फिर लौटा। यहाँ उसने ज़ंजीबारकी वह सीमा ठीक की जो जर्मनीका पूर्व अफ्रिकामें अधिकार बढ़नेके कारण बिगड़ रही थी। इस समय भी किचनरका ध्यान सूडानकी ओर था, और वह गोर्डनकी हत्या तथा सूडानके विद्रोहियोंसे बदला लेनेकी राह खोज रहा था।

सन १८८६ में किचनर लोहितसागर प्रदेशका शासन कर्त्ता नियुक्त हुआ। इस पदके प्राप्त करने बाद, थोड़े ही दिनोंमें किचनरने समुद्रके किनारे किनारे इतनी उत्तम और सुदृढ़ किलेबन्दी की, कि उपद्रवियोंका भीतर घुसना कठिन हो गया। सूडानके इस प्रान्तमें उस्मान डिगनाका प्राधान्य बहुत ही बढ़ा चढ़ा था परन्तु वह भी मनही मन किचनरसे भय खाता था। इसके अतिरिक्त वहाँ कितनेही शेख और भी थे, जो उस्मान डिगनाके साथ गुप्तरूपसे लूटमारमें सम्मिलित रहते थे परन्तु मिस्रवासियोंको हृदयसे प्यार करते थे। किचनर ने अपनी बहुदर्शिता द्वारा शीघ्रही इन्हें पहचानकर निकाल बाहर किया और उस समय सभोंको विश्वास हो गया कि किचनरके साथ धोखेबाज तथा बेईमानोंकी गुजर नहीं है।

इसी समय किचनरको पता मिला, कि शत्रुओंने हण्डुबके पास उपद्रव आरम्भ किया है। उसने तुरत ही ५०० मनुष्योंकी सेना

एकत्रकर उनपर आक्रमण किया और इस आक्रमणमें उसे पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई। इस समय फिर कुछ अरबोंने किचनरको धोखा दिया और लूट मारमें सम्मिलित हो गये। फिर युद्ध हुआ और इस बार उस्मानको रणक्षेत्र छोड़ भाग जाना पड़ा। इसबार किचनर भी भयानक रूपसे आहत हुआ। उसके गालमें एक गोली लगी जो उसका जबड़ा छेद भीतर घुस गई। यह ऐसा भयानक आघात था कि उस स्थानसे गोली बाहर निकालनेमें बड़े बड़े शस्त्र वैद्य घबड़ाते थे। किचनर भी यह नहीं कह सकता था, कि वह गोली निगल गया अथवा थूक दी। कुछ ही देरमें उस्मान डिगना के विरुद्ध उसने जो कुछ विचार किया था वह उसे स्थगित कर देना पड़ा और डाकर उसे उठाकर कैरो ले गये। मार्चमें सुआकिनमें फिर झगड़ा खड़ा हो गया और किचनर चंगा न होने पर भी फिर युद्धके लिये चल पड़ा; परन्तु इसबार किचनरका दृढ़ उत्साह उसके रोगको दबा न सका और उसे बाध्य हो इङ्गलैण्ड लौट जाना पड़ा। जहाँ वह रानी विक्टोरियाका एडी-डी-कैम्प और कर्नलकी उपाधिसे विभूषित किया गया।

यद्यपि किचनरने सूडानपर अधिकार करने तथा ब्रटिश राज्यको लाभ पहुँचानेके लिये ही यह उद्योग किया था; परन्तु अङ्गरेज़ अधिकारियोंको यह बात पसन्द न आई। इस बातका पता सर एवेलीनके १४ मार्चके पत्रसे ही लगता है, जिसमें उसने किचनरको लिखा था, कि इस समय हमलोगोंकी नीति अरबोंपर आक्रमण करनेकी नहीं, बल्कि अपनी रक्षा करते हुए व्यापार बढ़ानेकी है।

किचनर अच्छी तरह जानता था, कि इन लड़ाके दरवेशोंको बिना पददलित किये कदापि इस देशमें व्यापारकी उन्नति नहीं हो सकती। उस्मान डिगना व्यापारियोंका सब माल लूटनेको

ताकमें सदा लगा रहता था और इसलिये वह पहले उस्मान डिग-
नाको ही अपने अधिकारमें लाना चाहता था। किचनरके विचारकी
सत्यताका प्रमाण उस समय और भी अच्छी तरह मिल गया जब
किचनर घायल होकर इङ्गलैण्ड चलागया और उसके स्थानपर दूसरा
शासक बैठा। किचनरके जाते ही उस्मान डिगनाने फिर उप-
द्रव आरम्भ किया और अङ्गरेज़ी सेनाको प्रत्यक्ष रूपसे भय
दिखाया गया।

इसके बाद दिसम्बरमें किचनर फिर अपने स्थान पर लौट
आया। इस समय सर फ्रान्सिस ग्रेनेल मिश्रकी सेनाका सरदार
था। जब किचनर वहाँपर पहुँचा है उस समय उस्मानपर आक्र-
मण करनेकी तय्यारियाँ हो रही थीं। यह कार्य किचनरकी
इच्छाके अनुकूल था; अतः वह बड़े उत्साहसे तय्यारियाँ करने
लगा; क्योंकि वह मिश्रके सभी स्थानोंसे भली भाँति परिचित था।
वह जानता था, कि यह युद्ध मरुभूमिमें ही होगा, वह शत्रुओंकी
चाल ढाल अच्छी तरह समझता था और वह यह भी जानता था,
कि युद्धका सब दार मदार काली सेनापर है।

यहाँपर खलीफा अब्दुल्लाके विषयमें कुछ लिखना भी अत्यन्त
आवश्यक प्रतीत होता है, क्योंकि उसने भी बड़ा उपद्रव मचा
रखा था। जब उसने गद्दी पाई, उस समयसे वह मिश्रपर आक्रमण
करनेकी अभिसन्धि ढूँढ़ रहा था और जब दरवेशोंने डङ्गोला पर
अधिकार जमा लिया उस समय खलीफा और भी कितने ही
प्रकारके सुख स्वप्न देखने लगा। अपने अनुचित आत्माभिमान वश
उसने रानी विक्टोरिया, रूमके सुल्तान और मिश्रके खेदिवको
भी अधीनता स्वीकार करनेके लिये पत्र लिख दिये और उसमें
उन्हें धमकाया, कि यदि तुम लोग ऐसा न करोगे तो तुम्हारी
दशा भी हिक्स पाशा और जेनरल गोर्डनके समान ही की जायगी।

इसी बीचमें एक दुर्घटना और घटी। बेगाराके अमीरकी उद्दण्डता, अन्याय तथा उत्पातके कारण दरफूरमें विद्रोह फैल गया इस विद्रोहके शान्त करनेमें ही खलीफ़ाके दो वर्ष व्यतीत हो गये। सम्भव, था कि अन्य प्रान्तोंमें भी इस विद्रोहकी आग फैल जाती; परन्तु खलीफ़ाने बहुतसे मनुष्योंकी आहुति देकर यह विद्रोह शान्त किया। इस तरह खलीफ़ाका अहंकार और भी बढ़ गया। उसने मिश्रकी सीमापर विद्रोह मचानेके लिये अपनी बहुतसी सेना उस्मान डिगनाके पास सहायता स्वरूप भेज दी, और अब बादी-हली फ़ियामें फिर भयानक उपद्रव मचनेके सूत्रपात दिखाई देने लगे।

दिसम्बरमें सरदारकी ओरसे उस्मानपर आक्रमण करनेके लिये एक नवीन सेना चली, जिसने गमाइज़ाके पास ऐसे वेगसे उस्मानकी सेनापर आक्रमण किया, कि उस्मानकी सेना पूर्ण रूपसे पराजित हुई; परन्तु अपनी चालाकीसे उस्मान निकल भागा। इस बार किचनरने बड़ी बहादुरी दिखाई और यह उसीके उद्योगका फल था, कि मिश्रकी सेनाको यह विजय प्राप्त हुई।

उस्मानके अतिरिक्त एक और भी ऐसा पुरुष था, जिसने हिक्स पाशाकी सेनाको बड़ी हानि पहुँचाई थी और गोर्डनकी हत्यामें भी सम्मिलित था। वह एक नजूमी था, यह कुत्सित हृदय पुरुष इस समय डङ्गोलामें मिश्रकी सेनाके विरुद्ध तय्यारियाँ कर रहा था। एकाएक किचनरके साथी उडहाउसने १००० मनुष्योंके साथ उसपर आक्रमण किया और वह भी डङ्गोलामें पूर्ण रूपसे पराजित हुआ। इस समय सरदार ग्रेनफेलने नजूमीको अधीनता स्वीकार करनेके लिये कहा; परन्तु उसने एक न मानी अन्तमें ग्रेनफेलको उसपर आक्रमण करना पड़ा। १८८९ ईस्वीकी तीसरी अगस्तको ३००० दरवेशोंपर यह तीसरा आक्रमण हुआ, और वे पूर्णरूपसे पराजित हुए। इस बार किचनरकी अधीनस्थ २० वीं

हुआर सेनाने भीषण युद्ध किया और फिर मिश्रकी सेनासे मिलकर दरवेशोंकी सेनाको उसने ऐसा पद दलित किया, कि उन्हें बाध्य हो रणक्षेत्र छोड़ भाग जाना पड़ा। कितने ही अमीर मारे गये, नजूमी तथा कितने ही पुरुष स्त्रियाँ तथा लड़के कैद किये गये।

इस विजयका परिणाम बहुत ही उत्तम हुआ। खलीफ़ाको इस विजयसे मालुम हो गया कि, सरदार हबशी गुलामोंको भी योद्धा बना रहा है और यदि इस समय सरदारपर आक्रमण कर उसकी शक्तिका नाश न किया जायगा तो इतनी निठुरता तथा रक्त-पातसे सींचा हुआ उसका राज्यभी ताशके मकानसा उड़ जायगा।

इस बारकी विजयके कारण सर फ्रान्सिस ग्रेनफेलने किचनरकी बड़ी प्रशंसा की और जब किचनरकी वीरता तथा कार्यपटुताका समाचार इङ्गलैण्ड पहुँचा उस समय उसे सी० बी०की उपाधि दी गई। उसके बाद एक वर्षतक किचनर कैरोकी पुलिसको सुशृङ्खल बनाता रहा

सन् १८८८ में जेनरल सर फ्रान्सिस ग्रेनफेलने अपना पद त्याग दिया और उसके स्थानपर किचनर ही मिश्रकी सेनाका प्रधान सेनापति (Commander in chief) बनाया गया। इस समय सर एवेलीनने किचनरकी सेवा, रणशिक्षा तथा कार्य पटुताकी बड़ी प्रशंसा की थी और यही कारण था, कि कर्नेलके पदसे वह एक प्रधान सेनापतिके पदपर पहुँचा दिया गया।

अब इतना बड़ा अधिकार पाकर किचनरने अपनी सेनाको युद्ध-शिक्षा देना गुरुतर रूपसे आरम्भ किया और थोड़े ही दिनोंमें उसने मिश्रकी सेनाको एक उत्तम और सुशृङ्खल सेना बना दिया। इसके बाद ही कितने ऐसे कारण आ पड़े, कि ब्रिटिश सरकारने डङ्गोलापर शीघ्र ही आक्रमण करनेकी आज्ञा भेज दी और किचनर भी इस भीषण समरके लिये तुरत ही तय्यार हो गया।

ग्यारहवाँ अध्याय।

डङ्गोलापर चढ़ाई।

सन् १८८६ की बारहवीं मार्चको आधी रातके समय सरदारको तार मिला, कि अकाशापर शीघ्र ही अधिकार जमा लो; क्योंकि दरवेशोंके उपद्रवके बाद वाडी हल्फा और सारासमें सदा विशृङ्खलता फैली रहती थी। इस समय किचनरकी सब सेना तय्यार थी अतः १५ वीं को बहुतसी सेना कैरोसे चल पड़ी।

इसी बीचमें कर्नल हण्टर, जो वाडी हल्फाके तीस मील दक्षिण सारासमें शासन कर रहा था १८ तारीखको अकाशापर आक्रमण करनेके लिये चल पड़ा। इस अकाशा प्रदेशमें शत्रुओंने अपना बड़ा दबदबा फैला रखा था।

पहले सारासमे आकाशातक रेल बनी हुई थी; परन्तु बहुत दिन हुए अरबोंने यह रेल तोड़ दी और उसकी काठकी पटरियां जिनपर लाइन बिछी रहती है, जलाकर भोजन पकानेके काममें ले आये और जो रेलकी लाइन थी, वह दूसरे दूसरे काममें ले आये। इसी लिये कर्नल हण्टरको नदीके किनारे किनारे पैदल ही रवाना होना पड़ा। २०मार्चको अकाशा बिना किसी प्रकारकी बाधाके घेर लिया गया और उसपर अधिकार जमा लिया गया।

इसके दो दिन बाद अर्थात् बाइस तारीखको और भी बहुतसी सेना अकाशा पहुँच गई और इस तरह सारासमे अकाशातक सेना-की एक ऐसी पंक्ति बन गई, जिसका भङ्ग कर देना शत्रुओंके लिये

बहुत ही कठिन था। सेमनाके पास, जो इन दोनों स्थानोंके बीचमें ही पड़ता है; भरपूर सेना रखकर किलेबन्दी कर दी गई और इसी तरह बादी अतीरा और तञ्जोरका प्रबन्ध भी किया गया। अब सेना धीरे धीरे दक्षिणको ओर बढ़ने लगी। इसके बाद साराससे अकाशातक युद्धोपयोगी रेल लाइन बिछा दी गई और इस रेलवे लाइनका बिछना शत्रुओंके लिये और भी भयानक हुआ।

बाद विशाराके शासनकर्त्ताने फिरकेटके पास अरबोंपर आक्रमण कर फिर उन्हें लूट लिया, इससे अरबोंको बड़ी हानि हुई। जब यह समाचार किचनरको मिला तब उसने उसी समय फिरकेटपर आक्रमण करनेके लिये मेजर बर्न मरडकको अधीनतामें एक सुदृढ़ सेना भेज दी। जिस समय यह सेना अकाशासे आठ मीलकी दूरी पर एक तङ्ग राहसे आगे बढ़ रही थी, उसी समय भेदियाने आकर समाचार दिया, कि २००० दरवेशोंकी एक सेना थोड़ी ही दूरपर युद्धके लिये तय्यार खड़ी है। तुरत ही मिश्रकी सेनाको दूसरी राह-से घूमकर आगे बढ़नेकी आज्ञा दी गई; परन्तु अभी सेना घूमने भी न पाई थी, कि दरवेश उसपर टूट पड़े और उसी सङ्कीर्ण स्थल-पर भयानक युद्ध आरम्भ हो गया। इस स्थानपर अङ्गरेजी सेनाने बड़ी बहादुरी दिखाई और वह तबतक दरवेशोंकी सेनाको रोके रही; जबतक, कि सब सेना दूसरी ओर न घूम गई। इसके बाद मेजर मरडकने भीषणतासे दरवेशोंपर आक्रमण किया और बाध्य हो, उन्हें रणस्थल छोड़ भाग जाना पड़ा।

मिश्रकी सेनाके एक छोटे दलने इस समय जो सफलता प्राप्त की, उसीसे इस बातका पता लगता था, कि वह युद्ध-विद्यामें कैसी निपुण थी।

उस्मान दिज़ारक नामक एक दूसरा दुर्दान्त मिश्रकी सीमापर कई वर्षोंसे भयानक उपद्रव मचा रहा था। अब ६ ठी जूनको

एक जबर्दस्त सेना ले यह अकाशापर आक्रमण करनेके लिये चल पड़ा; परन्तु इसमें ईश्वरने ही बाधा पहुँचाई और ऐसा उल्टा तूफ़ान चला, कि मरुभूमिकी राहसे उस्मान दिज़ारक आगे न बढ़ सका और उसे वाध्य हो लौट जाना पड़ा। यह हवा जो इस समय चली थी, आक्रमणके समय अशुभ सूचक समझी जाती है और यही कारण था, कि उस्मान दिज़ारक लौट गया।

६ ठी जूनकी सन्ध्याके समय मिश्र-सेना दरवेशोंके विरुद्ध चल पड़ी और उसने दरवेशोंके अड्डोंपर पीछेकी ओरसे आक्रमण करते हुए, इस तरह आगे बढ़ कर घेर लिया कि दरवेशोंको बाध्य होकर शस्त्र त्याग देना पड़ा। यह युद्ध दो घण्टेतक हुआ और इतने ही समयमें शत्रु भयानक हानि उठा भाग गये।

इस बारके आक्रमणमें किचनर स्वयं सेना-सञ्चालन कर रहा था और इसी कारणसे जब विजय प्राप्त हुई, तब सैनिकोंका विश्वास उसपर और भी अधिक बढ़ गया। इसके बाद ही पाँच मीलकी दूरीका कोशिहप्रान्तका स्थान घेर लिया गया और यह भी युद्ध-क्षेत्रका एक अड्डा बनाया गया।

लण्डनमें डङ्गोलापर आक्रमण करनेके लिये खास स्टीमर बन रहे थे। अतः अब किचनरको उनके पहुँचनेकी राह देखनी पड़ी और थोड़े ही दिन बाद ये पहुँच भी गये; परन्तु इस समय एक दूसरी दैवी बाधा आ पहुँची। किचनरकी सेनामें सांघातिक हैज़ा रोग फैल गया और लगभग आठ सौ मनुष्य मर गये। कोशिह-में सेनाका जो अड्डा था, उसकी भयानक हानि हुई। उसमें भी ८१८ मनुष्य परलोक सिधारे। यह रोग अगस्तमें किसी तरह बड़े उद्योगसे प्रशमित हुआ और अब सेनाकी जानमें जान आई।

अब दरवेशोंका दूसरा दल १२७ मीलकी दूरीके केरमा नामक स्थानमें था। बीचमें ३७ मील मरुभूमि पड़ती थी। २३ वीं

अगस्तको किचनरकी सेना मरुभूमि पार करती हुई, अवसारत नामक स्थानपर जा पहुँची और अवसारतपर सामान्य युद्धमें ही विजय और अधिकार प्राप्त हो गया।

इस समय फिर वही बालू उड़ानेवाला भयानक तूफान चला, जिससे अङ्गरेजी सेना फिर विपत्तिमें पड़ी। १७०० मनुष्य इस तूफानमें अग्रसर न हो सकनेके कारण बालूमें लेट गये, जिनमें ८ परलोक चल बसे और ८० भयानक रूपसे क्षतिग्रस्त हुए। सैनिक रेलवेको भी इससे बड़ी हानि पहुँची।

५ वीं सेप्टेम्बरको यह सेना अबसारतसे डुलगोकी ओर चली। अब यही अन्तिम आक्रमण था। अतः सेना तेजीसे आगे बढ़ती हुई कोडरमा जा पहुँची। दरवेशोंका अमीर, बाद बिशारा केर्माके पास छ हज़ार सेना ले युद्धके लिये तय्यार खड़ा था। उम्दुर्मनके अमीरने भी उसे अच्छी सहायता देनेकी प्रतिज्ञा की थी। जो हो, १८ सेप्टेम्बरको केर्मासे चार मीलकी दूरीके सारदक नामक स्थानपर आक्रमण किया गया। इस बार युद्ध न हुआ। यद्यपि बाद विशारा-को उम्दुर्मानसे पन्द्रह सौ मनुष्योंकी और भी सहायता मिली थी; परन्तु उसने बिना युद्ध किये ही सारदक खाली कर दिया और अपनी सेनाके साथ हफ़ीर नामक स्थानकी ओर चला गया; जहाँ पहलेसे ही उसने खाइयाँ खोद रखी थीं और मिट्टीकी दीवाल बना ली थी।

जो हो, हफीरमें भयानक युद्ध हुआ; अङ्गरेजी जहाज़ फ़्लोटिलाने गोले बरसाकर ही उसकी खाइयाँ और दीवालें नाश कर दीं। यद्यपि विशाराकी सेनासे भी तोपें चलीं और फ़्लोटिलाके कई अफसर मारे भी गये तथापि तीन घण्टोंमें ही दरवेशोंको अपने कर्म्मका प्रायश्चित भोगनेके लिये वाध्य होकर वह स्थान छोड़ देना पड़ा; क्योंकि मेजर पार्सन भी १२०० जवानोंकी सेनाके साथ

हफीरसे १२०० गज़की दूरीपर खड़ा हो गोले बरसा रहा था। इस युद्धमें विशारा भी घायल हुआ। उस्मान अज़ारककी गोली लगी और थोड़ी ही देर बाद घायल अरबोंका एक बड़ा दल हटता हुआ दिखाई दिया।

जिस समय यह युद्ध हो रहा था उस समय अङ्गरेजोंका एल-तेल स्टीमर चट्टानसे टकराकर डूब गया और बाकीके डङ्गोलाकी ओर रवाना हो गये। अब विशाराको अपनी जान बचानेकी फिक्र आ पड़ी; क्योंकि वह जानता था, कि डङ्गोलापर अवश्य ही आक्रमण होगा; परन्तु इसके अतिरिक्त विशाराके डरनेका एक कारण और भी था, उसके भोजनके सब सामान एक स्टीमरपर लदे थे, जिसके पकड़े जानेका भयानक भय था और यही कारण था, कि वह हताश हो रहा था; क्योंकि वह जानता था, कि अरबी सेना भूखों नहीं लड़ सकती। अतः वह हफीर छोड़ भाग गया और २० तारीखकी सन्ध्याको राजधानीमें जा पहुँचा तथा उसकी रक्षाका प्रबन्ध करने लगा।

२३ वीं तारीखको सरदारकी सेना डङ्गोलाकी ओर अग्रसर हुई और सवेरा होते होते शत्रुओंके सामने जा पहुँची। ज्योंही दरवेशोंने यह सेना देखी त्योंही भूखे व्याघ्रकी तरह ७०० घुड़सवार सेना इसपर टूट पड़ी, इसके पीछे विशाराकी पूरी सेना थी। जो हो, मिश्रकी सेनाने बड़े हर्षसे उसका सामना किया और अन्तमें थोड़ी ही देर बाद दरवेशोंको मालुम हो गया, कि किचनरकी सेनासे युद्ध करना कोई सामान्य कार्य नहीं है। अब दरवेशोंने डेब्बेकी ओर भागना आरम्भ किया।

इस समय अङ्गरेज़ी जहाज़ डङ्गोला पर गोले बरसा रहे थे; इसी लिये विशाराको डङ्गोलामें घुसनेका साहस न हुआ और भाग खड़ा हुआ। डङ्गोलामें ८०० कैदी तथा भोजन और

युद्धकी बहुतसी सामग्रियाँ मिलीं। इस तरह समूचा डङ्गोला प्रान्त शत्रुओंसे खाली हो गया।

इस विजयका समाचार जब इङ्गलैण्ड पहुँचा, उस समय वहाँकी प्रसन्नताका वारापार न रहा। किचनर मेजर जनरल बनाया गया। कितने ही सम्मान सूचक पदक उसे मिले और वह सदाके लिये मिस्रकी सेनाका सरदार बनाया गया। विलायतके कितने ही पत्रोंने भी किचनरके दृढ़ अध्यवसाय तथा उद्योगकी बड़ी सराहना की।

इसके बाद ही खारतूमपर आक्रमण होनेकी आज्ञा इङ्गलैण्डसे आ पहुँची।

बारहवाँ अध्याय।

मरुभूमिकी रेल।

डङ्गोलाके पतनके बाद डेब्बे, कोटी और मेरावीमें सेना स्थापित कर देनेका विचार हुआ और किचनरने माटी-की राजधानीकी ओर बढ़नेका विचार स्थिर कर लिया। इस समय उसके सामने यह विचार आ पड़ा, कि किस पथसे माटीकी राज-धानीकी ओर अग्रसर होना चाहिये। उसके सम्मुख इस समय कई पथ थे अर्थात् एक रेल-पथ कोर्गसे नदी तटके आबू अहमद नामक स्थानसे होता हुआ बेरबेर नामक स्थान तक बन सकता था,

दूसरा नमूदा मरुभूमि पार करता हुआ मेटेमेकी राहसे सुआकिन तक अथवा वादी हल्फासे सीधा मरुभूमि पार करता हुआ आबू अहमद तक तय्यार हो सकता था।

किचनरकी इच्छा इस अन्तिम रेल-पथकी ओर ही थी। उसने अपना विचार इङ्गलैण्ड लिखकर बड़े बड़े इञ्जीनियरोंसे परामर्श करना आरम्भ किया; परन्तु उन्होंने इसके विचार दोषपूर्ण, असम्भव तथा पागलोंसे बताये। जब विलायतके इञ्जीनियरोंसे यह सम्मति मिली, तब उसने अपनी इच्छाके अनुसार ही रेल-पथ बनानेकी आज्ञा दे दी।

वादी हल्फामें इसका प्रधान अड्डा बनाया गया और इसी स्थान पर एक बहुत बड़ा कारखाना खोल दिया गया तथा सारासमे कोटो तक रेलवे लाइन बनानेमें हाथ लगा दिया गया। यह कार्य बड़ा ही भयानक था, मरुभूमिमें जल मिलनेका कहीं ठिकाना न था; परन्तु किचनरने इसका भी इतना उत्तम प्रबन्ध कर दिया, कि किसीको कष्ट न हुआ, रेल बनानेके सब सामान इङ्गलैण्डसे लानेके लिये विश्वाशी गिरोर्ड नामक एक बड़ा ही उत्साही पुरुष गया, जिसकी दूरदर्शिता और अनुभवसे कोई भी पदार्थ ऐसा न था जो छूट गया हो। उसने तीन इञ्च मोटी पुस्तकमें आवश्यक पदार्थों की सूची बनाई और जन समाजके सम्मुख रेलवे सम्बन्धी बहुज्ञताका उत्कट प्रमाण रख दिया।

इस तरह यह रेल पथ बनना आरम्भ हुआ। जिस समय खारतूमपर अधिकार करनेकी आज्ञा इङ्गलैण्डसे मिली। उस समय डिसेम्बर मास था और जनवरी लगते ही यह कार्य आरम्भ हो गया। दो महीने तक थोड़ा ही काम हुआ और केवल चालीस मीलतक पटरी बिछा दी गई। यह रेलपथ केर्मातक तय्यार हुआ। इसके बाद रेल बनानेवाले मरुभूमिकी रेल बनानेकी ओर भेज दिये

गये। इस रेलके कारखानेमें २५०० मनुष्य कार्य करते थे। अभीतक यही ध्यान था, कि यह सरदारका पागलपन मात्र है और इससे किसी प्रकारका लाभ नहीं हो सकता ; परन्तु किचनर अपने विचारोंमें इतना दृढ़ था कि वह किसीकी कुछ नहीं सुनता था। इसके बाद जब जुलाईमें १२० मील रेलपथ तय्यार हो गया तब सरदारने जेनरल हण्टरको आबू अहमदसे दरवेशोंको निकाल देनेकी आज्ञा दे दी।

यह बड़ी सावधानताका कार्य था। १४८ मीलका पथ इन्हें पूरा तय करना पड़ा। राह बड़ी ही खराब और ऊँची नीची थी। यह अनुमान था, कि ६०० मनुष्योंसे अधिक दरवेश आबू अहमदमें न होंगे ; परन्तु सम्भव है, कि हरण्टके पहुँचनेके पहले ही बेरबेरसे और भी अधिक सहायता उन्हें मिल जाये। जो हो, ३६०० मनुष्योंकी सेना साथ ले हण्टर आबू अहमदकी ओर रवाना हो गया।

यह बड़ी ही भयानक यात्रा थी। इस यात्रामें ही बालूके भीतर छिप जानेका भय था। इसी लिये यह यात्रा रात्रिके समय होती थी। ६ अगस्तको हण्टर आबू अहमदसे सोलह मीलकी दूरीपर जब रह गया, तब उस समय उसे मालुम हुआ, कि बेरबेरसे दरवेशोंकी एक बहुत बड़ी सेना आबू अहमदमें दरवेशोंकी सेनासे सम्मिलित होनेके लिये आ रही है। इस लिये हण्टरको खाना पीना छोड़, तेजीसे आगे बढ़कर, उनके पहुँचनेके पहले ही आबू अहमदमें पहुँचनेकी तय्यारियाँ करनी पड़ीं। इसी लिये सात तारीखको सवेरा होनेके पहले ही मिस्रकी सेनाने आगे बढ़कर आबू अहमद नगरके चारों ओर फैले हुए गाँवोंपर आक्रमण करना आरम्भ किया। सवेरा होते ही यह समाचार फैल गया और अब भीषणतासे गोले छूटने लगे। सूडानियोंका तीन सेना दल बड़ी शीघ्रतासे शत्रुके गोलोंकी परवाह न कर गाँवोंमें घुस गया। इसमें

पचास सैनिक घोर रूपसे आहत भी हुए। थोड़ी देरतक भयानक युद्ध हुआ। इसके बाद दरवेशोंको बाध्य होकर गाँव छोड़ देना पड़ा और मिस्रकी सेनाका उसपर अधिकार हो गया। भागे हुए दरवेश बेरबेरसे आनेवाली सहायक सेनामें मिलनेके लिये भाग गये।

मरुभूमिकी राहसे जिस तरह आबू अहमद पर अधिकार जमानेका प्रबन्ध किया जा रहा था, उसी प्रकारका प्रबन्ध जलपथ द्वारा भी हो रहा था और एलतेब तथा तमाई नामक दोनों स्टीमर आबू अहमदमें सेना पहुँचानेके उद्योगमें लगे थे। जिनमें मनुष्योंके बोझसे एलतेब तो डूब गया और कई मनुष्य मारे भी गये; परन्तु आबू अहमद पर आक्रमणका बहुतसा कार्य्य इन दोनों स्टीमरोंने पूरा कर दिया।

इस समय ख़लीफ़ा भी चुपचाप नहीं बैठा था, वह भी अपने उद्योगमें लगा था। यद्यपि डङ्गोलाके पतनके कारण उम्दुर्मानमें भी भय छाया हुआ था; परन्तु खलीफा अपने साथियोंको मस्जिदमें एकत्र कर उन्हें उभाड़नेके उद्योगमें लगा हुआ था। उसने एक दिन वक्तृता देते हुए कहा, कि मादीकी आत्माने उससे स्वप्नमें मिलकर कहा है कि ब्रटिश और मिस्रकी सेना शीघ्र ही नाश हो जायगी। इसके अतिरिक्त धार्मिक भावोंका बहुत ही सुन्दर चित्र खींचते हुए उसने इस तरहसे अपनी तलवार मियानके बाहर खींची, कि उस स्थानपर तथा उसके बाहर एकत्र हुए २०००० मनुष्य एक स्वरसे उसकी जयध्वनि चिल्लाने लगे।

खलीफ़ा समझता था, मिस्रकी सेना कोर्टी और मेटेमेकी राहसे उम्दुर्मानपर आक्रमण करेगी और उसने उस्मान मजारकको अनुआ क्रियाके कूओंपर अधिकार करनेके लिये भेज दिया और वाड बिशारदको मेटेमेमें शत्रुओंको रोकनेके लिये भेज दिया। चारों

ओर दूत यह समाचार और खलीफ़ाका सन्देसा लेकर दौड़ गये। अडर्मांसे उस्मान डिगना फिर बुला लिया गया परन्तु केवल सलाह करनेके लिये; क्योंकि अतबरासे सेना हटानेकी इच्छा न थी। इसके अतिरिक्त करतूफान और दरफूरसे सेना एकत्र करनेके लिये महमूद भेजा गया जो १०००० मनुष्योंके साथ लौट आया।

इस तरह सैन्य बलसे अपनेको बलवान देख खलीफा मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ और महमूदने भी उसे विश्वास दिला दिया, कि इतनी बड़ी सेना कहीं पराजित नहीं हो सकती है। इसके बाद यह स्थिर हुआ कि, महमूदको मेटेमेपर अधिकार जमा लेना चाहिये। इसी लिये अब्दुल्लाने जालिनके सरदारको रसद आदिका प्रबन्ध करने और महमूदको सहायता पहुँचानेके लिये लिख भेजा। परन्तु जालिनके सरदारने लिख भेजा, कि इतनी बड़ी सेनाके लिये रसदका प्रबन्ध करना उसकी शक्ति सामर्थसे बाहर है; क्योंकि उसके पास इतना धन नहीं है। यह उत्तर सुनते ही खलीफ़ा क्रोधसे आग बबूला हो गया। उसने जालिनके सरदारको विद्रोही ठहराया और महमूदको आज्ञा दे दी, कि जिस तरह हो, इस अन्याय पूर्ण उत्तरका बदला लेकर अपना कार्य करे।

जब खलीफ़ाकी इस आज्ञाका समाचार तथा महमूदके आक्रमणकी बात सरदारने अपने साथियोंको सुनाई उसी समय वे समझ गये, कि अब उनका घर लूट लिया जायगा और उनकी स्त्रियाँ बेइज्जत की जायँगी। उन लोगोंने खलीफ़ाके विरुद्ध हो जाना ही उचित समझा और उस सरदारने खेदिवके पास प्रार्थना पत्र भेज उससे सहायता मांगी। यद्यपि यह कार्य उचित ही था; परन्तु यह पत्र भेजना उस सरदारके लिये काल हो गया।

सरदारका पत्र पा यद्यपि जेनरल हण्टर एक बड़ी सेना ले उसकी सहायताके लिये चला; परन्तु इसी बीचमें खलीफ़ा को यह समाचार मिल जानेके कारण उसने और भी जल्दी की और महमूद १२००० मनुष्योंकी सेना ले मेटेमेकी ओर बड़ी तेजीसे चल पड़ा। उसने राहमें ही जालिनका नाश कर दिया। कितने ही पुरुष स्त्री और बच्चे काट डाले गये। बहुत थोड़े मनुष्योंने भागकर अपनी जान बचाई और गडकुल वेलस में अङ्गरेजी सेनासे आ मिले।

जब खलीफ़ाको यह समाचार मिला कि कोशेहसे केर्मातक रेल बन चुकी है और अब मेरावी नदीकी राहसे स्टीमरोंके आवागमन की आवश्यकता न रही तो वह और भी उत्तेजित हो उठा। उसने डङ्गोलाको फिरसे अपने अधिकारमें ले आना ही स्थिर किया और डङ्गोलाका उद्धार करनेके लिये ऊँट तथा रसदका प्रबन्ध करने लगा।

इसके बाद आबू अहमदका पतन हुआ। इस पतनसे महमूद बड़ा ही विचलित हुआ। उसने समझा था, कि उस प्रान्तके अधिवासी बेरबेरमें कुछ कुछ सहायता पहुँचायँगे; परन्तु ऐसा न हुआ और उसे लाचार हो २४ वीं अगस्तको बेरबेर त्याग दक्षिणकी ओर चले जाना पड़ा। इसके बादही जेनरल हण्टरने ३५० मनुष्योंकी सेना ले बेरबेरपर अधिकार जमा लिया।

इसके बाद मेटेमेपर आक्रमण हुआ। तीन स्टीमर पहले ही रवाना कर दिये गये और इन्होंने मेटेमे पहुँचकर नदी तटसे गोले दाग वहाँकी मिट्टीका बना किला चूर्ण कर दिया। शत्रुओंने भी इस समय जी खोलकर गोले बरसाये। उन्हें विश्वास था, कि इन गोलोंकी चोटके सामने ब्रिटिश स्टीमर नहीं ठहर सकते।

इसी लिये उसने बिना सोचे बिचारे अपनी विजय घोषणा कर दी; परन्तु वास्तवमें उसकी हार हुई और महमूदके ३०० मनुष्य इस युद्धमें मारे गये।

पहली नवेम्बरको यह मरुभूमि का रेलपथ आबू अहमदतक तय्यार हो गया और इसके बाद बेरबेरसे दक्षिण अतबराकी ओर नील नदीके संगम स्थान तक रेलपथ बननेकी तय्यारियाँ होने लगीं।

यद्यपि बेरबेरपर अधिकार जमानेकी प्रवल इच्छा किचनरके हृदयमें जागरित हो रही थी; परन्तु जब तक बेरबेर तक रेल पथ न तयय्यार हो गया तब तक उसने बेरबेरपर अधिकार जमाना उचित न समझा; क्योंकि बेरबेर, कोर्टी तथा मेरावी तक रसद पहुँचाना, रेलके बिना बड़ा ही कठिन था; और वास्तवमें बात यह थी, कि यदि दरवेश किचनरकी इच्छा जान लेते तो उसके कार्यमें बड़ी ही कठिनाई उपस्थित हो जाती।

कुछ दिनोंतक महमूद उस्मान डिगनाको २००० मनुष्योंको लेकर आगे बढ़नेके लिये उत्तेजित करता रहा; परन्तु उस्मान डिगनाने खलीफ़ाका पक्ष लेकर लड़ना स्वीकार न किया। इसका एक कारण यह भी था, कि बेरबेरकी हारके कारण उस्मान डिगना और भी हताश हो रहा था और अन्तमें वह अडर्मा छोड़कर शेण्डीकी ओर चला गया।

यदि खलीफा इस समय महमूदकी सलाह मानता तो इतिहासका पृष्ठ दूसरा ही रूप धारण करता; क्योंकि महमूदने आबू अहमदसे दरवेशोंके हटते ही बेरबेरपर आक्रमण करनेका विचार किया। उस समय यह रेलपथ बेरबेरसे १५० मीलकी दूरी पर था और बेरबेरमें सहायता पहुँचाना मिस्रसेनाके लिये बड़ा ही कठिन हो जाता; परन्तु खलीफ़ाने उसकी बात न मानी; क्योंकि

इसे अपनी धारणापर दृढ़ विश्वास था और वह समझता था कि किचनर कोर्टी और मेटमेकी राहसे उम्दुर्मानपर आक्रमण करेगा इसीलिये उसने महमूदको मेटेमेका पथ रोककर बैठे रहनेकी आज्ञा दी।

इसके बाद नील नदीका जल घटने लगा और खलीफाको विश्वास हो गया, कि जबतक इसमें बाढ़ नहीं आती तबतकके लिये कोई चिन्ताकी बात नहीं है; क्योंकि थोड़े जलमें होकर स्टीमरोंका आना असम्भव है। अत: उम्दुर्मानपर आक्रमण नहीं हो सका।

नवेम्बरके अन्तमें खलीफाने अपनी सेनाकी फिर परीक्षा की और स्थान देखकर उसने निश्चय कर लिया, कि अभी आक्रमणका भय नहीं है। अत: महमूदको अब आगे बढ़कर शत्रुओंको जहाँसे वे आये हैं उधर ही ढकेल देना चाहिये।

इस जगह खलीफाने फिर भूल की, जो उसने रेलपथ पर ध्यान न दिया, न उसने उसकी तय्यारीकी शीघ्रतापर ही विचार किया। यदि वह दूरदर्शी होता तो उसी समय समझ जाता, कि रेलपथ रूपी शस्त्र उसके नाशके लिये बन रहा है और शीघ्र ही अतबरामें उसपर भयानक विपत्ति आनेवाली है।

तेरहवाँ अध्याय।

अतबराका युद्ध।

अब अपनी आक्रमणकारिणी नीतिके कारण खलीफ़ाने कटेरीमें अपनी सेनाका प्रधान अड्डा बनाया, जो उमदुर्मानके उत्तरमें है और उसने इसी स्थानसे नवीन सेना तथा रसद महमूदको भेजनेका दृढ़ निश्चय किया और तय्यारियां होने लगीं; परन्तु सरदारको दिसम्बरके पहले यह समाचार न मालूम हुआ, कि दरवेशोंकी सेना उत्तरकी ओर अग्रसर हो रही है।

अब किचनरको भी अपनी सेनाकी चिन्ता आ पड़ी; क्योंकि उसकी वह सेना जो डङ्गोलामें थी, कुछ विशेष न थी। उस सेनाके अतिरिक्त एक सैन्यदल कसालामें था। इन दोनों सैन्यदलोंके अतिरिक्त उसके पास और भी सेना थी, परन्तु वह दाखिला नामक स्थानमें तोपोंसे पूर्ण फ्लोटिला नामक जहाज़की रक्षामें नियुक्त थी; क्योंकि नील नदीमें जल घट जानेके कारण फ्लोटिलाका मेरावीमें लौट आना असम्भव हो रहा था और इसीकी रक्षाके लिये वह सेना छोड़ दी गई थी। यदि वह सेना वहांसे हटा दी जाती तो इसमें सन्देह न था कि दरवेश उसपर अधिकार जमा लेते।

इसीलिये किचनरने ३१ वीं दिसम्बरके दिन कैरोमें ब्रुटिश सेना भेजनेके लिये तार भेजा और उसमें उसने स्पष्ट लिख दिया, कि सूडानके सम्बन्धका युद्ध बेरबेरमें ही सम्भवतः होगा। लॉर्ड क्रोमरने तुरत ही ब्रुटिश सेनाके कई बटेलियन भेज दिये। इसका सेना-

पति भारतमें कीर्त्ति उपार्जन किया हुआ एक अङ्गरेज मेजर जेनरल बनाकर नियुक्त हुआ। इसके अतिरिक्त माल्टासे भी एक अँगरेज़ी सेनादल बुला लिया गया।

इस तरह १८९८ में किचनरके पास सेनाका एक सुन्दर जमाव हो गया। रेलवे लाइन भी बहुत कुछ अग्रसर हो चुकी थी और फरवरीमें जब सरदारने अपनी सेनाका निरीक्षण किया उस समय उसे अपनी विजयमें सन्देह न रह गया। अब आबू डिस नामक स्थानमें एक सेना दल स्थापित कर दिया गया और अवशिष्ट सेना आबू अहमदसे लेकर अतबारा और नील नदीके संगम तक जगह जगह पर रख दी गई।

ख़लीफ़ा भी चुपचाप न बैठा। वह भी अपने उद्योगमें लगा था। उसने अमीर यूनसको पाँच हज़ार सेनाके साथ मेटेमेमें महमूदकी सहायताके लिये भेज दिया; परन्तु महमूदने आपसके मनो-मालिन्यके कारण यूनससे किसी प्रकारकी सहायता न ली और इस लिये ख़लीफ़ाने अपनी समस्त सेना उम्दुर्मानमें लौटा ली।

इसके बाद १५ वीं फरवरीको किचनरको समाचार मिला, कि महमूद नील पारकर बेरबेरपर आक्रमण करनेके लिये अग्रसर हो रहा है। ख़लीफ़ाने उसे बीस हज़ार सेनाके साथ आगे बढ़नेकी आज्ञा दी थी। जब यह समाचार मिला, तब वह भी अपनी सेनाके साथ आगे बढ़ा।

जो हो, महमूद १२००० सेना ले शेण्डीसे आगे बढ़ा। इन बारह हज़ार सैनिकोंके अतिरिक्त उसके साथ बहुतसे मनुष्य और भी हो गये और कुल संख्या बीस हज़ारपर जा पहुँची। उसे विश्वास था, कि बेरबेरमें दो हज़ारसे अधिक शत्रु सेना नहीं है, और वह भूसीकी तरह उड़ा दी जा सकती है। जब महमूद एल् अलियब नामक स्थानमें पहुँचा; उस समय उसे मालुम हो गया,

कि रेलवे लाइनने पिछली अवस्था पलट दी है, और दाखिलामें एक जबर्दस्त सेना उसका सामना करनेके लिये तय्यार है ।

महमूद इतना जाननेपर भी आगे बढ़नेके लिये तय्यार ही था ; परन्तु इसी समय उस्मान डिगनाने उसे समझाया, कि अङ्गरेज़ी मेशीन तोपोंके सामने उसके लिये बेरबेरमें युद्ध करना कठिन हो जायगा. इस लिये मरुभूमि पारकर पूर्वकी ओरसे अतबराके पास अङ्गरेज़ी सेनापर आक्रमण करना चाहिये और इस तरह बेरबेर भी अनायास ही अधिकारमें आ जायगा। दूसरे दूसरे अमीरोंसे परामर्श करनेपर भी उस्मानका मत ही पुष्ट हुआ, इस लिये यह दल अब अतबराकी ओर ही चल पड़ा ।

महमूदको यह भी समाचार मिल चुका था, कि सरदारने अपना विचार बदल दिया है और उसकी बहुतसी सेना अतबराके पास हुदी नामक स्थानमें है। इस लिये महमूद अतबराके पास एक ऊँचे स्थानपर, जिसका नाम नखीला था जा पहुँचा। यद्यपि महमूद वहाँ जा पहुँचा ; परन्तु इस समय उस्मान डिगना और उसमें मनोमालिन्य हो गया। इधर रसद भी घटने लगी और रसद तथा भोजनके पदार्थोंके अभावसे सेना भी घटने लगी ।

जब दरवेश शेण्डीसे चले, तब उन्होंने अपनी स्त्रियाँ तथा बच्चे और कुछ रसदकी रक्षाके लिये सात सौ मनुष्योंकी एक सेना शेण्डीमें छोड़ दी। सरदारने यह समाचार पाते ही अपनी एक सेना शेण्डी भेज दी। एक छोटा युद्ध हुआ, शत्रु पराजित हुए और बहुतसे युद्धोपयोगी सामान वहाँ मिले। स्त्रियाँ तथा बच्चे उम्दुर्मानकी ओर भाग गये ।

यथासमय यह समाचार महमूदके कानोंमें भी पहुँचा और वह बड़ा ही विचलित हुआ। शेण्डी और ज़रीबाके बीच कुल उन्नीस मीलकी दूरी थी। यद्यपि यह राह कठिन और भयानक

थी ; परन्तु रेलवे लाइन बड़ी शीघ्रतासे बनती जाती थी और अब यह बर्बरोनावसे साठ मील आगे बढ़कर बेरबेरसे साठ मीलके अन्तरतक पहुँच चुकी थी।

किचनर एप्रिलमें थोड़ा और भी आगे बढ़ गया और दरवेशोंकी सेनासे पाँच मीलके अन्तरतक जा पहुँचा। इस समय अङ्गरेज़ी सेनाको गर्मीके कारण बड़ा कष्ट हो रहा था। किसी तरह कर्नल ब्राडउड घुड़सवार सेना ले आगे बढ़ा और वह ज़रीबामें बड़ी कठिनाईसे १२०० गज आगे बढ़ सका, इस स्थानपर दरवेशोंकी १५०० घुड़सवार सेना एकत्र थी। इनसे भीषण युद्ध हुआ और बड़ी कठिनतासे सत्रह मनुष्योंको हताहत कर ब्राडउडको आगे बढ़ना पड़ा।

६ ठी एप्रिलको सरदार अपनी सेनाके साथ उम्दानिया जा पहुँचा और सातवींको महमूदका सामना करनेके लिये अग्रसर हुआ। इस समय भी गर्मी जोरसे पड़ रही थी। बड़ी कठिनता से अङ्गरेजी सेना अग्रसर हो सकी। इसके बाद रात्रि हुई और अब रात्रिकी चाँदनीमें यह सेना चुपचाप आगे बढ़ने लगी और बड़े ही गुप्त भावसे महमूदके पड़ावके निकट जा पहुँची।

दूसरा दिन गुडफ्राईडे था। जब सवेरा हुआ उस समय तेरह हजार मनुष्योंने देखा, कि इस ज़रीबामें घुसना साधारण काम नहीं है; क्योंकि उस स्थानके पहले तीन मीलकी प्राचीर बनी हुई है; जिसमें गोले दगनेके स्थान बने हैं। यह प्राचीर दस फीट मोटी और लगभग बीस फीट ऊँची थी और उसके बाद खाई खोदी हुई थी। उसके पीछे फिर एक दीवार थी जिसमें गोले गोलियां चलानेके लिये छिद्र बने हुए थे। अरब भागनेके लिये भी सदा सावधान रहते हैं। इसलिये उन सबोंने पहले से ही ज़रीबाके पीछे अपने भागनेकी राह बना

रखी थी और उन लोगोंने अतबराके पीछे एक खींचनेवाला पुल भी बना रखा था।

यद्यपि इस इतनी बड़ी विशाल सेनाको देखकर दरवेशोंने कोई घबराहट न दिखाई; परन्तु महमूद अच्छी तरह जानता था, कि मिस्रकी सेनाके चंगुलसे निकल भागना कठिन है और उसने चारों ओरसे घेर लिया है।

जहाँ यह महमूदकी सेना थी, ठीक उसके सामने किचनरकी सेना अर्द्ध चन्द्राकार व्यूह बनाये खडी थी, और इस तरह इस सेना का पूरा पूरा दबाव ज़रीबा पर पड़ता था।

सवेरा होते ही दरवेशोंकी सेनापर अङ्गरेज़ी सेनासे गोले दागे जाने लगे। कुछ देरतक प्रचण्ड वेगसे गोले बरसते रहे। इसके बाद ही दरवेशोंकी सेना कुछ पीछे हटी। एक घुड़सवार रिसाला ज़रीबासे बाहर निकल इस सेनाके बायें पार्श्वकी ओर टूट पड़ा। परन्तु ज्योंही वे आगे बढ़े; त्योंही मिस्रकी सेनाके एक दलने जो उसी स्थानपर छिपा हुआ था; निकलकर इस जोरसे उनपर आक्रमण किया, कि उन्हें भाग जाना पड़ा। इसके बाद ही आठ बजे दिन तक बराबर अग्नि वर्षा होती रही और वह ज़रीबा मुर्दोंकी ढेरसे भर गया।

अब किचनरने अन्तिम आक्रमणकी आज्ञा दे दी। सेना उसी प्रकारसे, अर्द्ध चन्द्राकार व्यूहरूपमें आगे बढ़ती गई और दरवेशोंकी सेनाके व्यूहको चीरती हुई बहुत आगे बढ़ गई। किचनर गोर्डनकी हत्याका स्मरण करा अपनी सेनाको बराबर उत्साहित करता जाता था और काली गोरी सभी सेनाओंको बड़े उत्साहसे आगे बढ़ाता जाता था। शत्रुओंकी सेनासे भी इस समय घोर अग्निवर्षा हो रही थी; परन्तु ब्रटिश, सूडानीज़ और मिस्रकी सेनायें इस समय ऐसे अदम्य उत्साहसे उत्साहित हो रही थीं; कि उन्हें

अपनी प्राणोंकी ममता न मालुम होती थी और उसी अग्निवर्षा के बीच भीषणतासे अग्रसर हो रही थीं। अन्तमें जिस समय शत्रु-ओंसे केवल ५० गजकी दूरीपर यह सेनायें पहुँच गईं; उस समय एक बार मिश्रकी सेनाने भीषणतासे तोपोंकी बाढ़ दागी और अब शत्रुओंके पराजयमें किसी प्रकारका सन्देह न रह गया।

शत्रु भी इस समय चुपचाप न थे। उनकी तोपें भी लगातार गोले उगल रही थीं; परन्तु इन गोलोंकी परवाह न कर, जेनरल गेटेकरकी सेना शत्रुओंके पास जा पहुँची और उसके बाद ही अङ्गरेज़ी हाइलैण्डर सेना झाड़ियोंको पददलित करती हुई आगे जा पहुँची। दाहिनी ओरसे अपनी सेनाके साथ जेनरल हण्टर अपनी सूडानीज़ सेनाको लिये आ पहुँचा और अब यह सेना खाइयाँ पार करती, शत्रुओंकी किलेबन्दी तोड़ती शत्रुओंपर टूट पड़ी।

अब भीषण युद्ध आरम्भ हुआ, तोपोंके भीषण निनाद, गोले गोलियोंकी अग्निवर्षा तथा शस्त्रोंकी झनझनाहटसे चहुँदिशा पूर्ण हुई। अङ्गरेजी सेनाका कप्तान फिण्डले उछलकर खाईके उस पार कूद पड़ा, यहीं वह जखमी होकर गिरा; परन्तु मरते मरते उसने अपनी सेनाको अत्यन्त उत्साहित कर दिया। इस जगह दरवेशोंने बड़ी गहरी खाई खोद रखी थी, इस स्थानके युद्धमें कप्तान उर्कहार्ट आहत हुआ; परन्तु सेना इन बातोंकी पर्वाह न कर हुंकार करती हुई, खाई पार होने लगी।

महमूदने जिस स्थानपर अपनी सेना एकत्र कर रखी थी, वह स्थान कुछ ऊँचा था और उस स्थानपर उसने एक ऐसा सुरक्षित स्थान बना रखा था, जहाँ महमूद और एक हजार बन्दूकधारी सैनिक छिपे हुए थे। ज्योंही अङ्गरेजोंकी सेना आगे बढ़ी है, त्योंही उन लोगोंने गोलियोंकी एक ऐसी भयानक वर्षा की, जिससे सूडा-नियोंका दसवाँ रिसाला एकदम परलोक सिधार गया। कैप्टेन

स्टिवर्ट नामक एक साहसी योद्धाको सात गोलियाँ एक साथ लगीं और वह परलोक सिधारा। परन्तु अन्तमें कितने ही मनुष्योंकी आहुति देकर इस स्थानपर अधिकार हुआ और दरवेश धीरे धीरे पीछे हटने लगे। बगारोंकी घुड़सवार सेना दक्षिणकी ओर भाग गई और उनके साथ ही उस्मान डिगना भी भाग गया।

किचनरने इस समय खूब सुन्दर प्रबन्ध कर रखा था। उसकी इच्छा थी, कि ये अरब नील नदीकी राहसे न भागने पायें। इस लिये उसने "फ्लोटिला" नामक सैनिक जहाज़ अतबरासे थोड़ी ही दूरपर लगा रखा था; बल्कि वे अतबराके पासकी मरुभूमिसे भागें, जिसमें वे अपने घायलोंको न ले जा सकें और तोपोंसे आक्रमण करनेकी सुविधा हो। यद्यपि उस्मान डिगना बड़ी चालाकीसे भागा था; परन्तु वह भी बिना चोट खाये भाग न सका और अतबरासे निकलते ही मेजर वेन्सनकी सेनासे उसका सामना हो गया। एक गहरा युद्ध हुआ और उस्मान डिगनाके तीन सौ सिपाही हत तथा साढ़े चार सौ बन्दी हुए। वह भी जख्मी हुआ; परन्तु उसी अवस्थामें वहाँसे भाग गया।

इस तरह अतबराका यह भीषण समर समाप्त हुआ। इस युद्धमें दरवेशोंके तीन हज़ार मनुष्य मारे गये। उनके घायलोंकी संख्या न हो सकी; क्योंकि अपनी अन्तिम अवस्थामें भी वे अधीनता स्वीकार न किया चाहते थे और उन्हें तुरत ही मार देते थे; जिनकी ऐसी इच्छा प्रकट होती थी। इस युद्धमें कई सौ नीग्रो जातिके मनुष्य भी पकड़े गये थे, जो सूडानकी सेनामें सम्मिलित होनेके लिये तय्यार थे। महमूद भी पकड़ा गया और उसने बड़ी बहादुरीसे कहा,—"मुझे बन्दी होनेका तनिक भी भय नहीं है। जिस तरह मैं कैरोमें अपने मालिककी आज्ञा पालन करता था, उसी तरह आज भी सरदार ख़लीफ़ा अब्दुल्लाकी आज्ञा मैंने पालन की है।"

अङ्गरेज़ी और मिश्रकी सेनाकी मृत्यु संख्या भी कम न थी। व्रटिश सेनाके ३ अफसर मारे गये और २१ घायल हुए। दस अफसर तथा ८१ सिपाही ज़ख्मी हुए। मिश्रकी सेनाके ५ अङ्गरेज़ अफसर घायल तथा ५२ सैनिक मारे गये और ३७१ घायल हुए।

अब किचनर अपनी सेनाके साथ अबदुर नामक स्थानमें जा पहुँचा। यद्यपि गर्मीके कारण यहाँ घायलोंको बड़ा कष्ट हो रहा था; परन्तु इस विजयकी प्रसन्नतामें वे अपना कष्ट भूलसे गये थे और जिस समय इस विजयका समाचार इङ्गलेण्ड पहुँचा, उस समय वहाँके अधिवासियोंकी प्रसन्नताका भी पारावार न रहा।

सरदार १३ वीं एप्रिलको बेरबेरमें लौट आया। उस दिन बड़ी धूमधामसे नगर सजाया गया और २१ तोपोंकी सलामी दागी गई। इसके बाद एक बड़ा सैनिक जुलूस निकला। इस जुलूसमें महमूद भी था; परन्तु उसके दोनों हाथ बाँधकर उसमें जबर्दस्ती एक झण्डा थम्हा दिया गया; जिसमें अरबी भाषामें लिखा था,—"यह वही महमूद है, जिसने बेरबेरको जीतनेकी प्रतिज्ञा की थी।"

भारतियोंके उच्च विचारमें यह कार्य कदापि योग्य नहीं हो सकता और इस रोमनचालकी क्रूरता और निर्दयता तथा विजित शत्रुके ऊपर अत्याचार पश्चिमीय सभ्यताके आत्माभिमानी भी कभी आदरकी दृष्टिसे न देखेंगे। अर्नेस्टका कथन है, कि किचनरने यह काम अपनी कीर्त्तिके लिये न किया था और न उसका अर्थ विजित शत्रुपर अपना प्रभाव दिखाना ही था; बल्कि मादीके मतपर अन्धविश्वास रखनेवालोंकी श्रद्धा हटानेके लिये यह कार्य किया गया था। अस्तु

यह युद्ध अभी समाप्त न हुआ था। क्योंकि यद्यपि महमूद बन्दी हुआ था; परन्तु उसका स्वामी खलीफ़ा अब्दुल्ला अभी जीवित था और अब उसीके पकड़नेका फिर प्रबन्ध होने लगा।

चौदहवाँ अध्याय ।

उम्दुर्मानका भीषण समर ।

अतबराके इस भीषण समरमें कितने ही जीवनोंकी आहुति देकर जो विजय प्राप्त हुई, उससे समूचा इङ्गलैण्ड प्रसन्न हो उठा। लॉर्ड किचनरकी वीरता, धीरता, कार्यपटुता और सहिष्णुताने एक बार इङ्गलैण्ड ही क्यों, समस्त यूरोपको चौंका दिया; क्योंकि यह किसीको भी आशा न थी, कि मिश्रपर इस तरह ब्रटिश प्राधान्य जम जायगा और वहाँका व्यापार अटल बन जायगा। इसीलिये इस विजयका समाचार सुन यूरोपके कितने ही मित्रराष्ट्र तो प्रसन्न हो उठे; परन्तु जो ब्रटिश राज्यकी उन्नति न चाहते थे, वे ईर्ष्यासे दग्ध होने लगे और मन ही मन यह अभ्युदय देख भय भी खाने लगे।

यहाँपर एक बात और भी विचार करनेकी है। ब्रटिशदल व्यवसायी वेशमें मिश्र पहुँचा था। मिश्रपर अधिकार जमाना, मिश्रमें शासनकी नीव प्रतिष्ठित करना अथवा मिश्रपर आधिपत्य करना, उस समय बृटिश जातिका प्रकृत उद्देश्य न था; परन्तु घटना प्रवाह किस ओर बह रहा था, इस ओर थोड़ा ही ध्यान देनेसे स्पष्ट पता मिल सकता है, कि यह बनिया जाति अपने कार्यमें कैसी चतुर और इसकी कूट-नीति कैसी विलक्षण है।

जो हो, ज्योंही अतबरामें पूर्ण विजय प्राप्त हुई, त्योंही वह

आक्रमणकारिणी सेना अतबरा कैम्प, बेरबेर और अबादिया नामक स्थानोंमें स्वस्थ्य होने और उष्णतासे बचनेके लिये भेज दी गई और सरदार अब दूसरे दूसरे राजनीतिक सुधार और उद्योगमें लगा। वह रेल जो बम्निनाब तक बनकर ही रह गई थी अब आगे बढ़ाई जाने लगी और मै मास लगनेके पहले ही अबादिया तक बन गई और दो मास बाद ही बेरबेरसे होती हुई अतबरा किलेके दक्षिणी भाग तक जा पहुँची।

नीलके किनारे किनारे रेलपथका वह सिलसिला बहुत ही सुन्दर मालुम होता था, जो आबू अहमदसे अतबरा तक फैला हुआ था। वादी हल्फ़ासे बराबर रसद तथा शस्त्रास्त्रकी गाड़ियाँ जाती आती दिखाई देती थीं। इधर अङ्गरेज़ी जहाज़ी बेड़ा भी बढ़ाया जा रहा था तीन बड़े बड़े जङ्गी जहाज़ और बुला लिये गये थे जो कितनी ही सहायक सेना और तोपें लिये अतबराके विजयीको सहायता देनेके लिये आ पहुँचे थे।

किचनर स्वयं सब कार्य देखता था, इसीलिये सब कार्य घड़ीके काँटेकी चालकी भाँति ठीक ठीक सम्पन्न होते थे। असुअनसे दक्षिण किचनर ही सूडानका बादशाह हो रहा था। रेल, जहाज, सेना, काफला तार सभी कार्य इतनी दूरमें उसने ठीक करा दिये थे और सब कार्य उसकी आज्ञाके अनुसार ही होते थे। उसने डाकका टिकट भी अपना अलग ही बनवाया था और उसकी आज्ञाके विरुद्ध कोई भी व्यापारी उसके राज्यमें प्रवेश न कर सकता था। उसकी दूरदर्शिता इतनी बढ़ी चढ़ी थी, कि वह जिस मनुष्यको चुनकर जो कार्य दे देता था; वह उसे सुचारु रूपसे सम्पादन करता था और इसका सबसे बलवान कारण तो यह था, कि वह कार्य भार किसी मनुष्यको अर्पण कर आप चुप न बैठ जाता था, बल्कि प्रत्येक काममें स्वयं सम्मिलित रहता था; छोटेसे छोटे और बड़ेसे बड़े

कार्य में, सभी स्थानोंपर, वह दिखाई देता था और यही कारण था, कि उसका कोई भी कर्म्मचारी निरुद्यमी और आलसी न दिखाई देता था, तथा सभी यथा समय अपना कार्य पूरा कर देते थे। इन बातोंके अतिरिक्त उसमें एक गुण और भी था, इतना परिश्रमी, उद्योगी तथा पदाधिकारी होनेपर भी उसमें अहङ्कार नहीं था, वह अपनी पद मर्यादाके कारण किसी निम्न कर्म्मचारीसे भी कभी कठोर-भाषण अथवा उनका अपमान न करता था। सदा सबसे बन्धुसा व्यवहार करता था और यही वह विचित्र गुण है, जो सभी स्थानोंमें मनुष्यका आदर कराता है। अपने इसी गुणके कारण किचनरने अपने सब सैनिकोंके हृदयमें अपने लिये स्थान बना लिया था और वे इसे हृदयसे प्यार करते थे।

परन्तु उस ख़लीफ़ाकी इस समय क्या अवस्था थी, जिसका एक भी उद्यम किचनर सफल न होने देता था और उसका मान बराबर मर्दन किये जाता था। अतबराके सब समाचार डिगना ने उससे कहे थे और यह भयानक कहानी सुनकर वह जितना ही चकित तथा स्तम्भित हुआ था; उतना ही उत्तेजित भी हो उठा था। इस समय वह पचास हजार जवानोंकी एक सेना ले उस विचित्र मनुष्यपर आक्रमण करनेका विचार कर रहा था; जिसने न केवल उसके बहुतसे मनुष्य ही काट डाले थे, बल्कि जिसने उसके सभी विचार नष्ट कर दिये थे। उसकी बहुतसी भूमिपर अधिकार जमा लिया था और सूडानमें अपनी जड़ जमानेके साथ ही साथ उसकी जड़ उखाड़ता जाता था। इस समय अब्दुल्ला ख़लीफ़ा अपने कादर स्वभाववश अथवा यों समझ लीजिये, कि इस विजयी सेनाके भयवश कभी कभी यह भी विचारने लगता था, कि अब झमेले और कष्टमें न पड़कर जहाँके तहाँ चुपचाप बैठे रहना ही अच्छा होगा। संभव था, कि वह यह सोच विचार

कर चुपचाप बैठा भी रहता; परन्तु इधर किचनरकी तय्यारियाँ देख देख उसका हृदय बराबर काँपा करता था और वह इस अवस्थामें शान्त बैठे रहना फिर उचित न समझने लगता था।

किचनरकी ओरसे जुलाई मासके अन्ततक अतबराके किलेमें इतनी रसद भर दी गई, जो तीन मासमें भी कदापि समाप्त न हो सकती थी। जब इस कार्यसे निश्चिन्ती मिल गई तब अब दूसरे कार्यमें हाथ लगाया गया। अब सरदारने जेनरल लेविसकी अध्यक्षता में थोड़ी सेना और भी अतबरामें भेज दी। यह सेना दूसरी अगस्तको अतबरा जा पहुँची और इस सेनाके अतिरिक्त और भी बहुत सी सेनायें भिन्न भिन्न अफसरोंके साथ अतबरामें एकत्र की गईं; तथा बहुतसी मेशीन तोपें और भिन्न भिन्न प्रकारकी तोपोंकी संख्या और भी बढ़ा दी गई। सारांश यह कि मिश्रमें किचनरने अपना प्राधान्य बढ़ानेके लिये बहुतसी सेना, रसद, तोपें आदि और भी बढ़ा लीं और वह अब अतबरासे भी भीषण युद्धके लिये सब तरहसे तय्यार हो गया।

जिस तरह यह स्थलसेना बढ़ाई गई थी उसी तरह जल सेना भी बढ़ाई गई। अङ्गरेज़ी जहाज़ी बेड़ेके साथ दस जंगी जहाज़ और तीन माल ले जाने वाले स्टीमर और बढ़ाये गये। ये अन्तिम तीन स्टीमर भी युद्धोपयोगी सामानोंसे सुसज्जित थे। डूबा हुआ एल तेब भी निकाल लिया गया था और उसकी मरम्मत कर उसका नाम हफीर रख दिया गया था। अब वह भी पूरी तरह काम देनेके लिये तय्यार था। इस समय सरदारके पास ८२०० ब्रटिश १७६०० मिश्रकी सेना ४४ तोपें २० मैक्सिन तोपें स्थलपर, ४४ तोपें तथा २४ मेशिन तोपें जहाजोंपर २५०० घोड़े ८९० खच्चर ३५०० ऊँट और २३० गधे थे।

१२ वीं अगस्तको किचनर इनमेंसे बहुत सी सेना ले अतबरा

से युद्धके लिये चल पड़ा और दूसरे ही सप्ताहमें यह सेना उम्दुर्मान से ६० मील दूर बाद अहमद नामक स्थानमें जा पहुँची। यह यात्रा जल और स्थल दोनों राहोंसे हुई। २३ वीं को सरदारने अपनी समस्त सेनाकी एक बार फिर कवायद देखी। पाठकोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि, यह यात्रा उम्दुर्मानकी ओर हो रही थी।

इस समय कर्नल विङ्गेट तथा साहसी स्लैटिन पाशा दोनों ही आवश्यक समाचारोंको एकत्र करनेका जी जानसे उद्योगकर रहे थे और सभोंको यह विश्वास हो गया था कि खलीफ़ाके कृष्ण झण्डेके नीचे इस समय कमसे कम ६०००० सेना एकत्र है जो राजधानीमें या उसके पास ही कहीं रणक्षेत्र बनाया चाहती है। इस बार अब-दुल्लाने भी बड़ा उत्साह दिलाते हुए कहा था, कि जिन विदेशियोंने यहाँपदार्पणकर इस भूमिको रक्तसे अभिषिक्त किया है उनकी हड्डियाँ इसबार मैदानमें बिछा देनी चाहिये। खलीफ़ाकी यह आज्ञा और उत्साह देख कर दरवेश भी बड़े उत्साहित हो रहे थे; क्योंकि उन्हें लूटमें भरपूर माल मिलनेकी सम्भावना थी।

नदीसे केवल सात मीलके अन्तरपर रोयन नामक एक टापू है। इस टापूमें जाना बृटिश सेनाके लिये आवश्यक था। इसके बीचमें ही शाबलुकाका जल प्रपात है, जो पहाड़ियोंसे घिरा हुआ है। इसे बचानेके लिये, कि जिसमें यह राहमें न पड़ने पावे कमसे कम आठ मीलकी यात्रा इस सेनाको बाध्य होकर मरुभूमिद्वारा पार करनी पड़ती थी और इसके बाद नील नदीकी ओर घूमना पड़ता था। इस यात्रामें पीनेके जलके लिये एक एक सेना दलके साथ ऊँटपर लोहेका एक बड़ा पात्र पीनेका जल भरकर रख दिया गया था। यह काम किचनरने इसी लिये किया था, कि जिसमें सेना-की जलके लिये कष्ट न उठाना पड़े तथा बराबर यात्रा न करनी

पड़े और बीचमें विश्राम लेनेका भी अवसर मिले। खलीफ़ा यदि दूरदर्शी और उद्योगी होता तो अनायास ही इस समय आक्रमणकार किचनरको कष्ट पहुँचा सकता था। यदि नदीके किनारेके पुराने किलोंमें उस समय दरवेश छिपे होते तो स्टीमर कदापि सही सलामत उस स्थानसे नहीं निकल जा सकते थे और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि कई जहाज़ोंको नील नदीके जलमें सदाके लिये विश्राम भी करना पड़ता; परन्तु इस समय खलीफ़ाने कुछ न किया और किचनरकी सब सेना आनन्दसे रोयन टापूमें जा पहुँची।

इस यात्रामें किचनरको भी थोड़ा कष्ट उठाना पड़ा। जिस समय जफीर नामक स्टीमर अतबरासे चला, उस समय उसका पेंदा फटा और ग्रेण्डोके पास आते आते बीचमें ही वह डूब गया। बड़ी कठिनतासे उसके आरोही प्राण बचा सके।

खलीफ़ाको जल-युद्धमें भी बिल्कुल ही दूरदर्शिता न थी। उमदुर्मानमें जो ब्रटिश कैदी थे उनकी सहायतासे उसने नील नदीमें माइन बिछानेका विचार किया। इसी विचारके अनुसार दो बड़े बड़े लोहेके पीपोंमें बारूद भरी गई, उनके भीतर भरी हुई पिस्तौल घोड़े चढ़ाकर रखी गई और उसमें डोरी बाँधी गई, जिसमें समयपर उनसे काम लिया जाय। जिस समय यह पहला पीपा नदीमें डाला गया, उस समय असावधानता वश डोरी खिंच गई, बड़ा भारी धड़ाका हुआ और साथ ही साथ खलीफ़ाका इस्मा-इलिया नामक जहाज़ आरोही समेत नीलके नीलजलमें समा गया। नदीमें दूसरा पीपा छोड़नेका भार एक अमीरको दिया गया; जिसने पिस्तौल भरकर, घोड़ा चढ़ा, रस्सी बाँध पीपेके भीतर अवश्य रख दिया; परन्तु नदीमें पीपा डालते समय उसमें ऐसा छिद्र कर दिया; जिसमें बारूद गीली हो जाये और उसपर

किसी प्रकारकी आपदा न आनेके साथ ही साथ खलीफा भी सन्तुष्ट रहे। यही हुआ, उस समय खलीफ़ा अवश्य ही सन्तुष्ट हुआ; परन्तु समयपर वह गोली बारूद किसी भी उपयोगमें न आई।

२८ अगस्तको रोयनसे आठ मील दूर वादी आबिदमें किचनर आया; दूसरे ही दिन तमानिअत जा पहुँचा और ३१ को वादी सुएतीनमें जा पहुँचा। इस समय शत्रुओंकी सेना भी चल चुकी थी और नदीसे बृटिश जहाज़ोंने खेरी पहाड़ीका शत्रु पड़ाव उड़ा दिया था।

अब सब सेना एक प्रकारसे सरसे पैरतक तय्यार थी। यह निश्चित था, कि दूसरे ही दिन यह सेना खेरी पहाड़ीपर पहुँच जायगी और जबतक कि दरवेशोंकी बड़ी सेना बाधा देनेके लिये अग्रसर होगी, तबतक यह सेना वहाँसे उतर उम्दुर्मानके दरवाजे-पर जा पहुँचेगी। यह सब समाचार उसी दिन तार द्वारा विला-यत भेज दिया गया। रात्रिके समय इस पड़ावकी पूरी तरहसे रक्षाका प्रबन्ध भी कर दिया गया था।

तमानियतसे सरदार किचनरने अब्दुल्ला एल तैशीको एक पत्र लिखकर उससे कहलाया था, कि उसके बुरे विचार और क्रूरताने सूडानमें उपद्रव खड़ा कर दिया है और कितने ही मुसल्मान स्त्रियाँ तथा बच्चोंको, बिना किसी अपराधके मार डालना, प्रमाणित करता है, कि सूडानकी रक्षाके लिये उसे गद्दीसे उतार देना आवश्यक है। इसी पत्रमें उसे मुसल्मान स्त्री, बच्चे तथा उन अन्य पुरुषोंको जो युद्धमें सम्मिलित नहीं हो सकते, उस स्थानसे हटा देनेके लिये लिख दिया गया था, जिसमें उन्हें किसी प्रकारका कष्ट न हो। किचनरने इस पत्रमें साफ़ लिखा दिया था, कि यदि अकारण उनका रक्तपात होगा, तो इसका सम्पूर्ण दायित्व उसपर होगा। साथ ही यदि आत्मसमर्पण कर यह रक्तपात बन्द कर देनेकी उसकी इच्छा हो तो उसके साथ दयार्द्र व्यवहार किया जायगा।

किचनर उमदुर्मानसे केवल चार मीलकी दूरीपर था अतः यदि खलीफ़ा उत्तर देना चाहता तो अनायास ही उसका उत्तर यथासमय उसके पास पहुँच जाता; परन्तु उसने कोई उत्तर न दिया। इसमें एक कारण और भी छिपा हुआ था। खलीफ़ा इच्छा रहनेपर भी आत्मसमर्पण नहीं कर सकता था; क्योंकि उसके साथी इन विदेशियोंको सूडानमें नहीं घुसने दिया चाहते थे। यदि अब्दुल्ला आत्मसमर्पण करनेका विचार भी करता तो उसके साथी उसकी हत्याकर अपने हृदयकी दहकती हुई आग शान्त करते।

जो हो, पहली सेप्टेम्बरको युद्धके सामानोंसे सुसज्जित हो सरदारकी सेना खेरी पहाड़ीकी ओर चल पड़ी। इस समय जेनरल गेटेकरकी सेना मिश्रकी सेनाके वामपार्श्वकी रक्षा करती हुई नील नदीके किनारे किनारे जा रही थी और दाहिनी ओर जेनरल हण्टर घुड़सवार सेनाके साथ उसकी रक्षा कर रहा था। २१ वीं लैन्सर सेना पहाड़ी पर अधिकार जमानेके उत्साहमें आगे आगे बड़ी शीघ्रतासे अग्रसर हो रही थी और नील नदीकी राहसे बृटिश स्टीमर किचनरके आगमनकी सूचनामें ध्वनि करते हुए खलीफ़ा की ओर बढ़ रहे थे। जब यह सेना खेरीकी शैलमालाके उच्च भागमें पहुँची उस समय उस मादीका वह पवित्र नगर जिसने इतने मनुष्योंके रक्तसे सूडानकी भूमि सींची थी नदीके किनारे छः मील तक फैला हुआ दिखाई दिया। इस नगरके बीचो बीचमें मादी का बड़ा सफेद मकबरा बना था; जिसका गुम्बद बहुत दूरसे दिखाई देता था।

इसके बाद स्टुअर्ट वर्टलीने आगे बढ़कर नदीके किनारे वाले गाँवोंसे दरवेशोंको निकाल बाहर कर हलोफियापर अधिकार जमा लिया। यह स्थान सफेद और नीली नील के ठीक संगम स्थलके

नीचे पड़ता था। यहाँपर हाविज़र तोपोंकी एक बैटरी स्थापित कर दी गई। इसके पहले ही नदीमें स्थित जहाज़ोंपरसे गोले बरसने आरम्भ हो चुके थे और शत्रुकी ओरसे भी उनका प्रत्युत्तर आरम्भ हो गया था। यद्यपि शत्रुकी ओरसे भी तोपें दागी जा रही थीं परन्तु हाविजर तोपें तथा नदीकी स्टीमरोंकी तोपोंने ऐसी भयानक अग्निवर्षाकी धूम मचाई कि शत्रुकी तोपें कुछ न कर सकीं, नदीके करारे ढह पड़े, शहर पनाहकी दीवार नष्ट हो गई और मादीके मकबरेका गुम्बद उड़ गया।

नदीसे इसी लिये आक्रमण किया गया था, कि खलीफा अपनी सेनाके साथ मैदानमें आये और अपनी ५०००० सेनाके साथ जूझ पड़े; जिसमें वृथा ही बहुत समय और धन नष्ट न हो। यही हुआ। बड़ी भयानक लड़ाई हुई और तोपोंके धुएँसे गोरे काले बन गये।

दरवेश सेनाके मध्यमें बारह हजार बन्दूकधारी सेना थी और इतने ही अरब थे जो बर्छे और भाले लिये हुए थे। इन दोनों दलोंका सेना नायक उस्मान इजारक और उसमान शेख एद दीन था। ये दोनों ही खलीफ़ाके पुत्र थे। इसके पीछे चुने हुए २००० सिपाहियोंको शरीर रक्षकके रूपमें ले, खलीफ़ा आगे बढ़ रहा था, और इन सभोंके आगे याक़ूब तेरह हजार असिधारिणी तथा बल्लमधारिणी सेनाके साथ अग्रसर हो रहा था। बाईं ओर ५००० लड़ाके मिस्र की सेनाकी ओर बढ़ रहे थे और दाहिनी ओरसे २००० सैनिकोंके साथ खलीफ़ा शरीफ़ तथा १७०० हण्डोडुआ असभ्य जातिके पुरुषोंकी सेना थी।

ज्यों ज्यों दरवेश आगे बढ़ते गये; त्यों त्यों मिस्रका रिसाला पीछे हटता गया और छोटी पहाड़ी तथा जेबेल सुरघमके बीच उस स्थानपर जा पहुँचा जहां मिस्रकी और अङ्गरेजी सेनाका पड़ाव था। जेबेल सुरघममें ही कर्नल मार्टिनने सरदारको खलीफ़ाके

अग्रसर होनेका समाचार कहा और उसके बाद विन्सटन चर्चिलने खलीफ़ाकी सेनाका पूरा भेद बताया। यह समाचार सुन किचनरने कहा—"हम लोग पूर्ण रूपसे प्रस्तुत हैं, वे जितना शीघ्र आवें उतना ही अच्छा है।"

परन्तु दरवेशोंकी सेना उसी दिन किचनरकी सेना तक न पहुंच सकी; बल्कि उसने खोर शम्बाद नामक स्थानमें अपना पड़ाव डाल दिया। उस दिन कोई युद्ध न हुआ ; क्योंकि संध्या हो चुकी थी। अतः खलीफ़ा अपनी सेनाके साथ चुपचाप रात्रि व्यतीत करने लगा। इधर किचनरकी सेना भी विश्राम करने लगी।

किचनर समझता था, कि दरवेश रात्रिके सममय अवश्य आक्रमण करेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि यदि खलीफ़ा रात्रिके समय आक्रमण कर बैठता तो उसे बहुत कुछ सफलता होती; क्योंकि खलीफ़ा इन स्थानोंके सब भेद तथा राहोंसे पूर्ण परिचित था; परन्तु ऐसा न हुआ और दरवेशोंने रात्रिके समय कष्ट उठाना उचित न समझा ;

रात्रिके आक्रमणके भयके कारण किचनरने भी उत्तम प्रबन्ध कर रखा था। उसने अपनी सेनाके पड़ावमें रोशनीका पूरा पूरा इन्तजाम कर दिया था और जहाज़ोंसे सर्चलाइटकी किरणरेखा भी बराबर दूर दूर तक शत्रुओंका अन्वेषण कर रही थी। शत्रु इस रोशनीकी चमक न सह सकनेके कारण अल्ला अल्ला कह चिल्लाते हुए अपनी आखें मीच लेते थे; क्योंकि उन्हें भय था, कि यह रोशनी उनकी आँखे फोड़ देगी। संभव है कि इसी रोशनीके भयसे खलीफ़ाने रात्रिमें आक्रमण करना उचित न समझा हो।

कुछ भी हो। खलीफ़ाने इस समय आक्रमण न कर अपना सर्व सुन्दर अवसर खो दिया और अपने भविष्यको रसातलमें भेज दिया।

पन्द्रहवाँ अध्याय ।

भयानक युद्ध ।

इस समय खलीफा भूलपर भूल करता जाता था । एक तो उसने रात्रिके आक्रमणका ऐसा सुन्दर अवसर अपनी भूल द्वारा त्याग दिया, दूसरे उसने रात्रिके समय चुपचाप अपनी सेना उम्‌दुर्मानमें लौटा न ली । यदि वह अपनी सेना शहरमें लौटा लिये होता तो किचनरको उसे बाहर निकालनेमें बड़ी कठिनता आ पड़ती और उसी प्रकारसे बड़े व्यय और अनेक सैनिकोंकी आहुति देनेपर, शायद ही वह उम्‌दुर्मान पर विजय प्राप्त कर सकता ; क्योंकि उम्‌दुर्मान नगरके बाहर शहर पनाहकी बहुत मोटी दीवाल खींची हुई थी, जो यद्यपि पहले दिनके आक्रमणमें बहुत कुछ नष्ट भ्रष्ट हो चुकी थी, तथापि उस शहरमें अभी कितने ही ऐसे स्थान बने थे, जो गोलोंसे सेनाकी रक्षा कर सकते थे और जहाँसे दरवेशोंकी सेना अनायास ही अङ्गरेजोंकी सेना पर आक्रमण कर बहुत कुछ लाभ उठा सकती थी ; परन्तु न जाने क्या सोचकर खलीफ़ाने इन बातोंपर बिल्कुल ही ध्यान न दिया; बल्कि सवेरा होते ही दरवेशोंकी सेना "अल्लाह अल्लाह" चिल्लाती हुई, बाहर मैदानमें मिस्रकी सेनाकी ओर अग्रसर होने लगी ।

किचनरकी सेनामें अभीतक सन्नाटा छाया हुआ था, वहाँसे न तो तोपोंकी आवाज ही आती थी और न युद्धके बाजोंका ही शब्द सुन पड़ता था, मानो उसकी सेना एकदम अकर्मण्य और दुर्बल

अवस्थामें शत्रुभयसे निस्तब्ध हो रही हो। पहले दरवेशोंकी ओरसे ही तोपोंका दगना आरम्भ हुआ; परन्तु इससे सरदारकी सेनाकी विशेष हानि न हुई; अभीतक किचनरकी सेनामें सन्नाटा ही छाया था। कुछ देरतक जब दरवेशोंकी ओरसे लगातार अग्निवर्षा होती रही, उसके बाद किचनरकी गोलन्दाज़ सेनाने निशाना साधकर गोलोंकी ऐसी बाढ़ दागी, कि दरवेशोंकी सेना विचलित हो उठी। इसके बाद दरवेशोंकी सेनाका एक दल छोटी पहाड़ीपर जा चढ़ा, यहाँसे उन लोगोंने बन्दूकें दागनी आरम्भ की। इस समय मिस्रकी काली सेनाने बड़ा काम किया, वह उनके गोलियोंकी मारके भीतर ही आगे बढ़ी और शत्रुओंको लड़ाती हुई पहाड़ीके नीचे उतार लाई। भयानक युद्ध हुआ। यह जीवन-मरणका संग्राम था। अन्धाधुन्ध गोले गोलियाँ चल रही थीं, मानो आज रणचण्डीकी रक्त पिपासा अत्यन्त ही तीव्र हो गई हो। ऐसे समय कोई भी गोरी पल्टन आगे न बढ़ सकी; परन्तु काली सेना ही बढ़ी।

बगारा और दरवेशोंकी सेनाने भी बड़ी बहादुरी दिखाई। यद्यपि बृटिश सेनाके गोलोंके आगे अरबी सेनादल ढेरका ढेर नाश होता जाता था; परन्तु किसी तरह वे अपनी पंक्ति भङ्ग न होने देते थे। एक पंक्तिके नीचे गिरते ही दूसरी पंक्ति उस स्थान पर खड़ी हो जाती थी। केवल खड़ी ही न हो जाती थी, बल्कि इसी तरह आगे बढ़ती जाती थी, इस तरह दरवेशोंकी कितनी ही सेना नाश हुई; परन्तु उनका साहस न टूटा। आजका दिवस बड़ा ही भयानक दिवस था—मानो आज ही माटीके मनका अन्त होनेवाला हो। यद्यपि दरवेश गोलोंकी भीषण बाढ़के कारण बृटिश सेनाके पास न पहुँचने सकते थे; परन्तु वे पीछे भी न हटते थे। यह युद्ध नहीं, प्राणाहुति थी।

यह युद्ध सामनेकी ओर हो रहा था। खलीफ़ाकी सब सेनाका झुकाव सम्मुखकी ओर था, इसलिये मिश्रकी घुड़सवार और ऊँट-वाहिनी सेनाके दाहिने पार्श्वकी ओर बहुत कुछ कार्य करनेका अवसर मिला। उन्हें करेरीके टीलहोंपर अधिकार कर लेनेकी आज्ञा दे दी गई और जब यह सेना उन टीलहोंकी चोटीं पर पहुंची उस समय उसका सामना १५००० शत्रु सेनासे हो गया, जिसका सेनापति अलीवाद हेलू और शेख गद्दीन था। यह बड़ा ही भीषण समय आ पड़ा। अभीतक ऊँटवाहिनी सेना पीछे ही पड़ी थी, क्योंकि सब स्थान पथरीले थे। घोड़े मर जानेके कारण दो तोपें पीछे ही छोड़ देनी पड़ी थीं, और ऊँटवाहिनी सेनाका तीन दल भी पीछे ही पड़ गया था; क्योंकि दरवेशोंने एकाएक उनपर आक्रमण कर दिया था। इस समय सेना इस तरह शत्रुओंके बीचमें पड़ गई थी, कि सम्पूर्ण सेना नष्ट हो जानेका पूरा पूरा भय था; परन्तु ईश्वरकी कृपासे शत्रुओंकी सेना उस स्थानपर थी, जहाँ नील नदीमें स्थित ब्रिटिश स्टीमरोंके गोले अनायास ही आ सकते थे। यह अच्छा अवसर मिल गया, मिश्रकी सेनाकी विपन्न अवस्थामें देख उन स्टीमरोंसे अग्निवर्षा होने लगी और अब दोनों ओरकी मार न सह सकनेके कारण अलीबाद हेलु मध्यकी सेनामें जा मिला। इस तरह इस बार भी भाग्यसे मिश्रकी सेना बच गई और ऊँट सब सकुशल गांवोंमें भेज दिये गये।

अब इस सेनाके मध्य भागमें मिल जानेसे खलीफ़ाकी सेना बढ़ गई थी; परन्तु इस समय किचनरने एक चाल चली और अपनी सेनासे थोड़े सिपाही उम्दुर्मानपर अधिकार करनेके लिये भेज दिये; क्योंकि उसे समाचार मिला था, कि उम्दुर्मानमें इस समय हज़ारसे अधिक सेना नहीं है। यह भार कर्नल मार्टिनको दिया गया था और वह अपनी सेनाके साथ बचता हुआ, उसी ओर अग्रसर हो गया।

कुछ ही दूरतक ये बराबर आगे बढ़ते गये; परन्तु इनके बाद भी इन्हें अरबोंके जालमें फँसना पड़ा। जिससे बड़ी कठिनतासे प्राण बचे। अरबोंने एक ऐसी खाई खोद रखी थी; जो यद्यपि बहुत गहरी न थी; परन्तु उसमें लगातार तीन हज़ार अरब छिपे हुए बैठे थे। यह खाई जगह जगह इन लोगोंने घास-फूससे छिपा रखी थी। जब मिश्रकी सेना उस खाईसे केवल ३०० गज़की दूरीपर जा पहुँची। तब इन लोगोंको उस खाईका हाल मालुम हुआ। ऐसे धोखेकी जगहमें कई बार ब्रटिश सेनाको पड़ना पड़ा था। जो हो, ब्रटिश सेनाने इस समय बड़ी बहादुरी दिखाई और बराबर उस खाईतक बढ़ती गई, वहाँ घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें २४ मनुष्य मारे गये और लगभग पचास मनुष्योंके घायल हुए। कर्नल मार्टिनका घोड़ा भी भड़क कर गिरा; परन्तु कर्नलने उस घोड़ेको फिर उठाया और बड़ी बहादुरीसे दरवेशोंकी पँक्ति भेद करता हुआ आगे बढ़ गया। खाईके दूसरे छोरपर भी कितनी ही सेना खाईमें गिर पड़ी और वहाँ युद्धकर किसी तरह बाहर निकली।

अब कर्नलने अपनी सेनाको घोड़ेसे उतरकर वहीं ठहर जानेकी आज्ञा दी। इसके बाद दरवेशोंपर आक्रमण कर, वे खाईसे बाहर निकाले गये। उनपर गोलियोंकी बाढ़ दागी गई और फिर उसी तरह चूर्ण विचूर्ण अवस्थामें खाईमें फेंक दिये गये।

परन्तु खलीफ़ा अभीतक पकड़ा नहीं गया था और इसी लिये उमदुर्मानकी राह अभीतक साफ़ न हुई थी। अङ्गरेज़ी और मिश्रवासियोंकी मिश्रित सेना व्यूह बनाकर आगे बढ़ती जाती थी। सबसे पहले ब्रटिश सेनादल नीलके किनारे किनारे आगे बढ़ता जाता था और मैक्सवेल अपनी सेनासे दाहिने पार्श्वकी रक्षा करता हुआ आगे बढ़ रहा था। इसके बाद लुईस और मैकडोनल्डकी सेना ६०० गजकी दूरीपर मध्यभागमेंसे मरुभूमिकी पहाड़ियोंकी ओर

अग्रसर हो रही थी और उनके बाद कॉलिन्सकी रक्षित सेना, रसद तथा युद्धोपकरणकी रक्षा करती हुई अग्रसर हो रही थी।

यद्यपि यह यात्रा दक्षिणकी ओर हो रही थी; परन्तु निरापद न थी; क्योंकि शत्रुओंने जेबेल सुरघमपर अधिकार जमा लिया था और वहाँसे बराबर अग्निवर्षा कर रहे थे। अभी इस भयका समाचार मिला ही था और इसका कुछ प्रबन्ध हो ही रहा था, कि एकाएक ख़लीफ़ा अपनी काली सेनाके साथ एक पहाड़ीसे उतरकर सामने आ पहुँचा। यह सेना याकूबकी रक्षित और बगारोंकी घुड़सवार सेनासे मिल भूखे व्याघ्रकी तरह झपट पड़ी। मैकडोनल्ड तथा ऊपर कही हुई सेनाका इनसे सामना हो गया और अब भीषणतासे युद्ध आरम्भ हो गया। इस समय अङ्गरेज़ी तोपोंने बड़ा काम किया। उनके गोलोंकी मारसे शत्रु बहुत उद्योग करनेपर भी अग्रसर न हो सके और ख़लीफ़ाकी सेनाके बहुतसे सिपाही नष्ट हो गये।

अभी यह युद्ध समाप्त न हुआ था, कि पश्चिमकी ओरसे अली वाद हेलु और शेख एद दीन बीस हज़ार रक्त पिपासित सेनाके साथ आ पहुँचे और बड़ी ही निर्दयतासे मिस्रकी सेनापर टूट पड़े। मानो इसके पहले जङ्गी जहाज़ोंने उनकी जो दुर्दशा की थी, उसका बदला लेनेके लिये वे अत्यन्त व्याकुल हो रहे थे। यह आक्रमण ख़लीफ़ा और याकूबकी सेनामें मिलनेके लिये ही किया गया था। सम्भव था, कि इस बार मैकडोनल्डकी समस्त सेना नष्ट हो जाती; क्योंकि दरवेशोंकी सेना मिस्र और अङ्गरेज़ोंकी मिश्रित सेनासे सत-गुनी अधिक थी और किसी प्रकारकी सहायता मिलना भी कठिन था; क्योंकि अन्य सेनाएँ बहुत दूर प्रकृत युद्धक्षेत्रमें उलझी हुई थीं।

जो हो, आज भीषण युद्ध आरम्भ हुआ; मानो दोनों दलोंकी सेना आज ही सूडानके भाग्यका निर्णय करनेके लिये जूझ रही हो।

दोनों ओरसे तोपें दगने लगीं और ऐसा भयानक गम्भीर निनाद हुआ, कि सैनिकोंके कान बहरे हो गये और धूएँके कारण शत्रु मित्रका पहचानना कठिन हो गया। दरवेशोंकी तोपोंसे भी इसी प्रकारसे गोले बरसाये जा रहे थे। वे बड़े साहससे युद्ध कर रहे थे और प्रत्यक्ष मालुम होता था, कि माटीका धर्म्म उन्हें इतना प्रिय है, कि वे उसे प्राण रहते त्यागना नहीं चाहते। इसी लिये वे अन्तिम उपाय कर रहे थे—एक निराश और प्रचण्ड आहुतिकी तय्यारी कर रहे थे; क्योंकि उन्हें यह भी मालुम हो गया था, कि सरदार भी बृटिश सेनाके साथ इसी ओर आ रहा है। इस समय युद्धने भयानक रूप धारण किया था। विजय पराजयका निर्णय करना बहुत ही कठिन था। इधर युद्ध होनेका समाचार सुन पहले युद्ध क्षेत्रसे बहुतसी सेना इधर लौट पड़ी थी और दरवेशोंका बल बहुत बढ़ गया था; परन्तु मिश्रकी सेना भी उन्हें रगेदती हुई आ रही थी और कुछ ही देर बाद मेजर लिङ्कनकी सेना पीछेकी ओरसे आ पहुँची और उसने ऐसी पँक्ति बनाईकी दो मील स्थानतक बराबर अग्निवर्षा ही दिखाई देने लगी। इसके बाद लिङ्कनकी सेनासे बलवती होकर मिश्रकी सेनाने एक बार इतने वेगसे आक्रमण किया, कि दरवेशोंके पाँव उखड़ गये; परन्तु वे भागनेके बदले, विचलितभावसे ईश्वरका नाम ले तलवार तथा अन्यान्य शस्त्रोंसे बड़ी निर्दयता और निराशाके साथ मिश्रकी सेनापर टूट पड़े; परन्तु ख़लीफ़ाके भाग्यमें विजय बदी न थी। इतना उद्योग करनेपर भी उन्हें विजय प्राप्त न हो सकी। आगे तथा पीछे दोनों ओरके गोलोंकी चोटके कारण दरवेशोंकी सेना पराजित हुई।

मेजर हिकसमैन जिसके साथ सूडानियोंका पन्द्रहवाँ रिसाला था बड़ी बहादुरीसे लड़ा। उसने ख़लीफ़ाका झण्डा हस्तगत कर लिया और किचनरको दे आया। जो एक पहाड़ीकी चोटीसे इस

युद्धक्षेत्रकी अवस्था देखना और सैन्य साहाय्य भेजना था। जिस समय पहाड़ीकी चोटीपर वह झण्डा खोला गया, उस समय नील नदीमें स्थित अङ्गरेज़ी जहाज़ोंने समझा कि, शत्रुओंने पहाड़ीपर अधिकार जमा लिया है। तुरत ही उन जहाज़ोंसे गोले आने आरम्भ हो गये। किचनरको अब बाध्य हो, वह झण्डा गिरा देना पड़ा, नहीं तो उसके ही प्राण बचने कठिन थे। इसके बाद सङ्केत द्वारा स्टीमरके कप्तानको यह समाचार समझाया गया।

अब दरवेशोंकी सेना उम्दुर्मानकी ओर लौट पड़ी। इनके साथ ही खलीफ़ा और शेख एद दीन भी था। सरदार अपनी सेनाके साथ खोर शम्बोलकी ओर बढ़ा। यद्यपि खलीफ़ा अब्दुल्लाने बहुत कुछ आश्वासन दिया, कि वह उम्दुर्मान नगरकी रक्षा करेगा और अन्तिम समयतक इसे अपने अधिकारसे जाने न देगा; परन्तु बहुतसी सेना इस हारसे हताश होकर, दक्षिणकी ओर भाग गई और खलीफ़ाके आश्वासनपर विश्वास न कर सकी।

सम्भवत: खलीफ़ाकी सेना जिस तरह नष्ट हुई है, उस तरह कोई भी सेना इतने संकीर्ण और छोटे युद्ध स्थलमें कभी नष्ट न हुई होगी। खलीफ़ाकी सेनाके लगभग ११००० मनुष्य मारे गये और १६००० घायल हुए। ४००० सैनिक कैदी बने। नवीन शस्त्रोंकी भीषणताका इसीसे पता लगता है

परन्तु अङ्गरेज़ी और मिश्रकी संयुक्त सेनाकी हानि इनकी तुलनामें बहुत ही कम हुई। खास बृटिश डिवीजनमें २ अफसर मारे गये और पन्द्रह घायल हुए। जो सेना पँक्ति बाँधकर खड़ी थी, उसमें २५ मारे गये और १३६ घायल हुए। देशी अफसरोंमें २ अफसर मारे गये और ८ घायल हुए और सिपाहियोंमें १८ मारे गये तथा २७३ घायल हुए। सबसे भारी बृटिश सेनाकी मृत्यु-संख्या २१ वीं लैन्सर सेनाके ७१ और कैमरूनके ३१ मनुष्य मारे

गये और मैकडोनल्डके अन्तिम आक्रमणमें १११ मनुष्य मारे गये ; परन्तु दरवेशोंकी मृत्य संख्या नौ हज़ार थी और उतने ही घायल भी थे। इससे मालुम होता है, कि उनके पास शस्त्र अच्छे न थे। मैकडोनल्डकी सेनाके पास जैसी तोपें और जितने गोले थे, वैसे और उतने दरवेशोंके पास न थे। इसीसे उन्हें इस तरह अपनी आहुति देनी पड़ी। उस समय अनुमान लगाया गया था, कि मैकडोनल्डकी सेनासे १,६०,००० गोलियाँ छूटी थीं। यह संख्या समूची मिश्रित सेनाकी तृतीयांश संख्या है।

सरदारने उम्दुर्मानमें खलीफ़ाके पास अभी भी आत्मसमर्पण करनेके लिये कहला भेजा। उसने स्वयं ही शर्त्त भी लिख भेजी ; परन्तु खलीफ़ा न माना, उसने किचनरका प्रस्ताव घृणाके साथ लौटा दिया। अतः अब लाचार हो, मैक्सवेलकी सेना उम्दुर्मानकी ओर चल पड़ी। इस बार किचनर भी अपने साथियों सहित सेनाके आगे आगे चला; ज्योंही यह दल उम्दुर्मानकी पहली सड़कपर पहुँचा है ; त्यों ही प्रतिनिधिवर्गका एक दल विजेताको उम्दुर्मानकी चाभियाँ देनेके लिये आ पहुँचा। इसी समय किचनरने भी यह घोषणा कर दी, कि जो मनुष्य अपनी इच्छासे आत्मसमर्पण करेंगे, उनका प्राण न मारा जायगा। इस घोषणाका समाचार जादूकी तरह नगरमें फैल गया। उस समय लोगोंको यह जानकर कुछ आश्चर्य हुआ, कि विजेता, किसी प्रकारका अत्याचार नहीं किया चाहते; क्योंकि अभीतक जितने मनुष्योंसे उन लोगोंका पाला पड़ा था, वे विजय प्राप्त करते ही मनमाना अत्याचार और उपद्रव करने लगते थे। इसी लिये बहुतसे मनुष्योंने आत्मसमर्पण कर अधीनता स्वीकार कर ली और अपनेको मिश्र सरकारकी प्रजा समझने लगे।

यह सब अवश्य हो गया ; परन्तु अभीतक युद्धका अन्त न हुआ था ; क्योंकि युद्धक्षेत्रसे लौटे हुए बहुतसे मनुष्य अधीनता स्वीकार

करनेके पक्षमें न थे और शहरके अन्यान्य भागोंमें यही प्रचार कर रहे थे, कि आत्मसमर्पण न करना चाहिये। इसी लिये वाध्य होकर समस्त दिवस और अर्द्ध रात्रितक वहाँ भी युद्ध करना और ऐसे मनुष्योंको खोज खोजकर दण्ड देना पड़ा। दुर्भाग्यवश खुलीफ़ा वहाँसे निकल भागा और ऐल ओबीदके दक्षिण प्रान्तमें भाग गया, वहाँ वह उस सेनासे जा मिला, जो पहले भाग गई थी।

इन विजेताओंको नगरके बाहरी भागमें ही उस दिन रहना पड़ा; क्योंकि समूचा नगर गन्दा हो रहा था और उन मनुष्योंकी मृतदेहसे पूर्ण था, जो तोपके गोलोंसे परलोक सिधारे थे। जो हो, उस दिन सभोंको अन्धकारमें तथा भूमिशायी होकर रात्रि व्यतीत करनी पड़ी। इसी अवस्थामें किचनरने इस विजयका समाचार तारद्वारा इङ्गलैण्ड भिजवाया।

उम्दुर्मानके युद्धके ठीक अड़तालीस घण्टे बाद खारतूममें एक सभा हुई, उसमें सरदार, उसके साथी, अफसर और बृटिश तथा देशी सेनाओंके बहुतसे सैनिक एकत्र हुए; क्योंकि अब उस दानवी शक्तिका नाश हो चुका था; जिसने गोर्डनकी निर्दयतासे हत्या की थी, इसी लिये वास्तवमें गोर्डनके स्मारकमें ही यह सभा हुई थी। बृटिश झण्डा यूनियन जैक और मिस्रका झण्डा, दोनों साथ ही सभाभवनकी छतपर लगा दिये गये थे और मिस्रका बाजा खेदिवकी जय गा रहा था। इसी समय किचनरने एक साधारण वक्तृता दे इतने दिनोंका कार्य्य सबको समझाया। रानीकी जय मनाई गई और २१ तोपोंकी सलामी हुई। फिर गोर्डनका शोक मनाया गया।

इसके बाद एक और जघन्य कार्य्य हुआ, खुलीफ़ाने माहदीका जो मकबरा बनवाया था उसका गुम्बद पहले ही तोपके गोलोंसे उड़ा दिया गया था। अब वह कब्र भी खोद डाली गई और

मादीकी लाश नदीमें बहा दी गई। यह बड़ा ही घृणित कार्य हुआ और इसने किचनरके सम्मानमें इङ्गलैण्डमें भी कुछ बाधा पहुँचाई। यह दूसरी बार विजित शत्रु पर अपना प्रताप दिखाना हुआ—वह भी मृत पुरुषपर। यह कार्य सराहनीय नहीं कहा जा सकता। अर्नेस्टका मत है,—"यह कार्य उतना ही आवश्यक था; जितना महमूदके हाथ झण्डा देकर बाजारोंमें उसे घुमाना। यदि मादीके मतका नाश कर देना आवश्यक था तो साथ ही साथ उसका समस्त चिन्ह भी विलुप्त कर देना आवश्यक था। नहीं तो वह उन वासनाओं और विचारोंको जागरित कर देनेवाला एक तीर्थ-स्थान हो जाता, जिसके नाशके लिये इतने जीवनोंकी आहुति दी गई।"

यह कार्य समाप्त हुआ; परन्तु अभी बहुतसे काम करने बाकी थे। कर्नल ब्राडवुड भागती हुई दरवेश सेनाका पीछा करनेके लिये भेज दिया गया था और खासकर खलीफ़ाको पकड़ना या मार डालना ही इस यात्राका प्रकृत उद्देश्य था। खलीफ़ा अपनी स्त्रियोंके साथ साँढ़नीपर सवार हो, वहाँसे भागा था। इस सेनाके साथ अच्छे घुड़सवार न थे, इस लिये ब्राडउडको लौट आना पड़ा और उसके कई साथी भागती हुई सेनाका पीछा करते रहे।

सोलहवाँ अध्याय ।

सूडान विजयी ।

उमदुर्मानपर अधिकार हो जानेपर भी खलीफ़ाका दल अभी एकदम नष्ट न हो गया था और इतने पददलित होनेपर भी दरवेशोंके हृदयसे बदला लेने और इन विदेशी हस्तक्षेपकोंको निकाल बाहर करनेकी इच्छाओंका अभी नाश न हुआ था, इसीलिये एकाएक किसी गौराङ्गका घूमना बड़ा ही भयानक था और सम्भव था, कि मादीके धर्म्मोन्मत्त साथी अपनी निराशाकी निद्रासे जाग कर उस मनुष्य पर हाथ साफ़ करनेके लिये तय्यार हो जाते तो उसके सामने आ जाता। ऐसे कितने ही हत्यारे और उपद्रवी तबतक इधर उधर घूमते दिखाई देते थे। जबतक उनमेंसे कई पकड़कर गोलियोंसे मार डाले न गये। किचनर भी इसी तरह एक बार एक हत्यारेसे बचा। वह सड़कपर खड़ा हो अपने मुँहमें लगाया हुआ सिगरेट जलानेका उद्योग कर रहा था और देख रहा था कि हवाका रुख किस ओर है जिसे बचाकर वह सिगरेट जलाये, कि इतनेमें ही किसी गुप्त स्थानसे एक हत्यारा निकल पड़ा और वह चाहता ही था कि उस पर आक्रमण करे परन्तु पकड़ लिया गया।

इसी तरह सातवीं सितम्बरको अचानक ही एक घटना और भी घटी। दरवेशोंका तौफ़ीकिया नामक वह स्टीमर जो पहले गोर्डनके अधिकारमें था, दक्षिणकी ओरसे उमदुर्मानमें आ पहुँचा ; उसके

कप्तानको इस बातकी कुछ भी खबर न थी, कि उम्दुर्मानका पतन हो चुका है और उसका स्वामी अब खलीफ़ा अब्दुल्ला नहीं है। इस बातकी ओर उसका ध्यान उस समय पहुँचा जब उसे मादीका मकबरा न दिखाई दिया और उम्दुर्मान नगरपर मिश्रका झण्डा उड़ता हुआ दिखाई दिया। यह समाचार मालुम होते ही सब मल्लाह घबरा उठे उन्होंने आत्मसमर्पण किया और बड़ी शीघ्रतासे उन सबने यह समाचार अपने साथियोंके कानोंतक पहुँचा दिया। इस स्टीमरके यहां आनेका कारण यह था, कि खलीफ़ाकी आज्ञासे दो स्टीमर सुफ़ेद नील प्रान्तसे अन्न लाने गये थे। अभी फाशोदातक ही ये पहुँचे थे, कि उनपर एक काली सेनाने गोले दागे जिनका अफसर कोई गोरा था और जिनका झण्डा भी ऐसा था, कि स्टीमरवाले उसे न पहिचान सके कि किसका झण्डा है इससे तौफ़ीकियाके चालीस मनुष्य मारे गये और उसे इस आक्रमणका समाचार सुनानेके लिये लौट आना पड़ा। मल्लाहोंने जो कुछ हाल बताया उससे इस बातका पता लगाना बहुत ही कठिन था कि आक्रमणकारी बेलजियन इटालियन या फ्रेञ्च थे। यह संभव था कि वे ब्रिटिश ही हों क्योंकि झण्डेके रङ्गसे कोई भी निश्चित बात नहीं प्रमाणित होती थी।

जब सरदारने ये बातें सुनीं तब उसने इस घटनाकी सत्यता जाननी चाही और एक जहाज़पर जिसमें २००० सैनिक, तोपें तथा युद्धके सब सामान थे सवार हो घटना स्थलकी ओर चल पड़ा। तीन दिनोंकी यात्राके उपरान्त यह दल रेंग नामक स्थानमें जा पहुँचा जहाँ सोफिया नामक दूसरा जहाज़ लङ्गर डाले था। यह सोफ़िया जहाज़ तौफ़ीकियाका सहचर था और ५०० दरवेश किनारेपर ही खीमा डाले पड़े थे। सरदारका जहाज़ देख उन दरवेशोंने उसपर गोला बरसाना आरम्भ किया; जिसके उत्तरमें इधरसे भी

गोले दागे गये और वे सब अरब भयातुर हो भाग गये। सोफ़िया जहाज़ने भी भागनेका विचार किया; परन्तु कमाण्डर केवेलने निशाना साध उसकी एञ्जिनमें ऐसा गोला मारा, कि वह फट गया और सोफिया डूब गया ; परन्तु किचनरकी ऐसी इच्छा न थी। वह सोफियाको भी अपने जहाज़ी बेड़ेमें मिला लिया चाहता था। यद्यपि इस कार्यसे वह अप्रसन्न भी हुआ ; परन्तु अब कोई उपाय न था।

दस दिनकी यात्रा करने बाद किचनर अपनी सेनाके सहित फाशोदा जा पहुँचा ; क्योंकि जलकी कमी हो जानेके कारण यात्रामें बड़ी कठिनता आ पड़ी थी। जब किचनर फाशोदा पहुँचा है, तब वहाँ उसे मेजर मार्चण्ड नामक एक फ्रान्सीसी अफसर १२० सेनीगलीज़ सेनाके साथ पड़ाव डाले हुए दिखाई दिया। यह बहादुर फ्रान्सीसी अफसर ऐटलाण्टिक महासागरके किनारेकी ओरसे बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ झेलता हुआ यहाँ आ पहुँचा था। और इस तरह नील तक पहुँचकर वह किसी तरह अपना तिनरंगा झण्डा गाड़नेमें समर्थ हुआ था। किचनर यह फ्रेञ्च झण्डा उस समय न पहचान सका ; क्योंकि खेदिवके इस अतिदूर राज्यमें फ्रेञ्च सेनाका आ जाना, उसे कभी सम्भवपर नहीं मालुम होता था और इसीलिये उसने मिश्र तथा ब्रुटिशका झण्डा बड़े ठाटबाटसे उत्तोलन कर दिया। पीछे उसे मार्चण्डका हाल मालुम हुआ और इसने उसका बड़ा सम्मान किया। सम्भव था, कि यही एक घटना ब्रुटिश और फ्रान्समें युद्धका बीज बो देती ; क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं, कि यदि किचनर फशोदा न जा पहुँचता तो दरवेश अवश्य ही मारचण्डको ससैन्य कुचल डालते ; क्योंकि इसीकी सेनाने तौफ़ीकिया पर गोले बरसाये थे।

इसके बाद वहाँका सब काम कर किचनर २४ वीं सितम्बरको उमदुर्मान लौट आया और इङ्गलैण्ड जानेकी तय्यारियाँ करने लगा

इस समय जेनरल हण्टर दसवीं सुडानीज़ सेनाके साथ ब्लू नील प्रदेशमें शेख और इफ़ीर स्टीमरोंके साथ चला गया था और बाकी सेना भी स्टीमर मिलनेके साथ अतबरा किलेमें इङ्गलैण्ड वापस जानेके लिये भेज दी गई। किचनरने अनावश्यक समझ कर गेडारेफ, रोडेसे आदि स्थानोंमें कोई सेना न रखी क्योंकि कर्नल लेविस और पार्सनकी कार्य्यपटुताके कारण सभी कार्य सफलता पूर्वक हो रहे थे।

अक्टूबरके अन्तमें किचनर इङ्गलैण्ड लौट गया और उसी दिन लण्डन गजटमें यह समाचार निकला, कि शरीफ़का सम्मान उसे दिया गया। उसने अपने लिये बैरन किचनर आफ खारतूम और ऐस्पलका सम्मान सूचक पद ही स्थिर किया क्योंकि इसी स्थानने उसको इतने ऊँचे दर्जे पर पहुँचाया था। इसी दिन संध्याके समय रानी विक्टोरियाकी ओरसे उसे निमन्त्रण मिला और उसके साथ भोजन करनेके लिये बालमोरल दुर्गमें जा पहुँचा सूडानकी इस महान विजयने रानी विक्टोरियाको बहुत ही प्रसन्न कर दिया था और उसने किचनरको बहुतसी सूडानकी गत कहानियाँ सुनाईं।

अब इस सफलता और विजयका आस्वादन किचनरको मिलने लगा। वह लण्डनका शरीफ़ बना और आकसफोर्ड तथा कैम्ब्रिजके विश्व विद्यालयोंने उसे एल० एल० डी (कानून वेत्ता) की उपाधि दी। कितने ही प्रकारके भोज, स्वागत और प्रदानोंसे उसका अत्यधिक सत्कार किया गया। इस मनुष्यकी सेवाके लिये लण्डन नगरके सभी अधिवासियोंने विशेष कृतज्ञता प्रदर्शित की और जहाँतक सम्भव था वहाँतक उन लोगोंने किचनरका सम्मान किया।

जब लार्ड किचनरको लण्डनके गिल्ड हालमें शरीफ़की उपाधि और सम्मानके लिये एक बढ़िया तलवार अर्पण की गई उस

समय किचनरने भी अपने उन साथियों और सहायकोंकी बड़ी प्रशंसा की जिनकी सहायतासे वह इतने उच्च स्थान पर पहुँच सका था। उसी दिन संध्याके समय मैनशन हाउसमें एक भोजके समय विलायत के प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ लार्ड सलिस्बरीने जो उस समय प्रधान मन्त्री थे ; सरदार किचनरके गुणोंका वर्णन करते हुए कहा कि किचनरमें यह एक बेजोड़ गुण है, कि वह किसी भी जातिका हृदय अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें राजपक्षमें मिला कार्य्यशील योद्धा बना देता है और यही एक ऐसा मनुष्य दिखाई दिया है जिसने खर्च के अन्दाजेसे भी कम खर्चमें इतना बड़ा कार्य्य समाप्त कर दिया है।

किचनरने भी नम्रतासे कहा,—"आप लोगोंको यह बात भी ध्यानमें रखनी चाहिये, कि सूडानमें १७० मील विस्तीर्ण रेलवे लाइन बनानेमें भी बहुत कुछ धन स्वाहा हुआ है। यद्यपि उसके स्टेशन और मुसाफिरखाने छोटे हैं ; परन्तु उस समय हमलोगोंको वहाँ अधिक ठहरनेकी आवश्यकता भी न थी।"

इसके बाद लार्ड सैलिस्बरीने किचनरकी प्रशंसा करते हुए कहा,— "आज हमलोग एक ऐसे रणक्षेत्रके सैनिक कार्य्यपर विचार कर रहे हैं, जो परिपूर्ण हो चुका है और जो गत आठ वर्षोंके अङ्गरेज़ी इतिहासमें परिपूर्ण रूपमें दिखाई दे रहा है साथ ही यह एक ऐसा कार्य्य हुआ है, जिसका फल बहुत दूरतक फैलनेवाला और लाभदायक हुआ है। इसने वृटिश कीर्त्तिकी उज्ज्वलता बढ़ा दी है और सबसे बड़ी बात तो यह है, कि उसने वृटिश जातिका वह ऋण चुका दिया है ; जो गत तेरह वर्षोंसे उसके हृदयपर आघात पहुँचा रहा था। हम लोग उस ऋणके विषयमें विचारना भी बुरा समझते थे ; परन्तु हम लोगोंके हृदयमें उसकी गहरी स्मृति जम गई थी ; परन्तु इस सरदार और उसके बहादुर साथियोंको धन्यवाद है, जिन्होंने उसका भार हम लोगोंके हृदयसे हटा दिया।"

केम्ब्रिजमें जहाँ विश्वविद्यालयने सरदारको एल-एल डीकी उपाधि दी थी वहाँ अपनी शिक्षाकी कमी दिखाते हुए कहा, किचनर ने कहा, कि इसी कारणसे मैं अच्छी तरह सर्वसाधारणमें नहीं बोल सकता।

इसके अतिरिक्त वेल्सके राजकुमार तथा राजकुमारी आदि कितने ही पुरुषोंसे उसकी भेंट हुई और सभोंने इसका बड़ा सम्मान किया। इसी समय गोर्डनकी स्मृतिमें खारतूममें एक विद्यालय बनानेकी इच्छा किचनरने प्रकट की; क्योंकि गोर्डनका वहीं अन्त हुआ था। लार्ड किचनरने इसके लिये एक लाख पाउण्ड अर्थात पन्द्रह लाख रुपयेके खर्चका अनुमान किया था। यद्यपि उसकी इच्छा प्रकट करते ही बहुत कुछ चन्दा एकत्र हो गया था, तथापि उसे सन्देह था, कि कहीं धनकी कमीसे यह कार्य न हो सका, तो सब चन्दा लौटा देना पड़ेगा। इसी लिये वह लोगोंसे धन लेना भी उचित नहीं समझता था।

उसका यह हाल देख, उसके एक मित्रने कहा था—"यदि इसी तरह तुम्हें खारतूमके युद्ध और विजयमें भी सन्देह होता तो तुम कभी विजय नहीं प्राप्त कर सकते।" उसी समय सरदारने कहा—"मुझे उस समय बिल्कुल ही सन्देह न था; परन्तु उस समय मैं अपने ऊपर निर्भर करता था और अब मुझे ब्रटिश जातिके सर्वसाधारणकी इच्छापर निर्भर रहना पड़ता है।"

नवेम्बरके अन्तमें लार्ड किचनर और डफरिनको एडिनबरा नगरके शरीफका सम्मान मिला। इस समय किचनरने अपनी केमरून और सीफोर्थकी सेनाकी वीरता वर्णन की, जो उन्होंने अतबरा और उमदुर्मानके युद्धमें दिखाई थी।" इसी समय लार्ड रोज़बेरीने फिर कहा"—मैंने ब्रटिश इतिहासके पुराने पन्ने नष्ट कर नये पन्ने जोड़ दिये हैं।

इसी अवसरपर किचनरने गोर्डनकी स्मृतिके लिये विद्यालय बनवानेकी बात फिर उठाई और उसने कहा; कि इसमें अङ्गरेज़ शिक्षक रखकर, अङ्गरेज़ी नीतिसे ही शिक्षा देनी चाहिये तथा दरिद्र मनुष्योंकी उन सन्तानोंको जो गत तेरह वर्षोंसे दबी जा रही है, शिक्षा देनी चाहिये। इसलिये वह एक लाख पाउण्डका चन्दा किया चाहता है और इसके लिये उसने स्काटलैण्डके अधिवासियोंसे बड़े ही नम्र शब्दोंमें कहा कि उन्हें गोर्डनका स्मरण सदा बनाये रखना चाहिये। उसी समय बीस हजार पाउण्डका चन्दा हो गया।

यद्यपि इस समय किचनरकी चारों ओरसे प्रशंसा हो रही थी; परन्तु साथ ही उसके उन कार्योंपर टीका टिप्पिणी भी की जा रही थी जो उसने सूडानपर पुनः अधिकार जमानेके समय किये थे। मिस्टर वेनेट नामक मनुष्यने "काण्टेम्पोरेरी रिव्यू"में उसके कार्यों-पर टीका टिप्पिणी करते हुए उसे दोषी ठहराया था। इसमें लॉर्ड किचनरने लॉर्ड क्रोमरके पास जो पत्र भेजा था वह भी छपा हुआ था। निम्नलिखित उत्तरोंपर ध्यान देनेसे ही पता लगेगा, कि किचनरपर कैसे कैसे अपराध लगाये गये थे और उनका क्या उत्तर दिया गया था।

सरदारने उत्तर देते हुए लिखा था—

"मैं नहीं समझता हूँ कि मिस्टर वेनेट अपने विचारोंकी व्याख्या पार्लियामेण्टमें करेंगे और यदि वे ऐसा करें तो अपने ऊपर लगाये हुए इन अभियोगोंको मैं बिल्कुल ही इनकार करता हूँ :—

"मैंने आज्ञा दी, या अन्य रीतिसे लोगोंपर यह प्रकट किया, कि घायल दरवेश भी मार डाले जायें।"

"मेरी अधीन सेनाओंने, चाहे वह ब्रटिश, मिश्रकी अथवा सूडानकी कोई भी हों, निर्दयतासे शस्त्रहीन उन दरवेशोंको

मारा या घायल किया, जबकि वे किसी प्रकारकी हानि नहीं पहुँचा सकते थे।

"उम्‌दुर्मानपर अधिकार होने बाद तीन दिनों तक वह लूटा गया था।"

"जब हम लोग तेजीसे उम्‌दुर्मानकी ओर अग्रसर हो रहे थे, तब युद्धके जहाज़ोंपरसे उम्‌दुर्मान नगरके उन अधिवासियोंपर गोला दागा गया था, जो भाग रहे थे।"

"परन्तु मैं कह सकता हूँ, कि मुहम्मद अहमदके मकबरेके सम्बन्धमें जो कार्य किया गया है, वह राजनीतिक विचारोंके अनुसार खूब सोच समझकर किया गया है।"

इन बातोंपर ध्यान देनेसे ही पाठकोंको पता मिल सकता है, कि उसपर कैसे अपराध लगाये गये थे, घायल दरवेशोंको मारनेका प्रश्न बड़ी विचित्रतासे हुआ और अतबराके युद्धमें इसका बहुत थोड़ा ही वर्णन मिलता है। इसके भीतर एक बात और भी थी—मादी अर्थात् दरवेशोंका मत यही है, कि इस मतके भक्तोंको लड़ते हुए ही मरना चाहिये। इसीलिये एक घायल सिपाही भी जबतक उसके दममें दम है, अपने शत्रुपर आक्रमण करनेके लिये तय्यार रहता है। उनके इन गुणोंके कारण किचनरके सिपाही उनका बड़ा आदर करते थे।"

अतबरामें किचनरने इन घायलोंके लिये पहले ही आज्ञा दे रखी थी, कि जिन्हें स्थानकी आवश्यकता हो, उन्हें स्थान दिया जाये। यद्यपि यह आज्ञा उम्‌दुर्मानमें नहीं दी गई थी; परन्तु इसके विरुद्ध भी कोई आज्ञा न दी गई थी और इसीलिये सरदारने दरवेशोंके लिये एक अस्पताल ब्रटिश खीमेके पास ही बनवाया था और इसीलिये कई दिनों तक सिपाही उन दरवेशोंको लाकर उस अस्पतालमें रखते थे, जो स्वयं आनेमें अशक्त थे।

लूटके सम्बन्धमें सरदारने एकदम मनाही कर दी थी। यह खलीफ़ाका दोष था जिसने इतनी अधिक सेना चारों ओरसे बुला ली थी, कि वह उन्हे निवासस्थान न दे सका था और इसीलिये यह लूट मची थी।

अब यदि उमदुर्मानपर अन्तिम समय तक गोले बरसाये गये तो उसका प्रधान कारण यही था, कि खलीफ़ाकी सेना नगरमें भाग आई थी और यदि उन पर गोले न बरसाये जाते तो वे अधिवासियोंके ऊपरका अत्याचार और लूट मार कदापि न बन्द करते ; क्योंकि यही उनकी जीविका थी और इसीलिये वे लड़ते थे।

कुछ भी हो इन अभियोगोंके कारण किचनरका कुछ भी न बिगड़ा और इङ्गलैण्डमें गली गली उसका सम्मान हुआ। अस्तु अब किचनरने फिर सूडान लौटनेका विचार किया ; क्योंकि अभी वहाँ बहुतसे कार्य बाकी थे और वह जानना चाहता था कि तेरह वर्षों तक परिश्रम करके उसने जिस तरह उस देशमें अधिकार जमानेके साथही साथ सुशृङ्खलता फैलाई है, उसका क्या फल हो रहा है।

सूडानके प्रधान शासन कर्त्ता (राज प्रतिनिधि) के रूपमें किचनर कैरो लौट आया। यद्यपि उसने जिस विद्यालयके लिये ब्रटिश प्रजाके सम्मुख निवेदन किया था, उसका पूरा पूरा चन्दा अभी तक न आ गया था ; तथापि उसे विश्वास था कि गोर्डन के स्मारकके लिये ब्रटिश प्रजा अपनी थैलियां खोलनेसे मुँह न मोड़ेगी और इसीलिये वह पूरा चन्दा एकत्र करनेके पहलेही वहांसे चला आया।

५ जनवरी १८९९ को वह लार्ड क्रोमरके पास खारतूममें जा पहुंचा ; और उसी दिन विद्यालयकी नीव बड़े ठाटसे पड़ गई। इस समय पुराना खारतूम नगर फिर उन्नति कर रहा था, उसकी

पुरानी इमारतें फिरसे उत्तमता पूर्वक बन रही थीं और मालुम होता था, कि भविष्यके लिये वह एक बड़ी ही लाभदायक नगरी हो जायगी।

खलीफ़ा या मादीके मतका अभी अन्त न हुआ था इसलिये किचनरका चित्त भी अभी शान्त न था। वह चाहता था कि इस निर्दय मतका सदाके लिये अन्त हो जाये। जिस समय खलीफ़ा चुपचाप उम्दुर्मानसे भागा; उस समय वह बड़ी कठिनतासे भाग सका; क्योंकि पीछा करनेवाले उसके कुछ साथी पकड़ गये। इस समय भी खलीफ़ाके साथ उसके मित्रोंकी कमी न थी तथा पलातक, घायल और उसकी सेना तथा कितने ही अन्य मनुष्योंने मिल कर उसकी संख्या लगभग तीस हजारके पहुँचा दी थी। ये सब एल ओबीदकी ओर जा रहे थे. जहां दरवेशोंकी कुछ सेना पहलेसे भी उपस्थित थी।

जनवरीमें ही सरदारने कर्नल वाल्टर किचनरकी अधीनतामें खलीफ़ाको पकड़नेके लिये एक सेना भेज दी। यह सेना हजार मनुष्योंसे अधिककी न थी। बड़ी कठिन राहोंको पार करता हुआ वाल्टर किचनर अगेला जा पहुँचा और वहाँ उसे भागते हुए दरवेशोंका एक पड़ाव मिला। पता लगानेपर उसे मालुम हुआ कि इस समय यहाँ खलीफ़ाकी लगभग नौ हजार सेना है। उसी समय वाल्टरके मित्रोंने वहांसे हट जानेकी उसे सम्मति दी, नहीं तो उसकी अवस्था भी हिक्सपाशा और गोर्डनके समान ही होती जो उसी प्रदेशोंमें दरवेशोंद्वारा कालके गालमें गये थे।

इसके बाद कई मास तक कोई वर्णन योग्य सामरिक घटना न घटी। यद्यपि दोनों नीलके प्रान्तमें दरवेशोंका कुछ उपद्रव दिखाई दिया था; परन्तु वह फिर तुरत ही शान्त हो जाता था।

१८९९के जून मासमें किचनर फिर इङ्गलैण्ड चला गया। एक दिन जब वह हाउस आफ कामन्समें बैठा था; उस समय उसने

मिस्टर वालफोरको यह प्रस्ताव करते सुना कि किचनरने सूडान में जो कार्य किया है; उसके लिये उसे तीस हजार पाउण्ड पुरस्कार स्वरूप मिलने चाहिये।

इसके बाद बहुत थोड़े दिनोंतक किचनर इङ्गलैण्डमें रहा; क्योंकि अगस्तमें वह फिर लौट आया और यहाँ आकर उसने अतबराका वह लोहेका पुल खोला जो एक हजार फ़ीट लम्बा बनकर तय्यार हुआ था।

इस समय कम्दुर्फान प्रदेशमें खलीफ़ा फिर उत्पात मचा रहा था; इस लिये यह आवश्यक था, कि उसे पकड़ लिया जाये या सदाके लिये रसातलमें भेज दिया जाये। उसका प्रधान अड्डा उस समय जेबेल गेटोर नामक स्थानमें था। सर विङ्गेट सात हजार मनुष्योंको सेना ले उसका पीछा करनेके लिये चला; परन्तु खलीफ़ा ने मरुभूमिके ऐसे स्थानमें डेरा डाला था, कि उसका वहाँ पहुँचना असम्भव हो गया और उसे वाध्य होकर लौट आना पड़ा।

नवेम्बरमें घटना प्रवाह दूसरी ही ओर घूम गया। किचनरको यह समाचार मिला, कि खलीफ़ा उम्दुर्मानका पुनरुद्धार करनेके लिये अग्रसर हो रहा है। इसके कुछ दिन बाद ही अहमद फेदील अव्वा टापूमें आ पहुँचा। यहीं उस समय खलीफ़ा भी था। यह समाचार करोमें भी पहुँचा और वहाँसे फिर विङ्गेटको चार हजार सेनाके साथ अग्रसर होनेकी आज्ञा मिली।

यह सेना फाशी शोया नामक स्थानसे २१ वीं नवेम्बरको अग्रसर हुई और अड़तालीस घण्टेके भीतर ही इसने आबू अदेल नामक स्थानमें इस वेगसे अहमद फेदीलकी सेनापर आक्रमण किया कि सब सेना भाग खड़ी हुई और अहमद फेदीलको प्राण बचानेके लिये खलीफ़ाकी सेनामें भाग जाना पड़ा। विन्गेट बराबर पीछा

करता हो गया और अन्तमें २४ नवेम्बरको खलीफ़ाके पड़ावके पास जाकर भीषण वेगसे उसपर अग्निवर्षा करने लगा। खलीफ़ा इस बार समझ गया, कि अब प्राण बचना कठिन है। इसी लिये उसने एक दीर्घ निश्वास लेते हुए कहा,—"ईश्वरकी ऐसी ही इच्छा है।"

इस बार भी युद्ध हुआ और खलीफ़ा तथा उसके दोनों पुत्र, तथा कितने ही अमीर इस युद्धमें मारे गये। बाकी अमीर तथा सेनाके ३००० मनुष्य तथा स्त्री और बच्चोंने आत्मसमर्पण किया और इस तरह सूडानका यह उपद्रव शान्त हुआ।

यद्यपि किचनर यह कार्य समाप्त कर चुका था; परन्तु अफ्रिका में अभी उसके लिये बहुत कुछ कार्य बाकी थे और यह कार्य आफ्रिकाके बहुत दूरके प्रदेशमें थे; जहाँकी भूमि उसे आह्वान कर रही थी।

१८ वीं डिसेम्बरको सरदार खारतूममें ही था, कि एकाएक उसे तारसे समाचार मिला कि लार्ड राबर्टस्के साथ उसे केपटाउन नामक स्थानमें जाना पड़ेगा। दक्षिण अफ्रिकामें इस समय भयानक उपद्रव मचा हुआ था। अत: किचनरको जब यह समाचार मिला, तब वह दक्षिण अफ्रिकाकी ओर यात्रा करनेके लिये तय्यार हो गया।

सत्रहवाँ अध्याय ।

लॉर्ड रॉबर्टसका साथी ।

सन् १६५२ ईस्वीमें ही हालैण्डके अधिवासी डच जातिके मनुष्य दक्षिण आफ्रिका प्रान्तके केप आफ गुड होपमें जा बसे थे और धीरे धीरे इन सभोंने उस स्थानपर अपना खूब प्रभाव फैला रखा था। इसके बाद अट्ठारवीं शताब्दीमें जबकि वह उपनिवेश कुछ उन्नत अवस्थामें जा पहुँचा, तब कितनी ही घटनायें ऐसी आ घटीं, कि वह ब्रुटिश राज्यके अधिकारमें आ गया। ये डच जातिके अधिवासी जो बोयर कहलाते थे, कभी भी बृटिश शासनमें शान्त न रहते थे और वास्तवमें बृटिश सरकारके लाखों स्टर्लिङ्ग देनेपर भी वे ३५००० दासोंको मुक्त नहीं किया चाहते थे और न यह दासत्व प्रथा ही उठा देना चाहते थे। अन्तमें इस बोयर जातिने दो प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किये। इनमें एकका नाम ट्रान्सवाल और दूसरेका ऑरेञ्ज फ्री स्टेट रखा गया। पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि ये दोनों ही राज्य दक्षिण आफ्रिकामें हैं। अन्तमें १८५४ में ब्रुटिश सरकारने भी इन्हें स्वतन्त्र उपनिवेश मान लिया।

इसके बाद लगभग तीस वर्षोंमें दक्षिण आफ्रिकामें ब्रुटिश राज्यके अधीनस्थ प्रदेश बहुत कुछ बढ़ गये, बल्कि यों समझ लेना चाहिये, कि ब्रुटिश शासनके अधीनस्थ प्रदेशोंसे बोयरोंके दोनों प्रदेश घिर गये। सन् १८८० में इन प्रतियोगी उपनिवेशोंमें इतनी ईर्षा बढ़ गई—वास्तवमें इसमें दोनों ओरका ही दोष था, कि

बृटेन और ट्रान्सवालमें झगड़ा खड़ा हो गया। मजूबा पहाड़ीके पास कई बार युद्ध भी हुआ और अन्तमें एक असन्तोष जनक सन्धि हुई ; जिससे यह युद्ध समाप्त हुआ। इसके बाद जब ट्रान्सवालकी खानोंसे सोना निकलने लगा तब ब्रुटिश तथा अन्य कई युरोपीय जातिके मनुष्य अपना अपना पेट भरनेके लिये वहाँ और भी जा पहुँचे और बोयर भी अपने नाना प्रकारके व्यवहारोंसे उनका क्रोध बढ़ाते गये। परिणाम यह हुआ, कि विदेशियोंने १८८६ ई० में वहाँ विद्रोह मचा दिया ; परन्तु इनके नेता पकड़कर कैद कर दिये गये और बड़ी कठिनतासे यह विद्रोह शान्त हुआ। इसके बाद बातें बढ़ती ही गईं, घटनाओंका प्रवाह धीरे धीरे ऐसा बदलता गया, कि यह विद्वेषाग्नि भी दिनों दिन बढ़ती गई और अन्तमें बोयरोंने ब्रुटिश शासनके विरुद्ध फिर शस्त्र धारण किया। यदि यह युद्ध अन्त तक चलता तो बड़ी ही भयानक अवस्था आ पहुँचती ; क्योंकि इन बोयरोंकी संख्या कुल ३४०००० ही थी। इस छोटी संख्यामें वह कबतक युद्ध कर सकते और अन्तमें उस जातिका नाश हो जाता। परन्तु बोयरोंने अपनी जो वीरता दिखाई, उससे उन सबने प्रमाणित कर दिया कि, संसारकी लड़ाका जातियोंमें वह भी किसीसे दुर्बल नहीं है और इसके लिये वे वर्षोंसे अपनी सेना, युद्ध परीक्षा तथा शस्त्रास्त्रोंका पूरा पूरा प्रबन्ध कर रहे थे ; क्योंकि वे जानते थे, कि एक बार भयानक युद्ध होगा और इसमें उन्हें भीषण और अधिक संख्यक आहुतियाँ देनी पड़ेंगी ; क्योंकि वे जो स्वतन्त्रता चाहते थे, वह सहजमें ही उन्हें न मिल सकती थी।

१८९९ की नवीं अक्टूबरको यह लड़ाई छिड़ गई। इस समय ट्रान्सवालमें और उसके पास बहुत ही थोड़ी ब्रुटिश सेना थी और ६००० मील दूर स्थित इङ्गलैण्डसे शीघ्र सेनाका आ जाना कदापि सम्भव न था।

इसीलिये २४ घण्टोंके भीतर ही बोयरोंने किम्बरली और मेफ-गिङ्ग नामक केप आफ गुडहोप उपनिवेशके दोनों प्रधान नगर घेर लिये। नेटालपर भी आक्रमण हुआ। यद्यपि डण्डीमें ब्रटिश सेनाने बोयरोंको पराजित किया; परन्तु ब्रटिश सेनाके भी ४७४ मनुष्य हताहत हुए। इलैण्डसागेट नामक स्थानमें दूसरा युद्ध हुआ : इसमें यद्यपि जेनरल फ्रेञ्चने सफलता प्राप्त की; परन्तु निकोल्सन्स नेक नामक स्थानमें १२०० मनुष्योंकी ब्रटिश सेना एकदम काट डाली गई।

इसके बाद सर जार्ज ह्वाइट अपनी सेनाके साथ आक्रमण कारियोंपर टूट पड़े; परन्तु दस हजार सेना साथमें रहने पर भी बोयरोंने इन्हें भगा दिया। इसके बाद दूसरी नवेम्बरको बोयरोंने लेडीस्मिथ नामक स्थानपर घोर आक्रमण किया और यदि अन्तिम समयमें कैप्टेन लम्बटन ४७ इञ्ची तोपोंका रिसाला लेकर न आ पहुँचता तो इसमें कोई सन्देह न था, कि जेनरल ह्वाइट और उसकी सेनाको अवश्य ही आत्मसमर्पण करना पड़ता।

जेनरल बुलर तीसवीं अक्टूबरको केप आफ गुडहोपमें जा पहुँचा। इसके पास चालीस हज़ार मनुष्योंकी सेना और ११४ तोपें थीं। यह बुलर एक विशाल सेना दल लेकर लेडी स्मिथके उद्धारके लिये चला। लार्ड मेथुअन दूसरी ओरसे किम्बर्लीके लिये और जेनरल फ्रेंच कोल्सवर्गके लिये रवाना हुए। इस समय जेनरल गेटेकर भी वहीं था और वह स्टार्मवर्गकी ओर रवाना किया गया।

जिस विशाल सेनादलके साथ ये चारों जेनरल अग्रसर हुए थे उससे किसीको भी सन्देह न रह गया था और सभी यह समझते थे, कि इस बारका "क्रिस्टमस" विजयके आनन्दमें बड़ी ही प्रसन्नतासे बीतेगा। परन्तु घटनाओंका प्रवाह ऐसा उलटा बहा, कि

विजय मिलना दूर रहा और आनन्दके बदले निरानन्दकी काली घटा ब्रटिश सैन्यपर छा गई। लार्ड मेथूनने बेलमण्ट और ग्रेस्पेमन नामक स्थानमें विजय तो प्राप्त की; परन्तु मेगटसंफाण्टेन नामक स्थानमें ११ वीं दिसम्बरको उसकी हाइलैण्डर सेना एक दम काट डाली गई और उसका विशेष बढ़ना वहीं रुक गया। एक रात्रिमें जब जेनरल गैटेकरने स्टार्म्बगंपर आक्रमण किया; तब उसके ७२८ मनुष्य मार डाले गये, दो तोपें छीन ली गईं और अब उसका आगे बढ़ना भी बन्द हुआ। नेटालमें जब जेनरल बुलर टुगेला नदी पार करनेका उद्योग कर रहा था; तब उसपर इतने प्रचण्डवेगसे आक्रमण हुआ, कि कोलेन्सोंके पास पन्द्रहवीं दिसम्बरको उसके ११०० मनुष्य हताहत हुए और चौदह तोपें छिन गईं।

इस तरह विपरीत घटनाओंने ब्रटिश सेनापर इतना और ऐसा प्रभाव जमाया, कि उन्हें आश्चर्य चकित हो जाना पड़ा और इन ब्रटिश सैनिकोंको मान लेना पड़ा, कि यद्यपि बोयर युद्ध विद्यामें पूर्ण शिक्षित नहीं हैं; तथापि उनकी बहादुरी और युद्ध-शक्ति प्रशंसनीय है। उनकी घुड़सवार सेना भी बहुत ही उत्तम और ऐसे मनुष्यके अधीन थी, जो उस स्थानकी इञ्च इञ्च भूमिका हाल जानते थे। उनकी शीघ्रता और रणदक्षता प्रशंसनीय थी और सबसे बड़ी बात तो यह थी, कि जो सैनिक नहीं थे, जिन्होंने युद्धकी कुछ भी शिक्षा न पाई थी; वे भी उनकी सहायतामें आत्मबलि देनेके लिये तय्यार थे।

१६ वीं दिसम्बरको इङ्गलैण्डमें यह निश्चित हुआ था, कि एक लाखमनुष्योंकी सेना लार्ड राबर्ट्सकी अधीनतामें आफ्रिका भेजी जाय; क्योंकि १८५७ के भारतीय गदरमें यह खूब नाम कमा चुका था। उसकी इस समय इतनी अवस्था भी हो चुकी थी, कि इतना बड़ा भार उठा सकता। इसी लिये जब उसका नाम भेजनेवालोंमें लिया

गया तब ब्रुटिश जातिके सभी मनुष्य प्रसन्न हो उठे। साथ ही साथ जब यह प्रचारित हुआ, कि लार्ड राबर्टसके साथ किचनर भी जायगा; उस समय ब्रुटिश जनताकी प्रसन्नताका वारापार न रहा; क्योंकि इसने सूडानमें अपना कार्य्य दिखा; थोड़े ही दिन पहले बड़ा नाम कमाया था।

इस समय किचनरको जो पद मिला था, वह लार्ड राबर्ट्सके पदसे नीचा था, इस लिये सबको सन्देह था, कि किचनर और राबर्ट्समें न पटेगी; क्योंकि सूडानमें किचनर उच्चपदपर कार्य्य कर चुका था। लार्ड राबर्ट्स किचनरको बहुत मानता था और कई बार उसकी प्रशंसा भी कर चुका था। जब बृटिश सर्वसाधारणका यह सन्देह किचनरको मालुम हुआ, तब उसने स्पष्ट ही कह दिया, कि, मैं लार्ड राबर्ट्सका जूता पोंछनेके लिये भी तय्यार हूँ।

जो हो, सेना भेजनेकी तय्यारियाँ होने लगीं। इस सेनामें अङ्गरेज, वेल्सके अधिवासी, स्काच (स्काटलैण्डके अधिवासी) सभी प्रकारके मनुष्य लिये गये। इनके अतिरिक्त बारह हज़ार आस्ट्रेलियन और कनेडियन सेना भी इनके साथ हुई। बहुतसी भारतीय सेना भी इस यात्रामें सम्मिलित की गई और इस तरह यह कराल सेनादल बोयरोंको पददलित करनेके लिये चल पड़ा।

लार्ड राबर्ट्स तेईसवीं दिसम्बरको इङ्गलैण्डसे चला और मिश्रसे लौटता हुआ किचनर जिब्राल्टरमें उसके पास जा पहुँचा। सन् १९०० की दसवीं जनवरीको वे केप आफ गुडहोप जा पहुँचे। लार्ड राबर्ट्स सैन्यपरिचालन विद्या तथा कूटनीतिमें बड़ा ही प्रवीण था और इस समय जो कार्य उसके हाथमें दिया गया था, उसमें अपनी प्रतिभा दिखलानेका उसे अच्छा अवसर मिल सकता था; परन्तु कोई भी कार्य बिना किचनरकी सहायताके वह नहीं कर सकता था; क्योंकि उसके समस्त कार्यों का, सब पदाधिकारियों अथवा यों

समझ लेना चाहिये, कि उसके समूचे कर्म्मचारियोंका मालिक किचनर ही हो रहा था। अब यह बात भी ध्यान देने योग्य है, कि इन दोनोंकी प्रकृतिमें अन्तर रहनेपर भी किस तरह ये दोनों एक साथ मिलकर कार्य्य कर सके।

लार्ड राबर्ट्सने मोडर नदीके पाससे बारहवीं फरवरीको आगे बढ़ना आरम्भ किया और इसके तीसरे ही दिन एक घुड़सवार सेनाको लेकर जेनरल फ्रेञ्चने केम्बर्लीपर आक्रमण कर दिया और १२७ दिनतक उसे घेरे रहनेपर उसका उद्धार कर सका। इसी बीचमें लार्ड राबर्ट्सने जैकोवसडल नामक ऐसे स्थानपर अधिकार जमा लिया; जहाँसे बोयरोंके जेनरल क्रौञ्जोके पास सैनिक सामान पहुँचते थे। क्रौञ्जो इस समय मैगर्सफाण्टीन नामक स्थानमें था। जब क्रौञ्जोने देखा, कि इस बारकी ब्रटिश सेना पहले जैसी नहीं है, तब वह मैगर्सफाण्टीन छोड़कर पार्डेबर्गमें चला गया। इस समय भी जेनरल फ्रेञ्च उसका पीछा करता जाता था। अब क्रौञ्जो-ने देखा, कि लार्ड राबर्ट्सके चँगुलसे भाग निकलना कठिन है, तब वह एक मील स्थानमें खाई खोद, किलेबन्दी कर केप कालोनी या लेडी स्मिथसे सहायता मिलनेकी आशामें बैठ गया।

यह युद्ध जो क्रौञ्जोसे आरम्भ हुआ, इसका नाम "किचनरका युद्ध" पड़ा है; क्योंकि इसमें बहुतसा काम किचनरने किया था। यह युद्ध बड़ा ही भयानक हुआ। इस युद्धमें इतनी भीषणतासे अग्निवर्षा की गई, कि शत्रुओंके छक्के छूट गये और उन्हें प्राण बचनेकी आशा न रह गई। अट्ठारहवीं फरवरीको इस युद्धकी भीषणता और भी बढ़ गई और सैकड़ों तोपोंसे एक साथ गोले छूटने लगे। इधर डी-वेटने भी भयानक युद्ध मचाया और शत्रुओंने अङ्ग-रेजोंका एक तोपखाना पकड़ लिया; परन्तु इन लोगोंने फिर भीषण युद्ध कर वह तोपखाना छीन लिया।

इस युद्धमें दोनों ओरके बहुतसे मनुष्य मारे गये। क्रोञ्जोने मृतकोंकी अन्त्येष्टीके लिये किचनरसे समय माँगा; परन्तु किचनरने समय न दिया; क्योंकि सम्भव था, कि इतनी देरमें अपने भागनेका वह कोई उपाय करता अथवा सैन्यसाहाय्य आ पहुँचता। इस घटनाके कारण किचनरको कितने ही मनुष्य निष्ठुर हृदय भी कह सकते हैं; परन्तु इधर अङ्गरेज़ोंकी ओर भी मृत्यु संख्या कम न थी। २० अफसर मारे गये थे तथा ५२ घायल हुए थे। ३०० सैनिक हत तथा ८६० आहत हुए थे। अतः अन्त्येष्टीका प्रश्न एक ही ओर न था। असलमें लार्ड राबर्ट्सने सन्देहवश क्रोञ्जोको समय न दिया था। जो हो, २७ फरवरीतक बड़ी बहादुरीसे क्रोञ्जो अपनी रक्षा करता रहा; परन्तु इसके बाद चार हज़ार मनुष्योंके साथ उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा।

इसके पहले ही लार्ड राबर्ट्सने क्रोञ्जोको आत्मसमर्पण करनेके लिये लिखा था और उसके साथ जो बातें लिख भेजीं थीं उसमें बहुत कुछ दया दिखाई थी; परन्तु क्रोञ्जोने उस समय न माना और अपनी सेनाके साथ ही साथ ब्रुटिश सेनाको भी बहुत कुछ हानि पहुंचाई।

नेटालमें जेनरल बुलर लेडी स्मिथका उद्धार करनेकी चेष्टामें लगा हुआ था और जिस समय इस ओर क्रोञ्जोने आत्मसर्पण किया था; उस समय लेडीस्मिथपर बुलर भयानक रूपसे अग्निवर्षा कर रहा था। अस्तु लेडीस्मिथमें भी भयानक युद्ध हुआ और दूसरे ही दिन बोयरोंके हाथसे उस नगरका उद्धार हुआ।

१३ वीं मार्चको लार्ड राबर्ट्सने आरेञ्जफ्री स्टेटकी राजधानी ब्लूफाण्टेनकी ओर यात्रा की। यह यात्रा इतनी शीघ्रतासे हुई थी कि सब सेना थक गई और अन्तमें मईके आरम्भ होने तक सेनाको विश्रामकी आज्ञा देनी पड़ी। इसके बाद फिर कार्य्य आरम्भ

हुआ और सबसे पहले मेफकिङ्ग नगरके उद्धारकी आवश्यकता प्रतीत हुई जहां २१९ दिनोंतक बोयरोंकी सेनाको बृटिश सेनाका एक टुकड़ा घेरे हुए था। ५ वीं जूनको प्रिटोरिया पर बृटिश झण्डा गाड़ दिया गया। यह प्रिटोरिया ट्रान्सवालकी राजधानी है और उसी दिन लार्ड राबर्ट्सने बोयरोंपर विजय होनेकी सूचना विलायत भेज दी।

यद्यपि ट्रान्सवाल और आरेञ्ज फ्री स्टेट दोनोंकी राजधानियां बृटिश अधिकारमें आ गई थीं; तथापि बोयरोंकी रुचि आत्मसमर्पण की ओर न दिखाई देती थी और उनकी बची खुची सेना और नेता भी अभी तक ट्रान्सवालमें उपद्रव मचा रहे थे। इस समय जेनरल बोथा और डी वेट दोनो ही बड़ा उद्योग और देश सेवा कर रहे थे। जूनमें किचनर भी बोयरोंके चङ्गुलमें जा फँसा था; परन्तु किसी तरह कठिनतासे इसने अपनी जान बचाई। वह एक रेलकी गाड़ीमें जो स्टेशनके पास ही दूसरी लाइनपर साइडिङ्गमें खड़ीथी सो रहा था। उसी रात्रिमें डी वेटने उस स्टेशनपर आक्रमण किया और बाध्य हो अपने घोड़े पर सवार हो किचनरको छिपकर जान बचानी पड़ी।

नवेम्बरके अन्तमें लार्ड राबर्ट्स अपना कार्य्य भार किचनरको सौंपकर इङ्गलैण्ड चला गया; क्यों कि वह समस्त बृटिश सेना का प्रधान सेनापति चुना गया था और इस लिये वहाँका कार्य्य सम्पादन करनेके लिये उसका विलायत जाना अत्यन्त ही आवश्यक था।

इस समय यह भी समाचार चारों ओर फैल गया, कि किचनर और राबर्ट्समें मतभेद होनेके कारण ही राबर्ट्स अपना पद त्याग चला आया; परन्तु जब वह इङ्गलैण्ड पहुंचा उस समय उसने यह कह कर लोगोंका भ्रम दूर किया; कि नहीं किचनर इस

युद्धमें उसका दाहिना हाथ था और उसे न्यायप्रियता तथा सैनिक चतुरताके कारण ही यह विजय प्राप्त हुई है। लार्ड राबर्ट् सने और भी कहा, कि किचनरके अतिरिक्त कोई ऐसा दूसरा मनुष्य वहाँ नहीं था; जिसने अपने प्राणोंकी पर्वाह न कर घोर परिश्रम किया हो।"

—————:o:—————

अट्ठारहवाँ अध्याय।

दक्षिण अफ्रिकाका प्रधान सेनापति।

यद्यपि लार्ड राबर्ट् सने विलायतमें लिख दिया था; परन्तु वास्तवमें यह बोयर युद्ध तथा दक्षिण अफ्रिकाका उपद्रव अभी समाप्त न हुआ था और इसके थोड़े ही दिन बाद जब लार्ड किचनरको प्रधान सेनापतित्वका पद मिला; उस समय केप आफ गुडहोपकी अवस्था भीषणसे भीषणतर होने लगी। केवल बोयर ही इस समय उपद्रव मचाते न दिखाई देते थे, बल्कि चतुरतासे भागा हुआ डी-वेट भी ऊधम मचा रहा था और वह भागकर केप कालोनीमें चला गया था; जहाँके अधिवासियोंके माथा उठाने और उसका साथ देनेकी उसे पूर्ण आशा थी। जिस समय डी-वेट केप टाउनकी ओर इस तरह अग्रसर हुआ था, उसी समय जेनरल बोथा भी पाँच हजार चुने हुए घुड़सवारोंके साथ डरबन पर आक्रमण करनेकी तयारियाँ कर रहा था।

यदि किसी तरह बोयरोंके नेता उपस्थित कठिनाइयोंको उल्लङ्घन

कर जाते तो इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वे ब्रटिश अधिकारियोंको भयानक कष्ट देते; परन्तु तीव्रदृष्टि किचनरने अपने उद्योगसे केप कालोनीवालोंको उत्तेजित न होने दिया और न जेनरल बोथाकी डरबनपर आक्रमण करनेवाली नीति ही सफल होने दी।

१८०१ की २२ वीं जनवरीको रानी विक्टोरिया परलोक सिधार गईं और उसके थोड़े दिन बाद प्रिटोरियामें एक दरबार हुआ, जिसमें किङ्ग एडवर्डकी राजघोषणा हुई। सम्राट् एडवर्ड सूडानके भी राजा माने गये।

परन्तु इस समय भी शत्रुओंने इतना उपद्रव मचा रखा था, कि किचनरको उनसे सामना करनेमें भयानक कठिनाइयाँ उपस्थित हो रही थीं। शत्रु के नब्बे सेनादल उसकी सेनाके चारों ओर उपद्रव मचा रहे थे। यद्यपि इनमेंसे कितने ही सामान्य और क्षुद्र दल थे; परन्तु उनका उत्पात धीरे धीरे भयानक रूप ही धारण करता जाता था तथा उनको उस देशके स्थानका इतना अधिक ज्ञान था, कि वे अनायास ही किसी स्थानमें एकत्र हो, अपना मनमाना कार्य कर किचनरके दलको हानि पहुँचाते थे।

अब इन्हें पददलित करनेका उपाय किचनरने यह किया, कि उस प्रदेशको कई भागोंमें बाँट दिया और तीस हज़ार नई सेना सङ्गठित कर उन्हें आत्मसमर्पण करनेके लिये बाध्य करनेका उद्योग करने लगा। इसमें भी किचनरको अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा; क्योंकि यह सेना बिल्कुल ही अशिक्षित थी और इस लिये वह उनपर किसी कार्यका भार दे, निश्चित नहीं रह सकता था।

एक बार इस नवीन सेनाका एक दल बोयरोंके जालमें फँस गया और उन्होंने मित्र बोयरोंका साहाय्य स्वीकार कर लिया। बोयर इस सेनादलको धोखा देते हुए एक ऐसे स्थानपर ले गये;

जिसपर वे अधिकार जमाया चाहते थे। यह कार्य रात्रिके समय हुआ था और जब सवेरा हुआ, तब इस नवीन सेनादलने देखा, कि बोयर उन्हें भयानक स्थानपर छोड़ भाग गये और वे शत्रुओंसे घिरे हुए हैं। भाग्यवश इन्हें भागकर प्राण बचानेका एक अवसर प्राप्त हो गया, जब यह नवीन सेना भागकर एक अन्य सैन्यदलके पास पहुँची। उस समय उसने किचनरको यह समाचार तारद्वारा विदित कराया। यह सैन्यदल अपने साथियोंको छोड़ अपना प्राण बचानेके लिये भाग आया था अतः किचनरने यही उत्तर दिया, कि जिस तरह तुम बोयरोंसे अलग होकर भाग आये हो, उसी तरह मुझसे भी अलग रहना पड़ेगा।

आजकल बृटिश घुड़सवार सेना और उपनिवेशोंकी सेना, दोनों ही इसमें कोई सन्देह नहीं, कि सुशिक्षित सेनायें की हैं; परन्तु इसके पन्द्रह वर्ष पहले इस सेनाकी ऐसी दुरवस्था थी, कि वैसी दूसरी सेना न होगी। साथ ही बोयरोंकी सेना उस देशके स्थानोंसे इस तरह परिचित और सुशिक्षित थी, कि अङ्गरेजी सेनाको तङ्ग करना उसके बायें हाथका खेल था।

किचनरके लिये इस समय शत्रु सेनाको हटाना, बार बार आक्रमण करने पर भी कठिन हो रहा था, पहले तो ऐसे देशमें उनका अड्डा कहाँपर है इसका पता लगाना ही कठिन था; इसके अतिरिक्त यदि उनके स्थानका पता लग भी जाता तो वे रातो रात अपना स्थान इस तरह बदल देते, कि किसीको कुछ पता न लगता था। इस कार्यमें उन्हें कोई कठिनाई न पड़ती थी; क्योंकि उस स्थानके सब भेदोंसे बोयर सेना भली भाँति परिचित थी; परन्तु किचनरकी सेनाको उनका पीछा करना कठिन हो जाता था और इस कारणसे शत्रु अनायास ही भाग जाते थे। ऐसी घटना कई बार घटी, कि अङ्गरेजी सेना एक सप्ताहतक उद्योग कर यदि बोयरोंके

पड़ावका पता लगा, भी सकी; तो भी उन्हें पकड़ न सकी और वे भाग गये।

किचनर चाहता था, कि यह युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जाये; परन्तु पहाड़, पहाड़ियाँ, गुफायें, दर्रे, जो शत्रुओंको छिपा रखते थे, यह युद्ध अन्त न होने देते थे। इन कठिनाइयोंके साथ ही दूसरी कठिनाई यह थी, कि ३२००० कैदियोंको उसे भोजन देना पड़ा था और उन हजारों बोयर स्त्रियाँ तथा बच्चोंकी उसे खबर लेनी पड़ती थी; जो उन स्थानोंकी रक्षा करती थीं जहाँ लड़ाई और भोजनके सामान रहते थे। ये स्त्रियाँ गोलियाँ चलाने और बोयरों-को सावधान कर देनेमें बड़ी ही प्रवीणा थीं और इसी लिये किच-नरको इनपर भी दृष्टि रखनी पड़ती थी।

लार्ड किचनरने इस युद्धका अन्त करनेके लिये काठके दुर्गकी पंक्ति बनवानी आरम्भ कर दी थी। यह कार्य इस लिये कर दिया गया था, कि जिसमें शत्रुओंको भाग जानेका अवसर न मिले। यह छोटे छोटे किले चारों ओर इस तरह बनाये गये थे, कि उन्होंने बहुत सी भूमि घेर रखी थी और खासकर रेलवे लाइनकी रक्षा इनसे बहुत कुछ हो गई थी; क्योंकि रेलके पास ही पास ये किले बनाये गये थे।

लार्ड किचनरने स्वयं ही कहा था, कि ये किले अभी ऐसे नहीं बने हैं, कि शत्रु आक्रमण न कर सकें। बोयरोंकी १५० मनुष्यों-की सुदृढ़ सेना रात्रिके समय अनायास ही इन दुर्गोंको पार कर सकती है; इतनेपर भी इन किलोंसे बहुत कुछ रक्षा होनी सम्भव है। इन छोटे किलोंसे रेलवे लाइनकी पूरी पूरी रक्षा होती थी और यदि रात्रिके समय बोयरोंका आक्रमण होता तो इशारेमें ही यह बात सेनामें बता दी जा सकती थी और इस तरह वह सैनिक मनुष्योंसे परिपूर्ण गाड़ी जो स्टेशनोंके पास रहती थी, सहायताके लिये आ पहुँचती थी।

जब ये दुर्ग बन गये, तब किचनरको कितनी ही बातोंकी सुविधा भी हो गई। अब लार्ड किचनर प्रिटोरियामें बैठकर ही तारद्वारा समस्त युद्ध क्षेत्रमें अपनी इच्छा प्रकट कर सकता था; क्योंकि इन दुर्गों के साथ ही साथ सब युद्धक्षेत्रोंसे तारके यन्त्र लगा दिये गये थे और इसी कारणसे जहाँसे कष्ट अथवा कठिनाईका समाचार मिलता वहाँ वह अनायास ही जा पहुँचता था। उसके अन्यान्य अफसर भी यह नहीं जानने पाते थे, कि किचनर कब आयगा और वह एकाएक वहाँ जा पहुँचता था।

इस तरह किचनरके एकाएक पहुँच जानेसे सब सैनिकोंके हृदयमें भय रहता था और किसी भी कार्यमें विशृङ्खलता न दिखाई देती थी। इसी तरह कितनी ही बार उसने एकाएक उपस्थित होकर अपनी सेनाकी रक्षा की थी। एक बार सूडानमें भी उसने इसी तरह दरवेशोंसे अपनी सेना बचाई थी और दूसरी बार कुमटीपूर्टमें जब उसकी सेनाकी तोपें कीचड़में फँस गई तब वह स्वयं जा पहुँचा और वस्त्र उतार तोपें निकालनेमें लग गया।

एक बार और भी इसी प्रकारकी एक घटना घटी, एक अङ्गरेज़ी सेना दल तोपखानेके आगमनकी राह देख रहा था, कि एकाएक उसे सामनेसे एक घुड़सवार आता हुआ दिखाई दिया। इस मनुष्यको तोपखानेका मनुष्य समझकर वह जल्दबाज़ अफसर जो तोपख़ानेकी राह देख रहा था; घोड़ेपर चढ़ उसके पास जा बड़ी व्यग्रता और घबड़ाहटसे धमकी देता हुआ बोला "क्या तुम जल्दी नहीं आ सकते? तुम्हारा शैतानी तोपखाना कहाँ है?" उस सवारने कोई उत्तर न देकर अपना हाथ जेबसे निकाल टोपी ऊपरको उठा दी। यद्यपि उसने कोई उत्तर न दिया परन्तु उस मनुष्यका चेहरा देखते ही वह जल्दबाज़ अफसर काँप उठा और वह आगन्तुक उसे उसी अवस्थामें छोड़ चला गया।

अब बोयर भी समझ गये, कि उनका विशेष दिनों तक बचना कठिन है; क्योंकि किचनर दुर्गोंकी संख्या बढ़ाता ही जाता था और इन दुर्गोंके कारण बोयर चारों ओरसे घिर रहे थे। इसी समय बोयरोंके नेता डी वेटने कहा था; कि मुझे पकड़नेके लिये लार्ड राबर्ट्सको तीन मास, किचनरको तीन दिन और सब जेनरलोंको समूचा जीवनका समय चाहिये। किचनरने भी डी० वेटकी बड़ी प्रशंसा करते हुए कहा, कि यदि मुझे भी एक ऐसा मनुष्य मिल जाता तो मैं अपनी सेनाका तृतीयांश अवश्य ही घर लौटा देता। बहादुर और योग्य पुरुष योग्य शत्रुओंके गुणोंका भी आदर करते हैं।

जो हो, बोयर अभी तक शान्त न हुए थे; क्यों कि उन्हें पूरी पूरी आशा थी, कि जर्मनीसे उन्हें सहायता मिलेगी और वास्तवमें यदि वे किसी तरह नेटाल पार कर समुद्र तक पहुँच जाते तो अवश्य ही उन्हें सहायता मिलती; परन्तु न ऐसा हो सका और उन्हें सहायता भी न मिली।

सन १९०१ के अन्तमें ब्रिटिश सेनाको बहुत कुछ हानियाँ पहुँची। कर्नल बेन्सनकी सेना ब्रेकेन लागिटमें फस गई और पश्चिमीय ट्रान्सवालमें लार्ड मेथुएनकी सेनाके १००० मनुष्य एक रात्रिके आक्रमणमें हताहत हुए। मेथुएन भी घायल होकर बन्दी हुआ। यह समाचार सुन लार्ड किचनरने डिलारेकी सेनापर आक्रमणकर उसके १०० मनुष्य कैद कर लिये और इसके दस दिवस बाद जेनरल वाल्टर किचनरने अपनी कैनेडियन सेनाके साथ डिलारेको फिर पराजित किया। इस बार भी अपने तीन सौ मनुष्योंकी आहुति दे डी वेट भाग गया। यद्यपि बार बार बोयर पराजित होते थे, उनके कितने ही सिपाही मारे जाते घायल होते और पकड़े जाते थे तथापि वे लड़ना बन्द नहीं करते थे और उन

मनुष्योंको भी जबर्दस्ती युद्धमें उपस्थित करते थे, जो युद्ध शिक्षा से बिलकुल ही अनभिज्ञ थे।

राजा एडवर्डके सिंहासनारूढ़ होनेपर यद्यपि शान्ति स्थापनकी तय्यारियाँ होने लगीं और अट्ठारहवीं मईको छः प्रतिनिधियोंके साथ डी वेट शान्तिका झण्डा उड़ाता हुआ लार्ड मिलनर और लार्ड किचनरसे सन्धिकी शर्त्तें स्थिर करनेके लिये आ पहुँचा; परन्तु इस सन्धि स्थापनकी चर्चाके समय भी युद्ध बन्द न था। यदि बन्द था भी तो केवल उन्हीं प्रान्तोंमें जहाँ शान्तिपर विचार हो रहा था। जो हो, ३१ वीं मे १९०२ को प्रिटोरियामें सन्धि हुई और इस तरह शान्ति स्थापित हुई।

इस बार किचनरने जो समाचार विलायत भेजे थे, वह राजकीय सेनाकी वीरता, धीरता तथा कार्य्यशीलताकी प्रशंसासे भरे थे। इसमें उसने बोयरोंके नेताओंकी भी बड़ी प्रशंसा करते हुए लिखा था,—"अपने साथियोंके लिये अपने प्राणोंकी ममता न करनेवाले इन बोयर नेताओंको भी कम श्रेय नहीं है; जिन्होंने बड़ी बहादुरीसे देश-रक्षाके लिये अपने जीवनकी आहुति दी और अन्तमें फिर सभ्यतापूर्वक उन्होंने ब्रुटिश सरकारकी उपस्थित की हुई शर्त्तें मान लीं। यह सन्धि जो इस समय हुई है, इसीसे मालुम होता है, कि शीघ्र ही एक ऐसा दिवस आयगा, जब ब्रुटिश और डच जातियाँ एकत्र मिलकर दक्षिण आफ्रिकामें कार्य करेंगी।"

जिस तरह फाशोदामें लार्ड किचनरने दरवेशोंके बहादुरीकी प्रशंसा की थी; उसी तरह इस बार बोयरोंकी बहादुरीकी भी उसने बड़ी प्रशंसा की और बराबर जेनरल बोथा तथा उन अन्य नेताओंकी वीरताकी प्रशंसा करता रहा, जिन्होंने बोयरोंके लिये अपनी आहुति दी थी।

२४ वीं जूनको सप्तम् एडवर्डका राज्यभिषेक होनेवाला था,

परन्तु उनके एकाएक बीमार पड़ जानेके कारण यह राज्याभिषेक बन्द हो गया। ५ वीं को उनके आरोग्य होनेका समाचार प्रचारित हुआ; परन्तु अभीतक सप्तम् एडवर्डकी अवस्था एकदम उन्नत न हुई थी। १२ वीं जूनको किचनर भी इङ्गलैण्ड जा पहुँचा। पैडिङ्गटन स्टेशनमें ही वेल्सके राजकुमार, कैनाटके ड्यूक तथा लार्ड राबर्ट्ससे उसको भेंट हुई और उनके साथ ही वह राजकुमारके राजभवनमें उतरनेके लिये चला गया। कई घण्टे बाद लार्ड किचनर बकिङ्घम पैलेसमें सम्राट् एडवर्डसे मिलने गया और वहीं उसे "आर्डर आफ मेरिट"की उपाधि मिली। इसके बाद उसे जेनरल, विस्काउण्ट आदि कितने ही प्रकारकी उपाधियाँ मिलीं और साथ ही साथ उसकी उत्तम सेवाके लिये ५०००० पाउण्डका पुरस्कार भी मिला।

इसके बाद उसे कई स्थानोंपर वक्तृता देनेका काम पड़ा और सभी स्थानोंपर उसने यही कहा,—"मनुष्यका यही धर्म्म और कर्त्तव्य है, कि वह अपने देशकी रक्षा करे। इसी समय उसने यह अभिप्राय भी प्रकट किया, कि इस देशके सब मनुष्योंको और विशेषकर नवयुवकोंको अवश्य ही रण-शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। लार्ड राबर्ट्सने उसके इस मतका इस तरह अनुमोदन किया, कि उसने सब विद्यार्थियोंको यह शिक्षा ग्रहण करनेके लिये बाध्य कर दिया और तबतक अपना वचन प्रतिपालन करता गया, जबतक फ्रान्समें अपनी तिरासी वर्षकी अवस्थामें, वह परलोक न सिधारा। पाठकोंको स्मरण होगा, कि यूरोपीय महासमर छिड़नेपर लार्ड राबर्ट्स एक बार फ्रान्समें सेना-निरीक्षण करता हुआ गोलेसे मारा गया था।

किचनर भी इस युद्ध-शिक्षाकी नीतिपर बड़ा ही जोर देता था और अपने अन्तिम समयतक देशके नवयुवकोंको शिक्षा देनेके लिये बराबर उद्योग करता रहा।

उन्नीसवाँ अध्याय।

भारतका जङ्गी लाट।

विस्काउण्ट किचनर इङ्गलैण्डमें अधिक दिवस न व्यतीत कर सका ; क्योंकि तुरत ही उसे भारतके जङ्गी लाटका पद मिला और उसे शीघ्र ही भारतकी ओर यात्रा करनेके लिये तय्यारियाँ करनी पड़ीं। यद्यपि कितने ही सामाजिक निमन्त्रणोंमें उसको योगदान करना था, कितने ही स्थानोंसे उसे बुलाहट आ चुकी थी ; परन्तु उसने वहाँ चुपचाप बैठकर मौज करना उचित न समझा और शीघ्र ही यात्राके लिये प्रस्तुत हो गया।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि सम्राट् सप्तम एडवर्डके राज्याभिषेकके समय कुछ भारतीय सेना तथा भारतके प्रतिनिधि इस राज्याभिषेकोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये विलायत गये थे। यह सेना हैम्पटन कोर्ट नामक एक रमणीक स्थानमें ठहराई गई थी। यह अच्छा अवसर समझकर किचनर भी इस समय उस सेनाको अवलोकन करनेके लिये वहाँ जा पहुँचा ; जिसका वह प्रधान सेनापति बनाया गया था।

किचनरने १७ वीं अक्टूबर १९०२ के दिवस विलायत छोड़ा और सीधा पेरिस चला गया ; जहाँ वह कई दिन रहा। फ़शोदा तथा सूडान आदि स्थानोंके विजयके समाचारोंसे, फ्रांसमें भी हलचल मचा रखी थी और वहाँके अधिवासी भी किचनरको

आदरकी स्नेहमयी दृष्टिसे देखने लगे थे। इसी समय टैम्पस नामक एक समाचार पत्रने लिखा था; "कलसे एक अर्ब फ्रेञ्च जेनरल फ्रांसमें ठहरा हुआ है; जो ब्रटिश निवासमें रहता है।" उसने इस लेखसे अपने पाठकोंका ध्यान उस घटनाकी ओर आकर्षित किया था जब किचनरने बहादुर फ्रौञ्चोंकी अधीनतामें कुछ दिन कार्य्य किया था।

इसके एक सप्ताह बाद किचनर पेरिस त्याग कैरो चला आया और वहाँ सर रेजिनाल्ड विन्गेटने इसकी बड़ी अभ्यर्थना की; क्योंकि किचनरके बाद यही मिश्रका सरदार बनाया गया था।

५ वीं नवम्बरको किचनर खारतूम जा पहुँचा। यह यात्रा शलाल और वादी हल्फाको छोड़ रेल पथ द्वारा ही उसने परिपूर्ण की। तीन वर्ष बाद किचनर इस जगह पहुँचा था और इतने ही दिनोंमें इस नगरकी अवस्था बिलकुल ही परिवर्त्तित हो गई थी। जहाँ पहले इधर उधर टूटे फूटे मकान या खण्डहर दिखाई देते थे; वहाँ इस समय खूबसूरत सरकारी इमारतें बन गई थीं। और इस बातके प्रमाणस्वरूपमें कि विजेता किसीके धर्म्मपर आघात नहीं पहुँचाया चाहते; एक बहुत बड़ी मसजिद भी बना दी गई थी; जिसमें सब जातिके मुसलमान निवाज पढ़ने जाया करते थे। बहुतसे अन्यान्य मकान और सुन्दर सुन्दर बागीचे भी बन गये थे तथा वहां निवास करनेवाली जातियाँ अब वैसी दुर्दशाग्रस्त न दिखाई देती थी; क्योंकि जल वायु ठीक रखनेका भी प्रबन्ध बहुत कुछ हो चुका था।

यह सब देखती हुई किचनरकी दृष्टि गोर्डनके स्मारकमें बने हुए एक रक्त चिन्हाङ्कित विद्यालयपर जाकर अटक गई। इतनेदिनों में इस विद्यालयकी इमारत बनकर तय्यार हो गई थी और वास्तव में यह विद्यालय खोलनेके लिये ही किचनरने उस स्थानपर

भङ्ग की थी। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि किचनरने गोर्डनके स्मारकरूपमें यह कार्य्य बड़ी दूरदर्शितासे किया था। इस कार्यसे गोर्डनकी स्मृति वहाँके अधिवासियोंके सामने सदा जागरित रहती परन्तु उससे अधिक स्थायी सुकीर्त्ति किचनरकी सदा उपस्थित रहती जिसने इस कालेजकी नीव डाली थी।

दस दिवस बाद किचनर मिश्र त्याग भारतकी ओर रवाना हुआ; और २८ वीं नवम्बरके भारतके पश्चिमद्वार तथा ब्रिटिश राज्य की रत्नोपमा देदीप्यमाना बम्बई नगरीमें आ पहुँचा।

भारतवर्ष पर ब्रिटिश जातिका अधिकार सहजमें ही नहीं हो गया था। इसपर अधिकार जमाते समय कैसी कैसी घटनायें घटी थीं, कैसी कैसी चालें चली गई थीं और किस तरह ब्रिटिश फ्रेञ्च तथा उच्च जातियोंकी प्रतिद्वन्दितामें ब्रिटिश जातिने इसपर अपना प्रभुत्व जमाया है—यह बात इतिहासज्ञोंसे छिपी नहीं है। इसके अतिरिक्त लार्ड क्लाइवकी कूटनीति भी किसीसे छिपी नहीं है; जिसके बलपर ३० करोड़ अधिवासियोंके एकत्रित देशपर उसने अपना अधिकार जमाया था। ये सभी बातें जिस तरह ब्रिटिश इतिहासके लिये और राष्ट्र निर्माणके उत्तम रत्न हैं; उसी तरह सर अर्नेस्टके मतमें १८५७ का विद्रोह भी एक भयानक काला धब्बा है।

यही वह देश है, जिसकी सेनाके प्रधान सेनापतिका पद लार्ड किचनरको मिला था और जहाँ उसे अपने सात वर्ष बिताने पड़े थे। उस समय जब कि उसे यहपद मिला था; बहुतसे मनुष्य यही विचारा करते थे, कि अब उसका इङ्गलैण्डमें रहना ही अच्छा है। उसी समय लार्ड रोजबेरीने कहा था, कि यह हमारे देशका सबसे बड़ा सैनिक तारा है। अतः इसे युद्ध सचिवका पद देनेमें वह कभी कुण्ठित न होगा। परन्तु उस समय कितने ही प्रतिभाशाली पुरुषोंकी यह भी धारणा थी; कि भारतीय सेनाकी

अवस्था अच्छी नहीं है और उसे सुशृङ्खल बनाने वाले एक मनुष्यकी आवश्यकता है और इस धारणाके अनुकूल इस कार्यकी पूर्त्तिके लिये किचनरसे बढ़कर सुयोग्य पुरुष न दिखाई देता था।

भारतीय सेना सदासे दो प्रकारकी रहती आई है—एक वृटिश सेना जिसमें अंगरेज जातिके गोरे मनुष्य ही हैं। दूसरी भारतीय सेना जो काली सेना कहलाती है। सन् १९०२ में इस वृटिश अर्थात गोरी पलटनमें २७३३ अफसर और ७०९०५ अन्यान्य सैनिक थे। भारतीय काली सेनामें २,१६८ अङ्गरेज़ अफसर और कमीशन न पाने वाले तथा अन्यान्य सैनिक सब मिलाकर उनकी संख्या कुल १,५२,०८१ थी। इस तरह सब गोरी और काली सेना के मिला देने पर यह संख्या २,२८,८८७ पर पहुँच जाती थी।

यद्यपि किचनरको कितनी ही उपाधियाँ मिल चुकी थीं और कितने ही प्रकारसे उसका सम्मान हो चुका था; तथापि उसे इस बातका अवश्य विचार था, कि भारतीय सेनाके प्रधान सेनापतित्वके दायित्वपूर्ण पदका कार्य ठीक ठीक चला लेना कोई सामान्य कार्य्य नहीं है। इसी स्थानपर लार्ड राबर्टस, लॉक हार्ट और व्हाइट आदि सेनापति कार्य्य कर गये थे और यह एक आश्चर्य्यकी बात थी आजके चालीस वर्ष पहले भारतमें जिस तरह जिस स्थानपर सैन्या रखी गई थी, जैसा विभाग बनाया गया था आज भी वैसा ही था।

यद्यपि उन भूतपूर्व सेनापतियोंने सेनाकी अवस्थाका परिवर्त्तन और विभागका पुनः संगठन उचित न समझा था; परन्तु किचनरने भारतमें आनेके साथ ही यह भूल पकड़ ली और उसने आनेके साथ ही कहा, कि वह यहाँकी सेनाकी अवस्था बदल देगा। उस समय सेना किसी खुले और बड़े स्थानमें रख दी जाती थी और इस बातपर बिलकुल ही विचार न किया जाता था, कि आवश्यकता

पड़नेपर वह किस तरह एकत्र हो सकेगी और सबसे बड़ी बात तो यह थी, कि सेना दो भागोंमें बाँटकर इतनी दूरी पर रख दी जाती थी; कि आपसमें एक दूसरेको पहचान नहीं सकती थी। वे सब बातें किचनरकी आँखोंमें काँटेकी तरह चुभती थीं और वह चाहता था, कि यह विशृङ्खलता अवश्य दूर कर दी जाये।

किचनरके भारतमें आगमनके बहुत दिन पहलेसे बङ्गाल, बम्बई और मद्रास ये तीनों ही प्रदेश अपनी अपनी सेना अलग रखते थे और इसकी व्यवस्था भी उन्हीं तीनों प्रदेशोंके शासक करते थे परन्तु वाइसराय या गवर्नर जेनरल इन सेनाओंसे एक दूसरे ही मनुष्य द्वारा सम्बन्ध रखते थे। जो वाइसरायकी कौन्सिलका सैनिक सभ्य कहलाता था। यह कोई आवश्यक बात न थी, कि यह पुरुष सेना विभागका ही हो, दूसरा शासन विभागका मनुष्य भी इस पदपर रह सकता था; परन्तु अभी तक इस पदपर वही मनुष्य रहता आया था; जो सैनिक होता था। इसके बाद इन प्रदेशोंने अपनी अपनी सेना रखना बन्द कर दिया और भारतवर्षकी समस्त सेना कमाण्डर इन चीफ या प्रधान सेनापतिकी अध्यक्षतामें रहने लगी। यह सब हुआ; परन्तु सैनिक सभ्य न हटाया गया और इस तरह प्रधान सेनापति तथा प्रधान शासनकर्त्ताके बीच एक वैसा मनुष्य रह गया; जो सैनिक होने पर भी तथा जिसका सेनासे सम्बन्ध रहने पर भी बड़े लाटका कान भरनेवाला था। यद्यपि यह मनुष्य पदमर्य्यादामें प्रधान सेनापतिसे कम था; परन्तु सदा वाइसरायके साथ रहने और उनकी कौन्सिलका मेम्बर रहनेकेकारण उसका अधिकार बहुत बढ़ा चढ़ा था; क्योंकि भारतके कर्त्ता हर्त्ता अर्थात भारतके शासनका सब अधिकार वाइसरायके हाथमें ही रहता है।

यह अवस्था देख लार्ड किचनरको अपनी अधीनस्थ सेनापर पूरा पूरा प्रभाव जमाकर उसे सुशृङ्खल बनाना बहुत ही कठिन

मालुम हुआ। उसके पहलेके कई सेनापति इसी गोरख धन्धेमें विचलित हो किकर्त्तव्य विमूढ़ हो चुके थे। उन्होंने इस विषयका दृढ़ता से प्रतिवाद भी किया था; परन्तु अभी तक यह अनियमत्व प्रचलित ही था। पहले भूतपूर्व प्रधान सेनापति इस पर आपत्ति उपस्थित करने पर भी वे किचनर नहीं थे, इसलिये यह नियम परिवर्त्तित न हो सका। किचनर इसी लिये भारतमें आया था; कि यहांकी सेनाको सैनिक कार्य्यमें नियम बद्ध बनाये। इसी लिये वह दृढ़तासे इस नियमको बदलनेके उद्योगमें लगा। एक व्यङ्गवादीका कथन है, कि भारत सरकार अपने सिरहाने तमञ्चा लेकर सोती है और वह तमञ्चा प्रधान सेनापति है। पर लोगोंका यह मूक विश्वास भी है कि, यह तमञ्चा कभी हटाया नहीं जा सकता; परन्तु कभी कभी ऐसी घटना हो जाती है, कि यह तमञ्चा भरा हुआ नहीं होता है। इस व्यङ्गको पूर्ण करनेके लिये यह कहना पड़ता है कि, अब यह तमञ्चा एक स्वतः प्रवृत पिस्तौल हो गया और इसके चलनेमें अब सन्देह न रहा है।

आप लोगोंको मालुम है कि किचनरने केवल अपने ऊपर निर्भर हो सूडानमें इतनी बड़ी रेलवे लाइन बनवा डाली थी उसी तरहसे भारत भी एक बड़ा विशाल देश है और इसमें रेलवे लाइन भी जालकी तरह बिछी हुई है; तथा इसमें पहलेका विद्रोह दबानेके उद्देश्य से ही स्थान स्थानपर सेना रखी गई है; परन्तु इन रेलोंने ही यह विद्रोह दबाना यहां असम्भव कर रखा है। अन्तरीय प्रबल उत्तेजनाको दबानेके लिये सुशृङ्खल पुलिस सैन्यकी आवश्यकता रहती है और सेना इसके पीछे रहती है। परन्तु वास्तवमें सेनाका कर्त्तव्य घाटियोंकी रक्षा ही रहता है और प्रधान सेनापतिका यह कर्त्तव्य रहता है, कि वह विपत्तिकी घड़ीके लिये सेनाको तय्यार रखे।

किचनर अपना कर्त्तव्य पालन करना अच्छी तरह जानता था ; वह इस कार्य्यमें उपस्थित् होनेवाले वाधाविघ्नोंकी पर्वाह भी न करता था। इसी लिये वह चार्लस नेपियरके समान भारतको विघ्न वाधाओंके भयसे छोड़ भी न दिया चाहता था।

इसी लिये लार्ड किचनरने डाक्टर फिचेटको यहांकी अवस्था और अपनी कठिनाइयोंका वर्णन करते हुए लिखा था ;—

"मैं अपने अधीनस्थ जेनरलको किसी आवश्यक कार्यके विषयमें एक प्रकारकी आज्ञा देता हूँ और उसी विषयमें कौन्सिल का सभ्य उसे इसी विषय पर दूसरे प्रकारकी आज्ञा देता है और सम्भवत: वह अफसर इसी कारणसे कुछ भी नहीं करता।

"मैं भारतीय सेनाकी उत्तमताका जवाबदेह हूँ ; परन्तु अपना मत, अपना कार्य अधिकारियोंको समझानेका अवसर मुझे मिले बिना ही वे दूसरे अफसर द्वारा वहाँ जा पहुँचते हैं। नीतिके प्रश्नोंके हल करनेके सम्बन्धमें भारत सरकारके अधिकारोंका यहाँ प्रश्न ही नहीं उठता ; क्योंकि यहाँ असामरिक शासन नीति ही प्रधान है।

परन्तु मैं इसी शर्त्त पर यहांका काम करनेके लिये तय्यार हूँ, कि शासन सम्बन्धी सरकारसे मुझे जो अधिकार मिले हैं और मेरा जो कर्त्तव्य स्थिर हुआ है ; वह मैं पूरा कर सकूँ और वह शर्त्त यही है, कि मुझे स्वयं ही अपना मत उस सरकारके आगे उपस्थित करनेका अवसर मिलना चाहिये ; जिसके लिये मैं उत्तरदाता हूँ।"

इसके बाद यहाँ क्या क्या हुआ और लार्ड कर्जन जो उस समय यहाँके बड़े लाट थे उनसे तथा किचनरसे कैसी निपटी, इन बातोंके विशेष वर्णन करनेको यहाँ आवश्यकता नहीं है ; क्योंकि दोनों ही अपने अपने मतके जबर्दस्त थे ; परन्तु इतना

कहना ही पड़ता है कि १८०५ में लार्ड कर्जनको अपना पद परित्याग कर चले जाना पड़ा और किचनरकी जीत हुई तथा उसे अपने मतको काममें लानेका पूरा पूरा अधिकार मिल गया।

१८०३ की १६ वीं नवेम्बरको जब किचनर शिमलामें घूमता हुआ कुछ दूर निकल गया था उसका घोड़ा एकाएक एक कुलीको देखकर भड़का और उसने किचनरको गिरा दिया। जब किचनर गिर पड़ा तब उस कुलीने अपने साथियोंको यह समाचार कहा। वे दौड़ते हुए उसे देखने आये; परन्तु इस भयसे, कि पीछे उनके माथे ही किचनरको गिरानेका दोष मढ़ा जायगा; उसे ज्यों की त्यों अवस्थामें छोड़ भाग गये। भाग्यसे कुछ कुली एक खाली गाड़ी लिये जा रहे थे; रात्रिके अन्धकारमें ही किचनरने उन्हें पुकारा और वे उसे उठाकर उसके निवासस्थानमें ले गये।

यद्यपि भारतमें किचनरको जो कार्य्यभार सौंपा गया था, वह कम आवश्यक न था; परन्तु यहाँ युद्धका दृश्य न दिखाई देता था, न खण्ड युद्ध ही कहीं दृष्टिगोचर होता था और न बड़ी बड़ी लड़ाइयोंका नाम ही सुन पड़ता था। सभी कार्य शान्त थे। केवल सुधार—सैन्यका सुधार ही उसका कर्त्तव्य हो रहा था।

किचनरने भारतमें आकर सबसे बड़ा सुधार यह किया, कि उसने भारतीय सेनाका एक बड़ा दल भारतके पश्चिमोत्तर प्रदेशमें भेज दिया; जिधरसे किसी प्रकारके भयकी सम्भावना थी।

भारतमें प्रधान सेनापतिकी अधीनस्थ सेनाके अतिरिक्त और भी सेना यहाँके देशी करद राज्योंमें रहती है। इन राज्योंको अपनी सेना रखनेका अधिकार है; परन्तु किसी राज्यसे युद्ध करनेका इन्हें अधिकार नहीं है।

सन् १८०२ के अन्तमें किचनर महाराज नेपालसे मिलनेके लिये नेपाल गया, जहाँ इसके स्वागतमें एक बड़ा दरबार हुआ और वहीं

इसने बीस हज़ार नेपाली सेनाका निरीक्षण किया। नेपाली और गोर्खा बड़ी बहादुर और योद्धा जाति रहनेके कारण उन लोगोंने किचनरका बड़ा आदर किया। नेपालके प्रधान मन्त्रीने उस समय किचनरका स्वागत करते हुए कहा था, कि सैकड़ों वर्षों से ऐसा कोई युद्ध न हुआ है; जिसमें गोर्खा सेनाने कुछ कार्य न किया है; परन्तु दुःखकी बात है, कि ऐसा कोई अवसर न मिला, कि वे अङ्गरेजोंके साथ ही साथ किसी युद्धमें लड़े हों। उस समय इस बातकी ओर किसीका भी ध्यान न था, कि कुछ ही दिन बाद १९१४ में ऐसा समय आ पहुँचेगा, जिसमें केवल गोर्खा सैन्य ही नहीं, बल्कि बहुतसी अन्यान्य भारतीय सेनाको सुदूर यूरोप प्रदेशमें ब्रिटिश सेनाके साथ मिलकर युद्ध करना पड़ेगा। किचनर गोर्खा सेनाको देख बड़ा प्रसन्न हुआ था और उसी समयसे उसने उन्हें सैन्यमें अधिकतर स्थान देना आरम्भ कर दिया था; क्योंकि गोर्खा जातिमें सैनिक बननेके गुणोंके साथ ही साथ जातिभेद नहीं माना जाता।

सन १९०९ के वसन्त ऋतुमें लार्ड किचनरने प्रधान सेनापतिका पद त्याग दिया। वह यहांसे सीधा इङ्गलैण्ड न लौटकर विलायत सरकारकी आज्ञानुसार आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, जापान, युक्तराज्य आदि स्थानोंमें घूमता हुआ १९१० के एप्रिलमें इङ्गलैण्ड जा पहुँचा।

सबसे पहले वह जापान गया जहाँ उसका बड़ा ही उत्तम स्वागत और सम्मान हुआ। यह सम्मान केवल राजप्रतिनिधि रूपमें जानेके कारण ही न हुआ था बल्कि इसकी वीरताके कारण जापानी इस पर अत्यन्त भक्ति करते थे।

लार्ड किचनर आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्डमें भी राजनीतिक सुधार और साम्राज्य रक्षाकी दृष्टिसे ही गया था और जब साम्राज्य रक्षाके प्रश्नोंपर विचार कर उसने इन सुदूर स्थिति उपनिवेशोंकी

रक्षाके विषयमें अपनी सम्मति दी; उस समय ब्रटिश सर्व-साधारणमें एक प्रकारकी हलचलसी मच गई।

क्योंकि आस्ट्रेलिया पर अधिकार होने तथा उसका भौगोलिक स्थान बहुत ही उपयोगी रहनेके कारण कितनी ही शक्तियाँ उस भूभाग पर अपनी वक्र दृष्टि डालने लगी थीं। इसी समय लार्ड किचनरने अपना यह मत प्रकाशित किया था; कि केवल जल सेना पर निर्भर रह कर साम्राज्यकी रक्षा नहीं हो सकती। आस्ट्रेलियन राजनीतिज्ञ सदा इस पक्षमें थे, कि उनकी जल और स्थल सेना अलग ही रहनी चाहिये परन्तु इस बात पर किसीका ध्यान ही नहीं था। किचनर जब वहांसे लौटकर इङ्गलैण्ड आया; तब उसने, इस बातकी आवश्यकता दिखाई, कि अब सेनाके लिये अधिक सैनिकोंकी विशेष आवश्यकता है और एक ऐसी विधि उसने बनाई जिससे वाध्य होकर सबको सैनिक शिक्षा ग्रहण करनी पड़े।

उसकी सैन्य सुधार पद्धति सरकारसे स्वीकृत भी हो गई, और यह निश्चित हुआ कि पुरुषोंके लिये सैनिक शिक्षा अनिवार्य हो और बारहसे चौदह वर्षकी अवस्था वाले बालकोंको कनिष्ट सैनिक विद्यालयमें और चौदहसे अट्ठारह वर्षकी अवस्थावालोंको बड़े सैनिक विद्यालयमें शिक्षा ग्रहण करनी पड़ेगी। इसके बाद घुड़सवार, पैदल, तोपखाना या जिस ओर जिसकी रुचि हो उस सेनामें योग देकर सब मनुष्योंको रणशिक्षा ग्रहण करनी पड़ेगी। इस तरह सात वर्षों में यह शिक्षा समाप्त होगी और इनमें सोलह दिवस इन्हें युद्धक्षेत्रमें शिक्षा ग्रहण करनी पड़ेगी। इस तरह पचीस वर्षकी अवस्था तक पहुँचनेके समय प्रत्येक आष्ट्रेलियन या न्यूजीलैण्डका रहने वाला सुशिक्षित योद्धा हो सकता है।

किचनरको इस युद्ध शिक्षा प्रणालीमें कितने ही मनुष्योंने आपत्ति उपस्थित की थी और उनका यह मत था कि आस्ट्रेलिया या न्यूजीलैण्डकी रक्षा अनियमित युद्ध प्रणालीसे भी हो सकती है और इसके लिये सैनिक शिक्षाकी आवश्यकता नहीं है परन्तु किचनरने किस उद्देश्यसे यह कार्य किया था और उसको इस शिक्षा और दूरदर्शिताका कितना सुन्दर परिणाम हुआ ; इसका पता इस विश्वव्यापी महा समरके फ्रांसमें होनेवाले युद्धोंसे मिलता है ; जहाँ आस्ट्रेलियन और न्यूजीलैण्डकी सुशिक्षित सेनायें बड़ी बहादुरीसे लड़ी थीं ।

बीसवाँ अध्याय ।

मिश्रका राजप्रतिनिधि ।

सन् १८१० के एप्रिल मासमें जब लार्ड किचनर इङ्गलैण्ड जा पहुँचा । उस समय ब्रिटिश जनताके हृदयसे आपसे आप यह प्रश्न उठा, कि अब कौनसा उच्चपद उस मनुष्यको दिया जायगा, जिसने न केवल उसके ऊपर सौंपे हुए सब कार्य ही सुचारु रूपसे सम्पादन किये हैं, बल्कि जिसने वेलिङ्गटनके ड्यूक (जिसने वाटर्लू के युद्धमें नैपोलियनको हराया था) के बाद, सब पुरुषोंके हृदयपर अधिकार जमा लिया है और जिसने आवश्यकताके समय बड़ी धीरतासे अपना गुण प्रदर्शित किया है। साम्राज्यके लाभके लिये

यह उचित था, कि किचनरको उच्चपदके लिये मुँह न ताकना पड़े और बिना माँगे ही उसे उसका योग्य पद मिल जाये।

कुछ ही दिन बाद यह बात प्रचारित हुई, कि ड्यूक आफ कैनॉटके स्थानपर वह भूमध्य सागरके प्रदेशोंका प्रधान सेनापति बनाया जायगा। इस पदकी सृष्टि सन् १८०७ में की गई थी और इस तरह इस पदपर जो मनुष्य बैठता था, उसकी अधीनतामें जिब्राल्टर, माल्टा, मिस्र, साइप्रस और क्रीटकी समस्त सेनायें आ जाती थीं। इस घोषणापर लोगोंको विशेष श्रद्धा न हुई; क्योंकि यह बात सभोंको मालुम हो चुकी थी, कि कैनॉटके ड्यूकने यह पद, यह कहकर त्याग दिया है, कि इस पदकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। इसी समय पञ्च नामक समाचार पत्रने यह भी लिख दिया, कि किचनरको इस पदपर बैठाना एक अच्छे पदार्थका नाश करना है। साथ ही "सैटर्डे रिव्यू" नामक पत्रने स्पष्ट लिख दिया, कि पेटभरू राजनीतिज्ञ व्हाइटहॉल (राजनीतिज्ञोंके एकत्र होनेका स्थान) में उस पुरुषको नहीं बैठाना चाहते, जिसने लार्ड कर्जनका सामना कर अपनी राह बना ली थी। एक तीसरे पत्रमें भी लिखा, कि किचनर अधिकारीवर्गोंके पाससे हटाकर भूमध्यसागरके प्रदेशोंमें गुप्तरूपसे रखा जानेवाला है; जहाँ वह अपनी सारी शक्तियाँ तीन मासमें खो देगा और इसके बाद उसके लिये वेलेटाके बाग और धूपमें घूमनेके अतिरिक्त कोई भी कार्य न रह जायगा।

लार्ड किचनर केवल इसी कारणसे भूमध्यसागरकी ओर न भेजा गया, कि उसने स्पष्ट कह दिया, कि वह कर्म्महीन वैतनिक पद नहीं चाहता। या तो वह युद्धसचिव बनाया जाये अथवा उसे भारतके प्रधान शासनकर्त्ताका पद मिले। इन दोनोंमेंसे कोई एक पद वह स्वीकार कर सकता है; परन्तु ये दोनों पद न मिलकर

साम्राज्य रक्षककी कमिटीमें उसे एक साधारण पद मिला; क्योंकि इसमें एक ऐसे मनुष्यकी आवश्यकता थी, जो सैनिक नियमोंमें परामर्श दे; परन्तुएक वर्षसे कम समयके बीचही सर बल्डन गोर्स-टकी मृत्युके कारण मिश्रके ब्रटिश राजप्रतिनिधिका स्थान खाली हुआ और वह पद किचनरको ही दिया गया। किचनरने भी इस पदको स्वीकार कर लिया; क्योंकि इस पदद्वारा वह वस्तुत कुछ कार्य सम्पादन कर सकता था।

उस समय मिश्रमें भी एक सुदृढ़ और तीक्ष्णबुद्धि मनुष्यकी आवश्यकता थी। क्योंकि इटली और रूममें युद्ध छिड़ना ही चाहता था और मिश्र नामके लिये रूमी साम्राज्यका एक टुकड़ा रहनेके कारण मिश्रकी सेना अपने भूस्वामीका पक्ष लेकर लड़नेके लिये तय्यार थी और खासकर इटलीको ट्रिपोलीपर अधिकार न जमाने देना चाहती थी।

लार्ड किचनरने सन् १९११ ईस्वीके सेप्टेम्बर माससे अपना कार्य आरम्भ किया। इस समय भी यह पद बड़ा ही दायित्वपूर्ण था; क्योंकि यद्यपि खेदिव रूमी सरकारको प्रधान मानता था; परन्तु किचनरकी आज्ञाके विरुद्ध कुछ कर न सकता था; समूचा मिश्र लगभग ४००००० वर्गमील स्थान घेरे हुए है औरइसके अधिवासि-योंकी संख्या लगभग १ करोड़ है। इसके अतिरिक्त सूडानका प्रदेश ९,५०,००० वर्गमीलमें और इसकी जनता २५ लाख मनुष्योंकी है।

जिस समय किचनरको मिश्रके राजप्रतिनिधिका पद दिया गया; उस समय उस पद पर नियुक्त होनेवाले मनुष्यकी योग्यता वर्णन करते हुए सर एडवर्ड ग्रेने स्पष्ट कहा था—"यह सभी जानते हैं, कि मिश्रके इस पद पर किसी सुयोग्य मनुष्यको खोज कर बैठाना कितना कठिन है। उस पद पर बैठनेवाले मनुष्यके लिये वहाँका विशेष अनुभव, विशेष दूरदर्शिता और विशेष गुणोंकी

आवश्यकता है। मैं ऐसे किसी मनुष्यको नहीं जानता जिसमें किचनरके समान इन विषयोंका ज्ञान, अनुभव और गुण हो।"

उस समय मिश्रकी ब्रटिश अवस्था बड़ी ही विचित्र हो रही थी। इटलीसे ब्रटेनकी प्रगाढ़ प्रीति बहुत दिनोंसे चली आती थी और वही दशा रूमसे थी। मिश्र रूम राज्यका एक अङ्ग हो रहा था। इस लिये रूमपर आपदा आनेके समय मिश्रका सैन्य साहाय्य करना आवश्यक था। किचनरके कैरो पहुँचनेके दोही दिन बाद इटलीने रूम राज्यसे युद्ध घोषणा कर दी और इस समय ऐसे मनुष्यकी बड़ी ही आवश्यकता थी जो मिश्रको ऐसे भयानक समयमें निरपेक्ष रख सके।

इस तरह किचनरके कार्यभार ग्रहण करते ही, उत्तेजना फैलनेके लक्षण दिखाई देने लगे थे; परन्तु मुसल्मानी नीति, धर्म तथा बिचारोंका पूरा पूरा ज्ञान रहनेके कारण किचनरने उन उत्तेजनाओंको प्रबल रूप धारण करनेसे रोक दिया।

इस समय ब्रटिश प्रतिनिधिके पास यह समाचार पहुँचा, कि रूमी सेनामें मिश्रके अफसर कार्य करनेके लिये जाना चाहते हैं। उत्तरमें किचनरने कहा—"मुझे कोई आपत्ति नहीं है और ऐसी इच्छाका उत्पन्न होना भी उचित है साथ ही साथ वह अपनी ओरसे इसमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पहुँचाया चाहता। परन्तु अफसरोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये, कि उनके जाते ही उनके स्थानपर उनसे निम्न कर्म्मचारी आ पहुँचेंगे और इस तरह जब वे रूमी फौजसे लौटेंगे, उस समय उनके लिये स्थान न रह जायगा।" इस समय कुछ बातें और भी समझाते हुए किचनरने कहा, कि उन्हें अपनी आकांक्षाओंको अथवा अपनी आर्थिक उन्नतिकी इच्छाको, दोमें एकको दमन करना ही पड़ेगा। उन लोगोंने किचनरकी बात मान ली और इस तरह मिश्रकी निरपेक्षताकी रक्षा हुई।

जब केवल अफसरोंके जानेसे उन्हें अपनी उन्नतिमें बाधा दिखाई दी; तब मिश्रवासियोंने यह प्रस्ताव किया, कि कई पूरी रेजिमेण्टें ही रूमकी सहायताके लिये भेज दी जायें। इससे अफसर या सेना किसीकी भी उन्नति न बन्द होगी। किचनरने फिर कहा—"यह जातीय कार्य है। इसमें मुझे किसी प्रकारकी आपत्ति नहीं हो सकती; परन्तु यदि मिश्रकी सेना एक स्थानसे दूसरे स्थानपर भेज दी जायगी तो उस स्थानको परिपूर्ण करनेके लिये या तो उसे बृटिश सेना इङ्गलैण्डसे बुलाकर रखनी पड़ेगी अथवा अन्य किसी स्थानसे बुलाकर वह स्थान परिपूर्ण करना पड़ेगा।" यह उत्तर सुनते ही मिश्रवासियोंने अपना प्रस्ताव लौटा लिया और उनके हृदयमें किसी प्रकारका द्वेष भी न उत्पन्न हुआ।

अवसर देख कुछ बदायूँ सरदारोंने किचनरसे भेंटकर कहा,—कि धार्मिक युद्धके घोषणाकी आज्ञा दीजिये, नहीं तो उनकी जातिके मनुष्य उत्तेजित हो उठेंगे और जबर्दस्ती त्रिपोलीमें इटेलियनोंसे युद्ध करनेके लिये चले जायँगे। किचनरने उनका यह प्रस्ताव सुन, पहले उनके वीर विचारोंके लिये उन्हें धन्यवाद दिया और उनकी बहुत कुछ प्रशंसा की। वे भी अपनी प्रशंसा सुन प्रसन्न हो उठे। इसके बाद किचनरने कहा, कि आपलोग तीक्ष्णधार यन्त्रसे खेल खेलना चाहते हैं। आपलोग जानते हैं, कि कितने ही मनुष्य मिश्रसेनामें भरती होनेकी कठिनतासे बचे हैं; परन्तु अब भी यदि उन्होंने कोई सामरिक आकांक्षा प्रकट की तो वे जबर्दस्ती सेनामें भरती करनेवाले नियमके अन्तर्गत आ जायँगे। माथा झुकाना भी आँखे बन्द करलेनेके समान ही अच्छा है। किचनरका यह उपदेश सुन वे सरदार भी चुप हो रहे और उन्होंने स्थिर कर लिया, कि यह धार्मिक युद्ध भी बड़ा बखेड़ा खड़ा कर देगा।

इटली और रूसमें छिड़ा हुआ युद्ध, इसमें कोई सन्देह नहीं कि, मिस्रमें भी भयानक झगड़ा खड़ा कर देता; क्योंकि दोनों स्थानोंका धर्म एक ही था और वे सभी विदेशियोंको घृणाकी दृष्टिसे देखते और उन्हें हटा देना चाहते थे तथा जातीयताका घनिष्ट सम्बन्ध रहनेके कारण प्रत्यक्षरूपसे मिस्रका इस युद्धमें साथ देना भी उचित मालुम होता था। क्रिश्चियन इटलीने मुसल्मान रूमपर आक्रमण किया था। क्रिस्तान फ्रांस और स्पेन मुसलमानी मुरक्कोका बटवारा किया चाहते थे और क्रिस्तान रूस मुसलमान पर्शियाको धमका रहा था। ये सभी बातें राष्ट्रीयताको जागरित कर देनेवाली और उसे भयानक अवस्थामें पहुँचा देने वाली थीं; परन्तु किचनरने मिस्रमें जितने समाचार पत्र प्रकाशित होते थे; उन सभोंको अपने पक्षमें मिला लिया था और जो पत्र जरा भी इसके विरुद्ध माथा उठाते थे वे दबा दिये जाते थे।

अड़तालीस घण्टे तक अलेकजेण्ड्रियामें बड़ी हलचल मची रही। इसके बाद समाचार मिला; कि रूमने त्रिपोलीसे इटैलियनोंको निकालकर इस युद्धका अन्त कर दिया है। मिस्रवासियोंको यह समाचार मिलते ही उन लोगोंने इसका उत्सव इतने जोर शोरसे मनाया, कि वहांके इटैलियन अधिवासी बड़े ही अपमानित हुए और उनके साथ बड़ा ही असभ्य व्यवहार किया गया। इनमेंसे कितने ही अपमानित पुरुषोंने अपनी बन्दूकोंसे काम लिया और अपमान करने वालोंको मार डाला। इसके बाद भयानक गड़बड़ मची और बड़ी कठिनतासे पुलिस शान्ति स्थापन कर सकी। दूसरे दिवस सबेरा होते ही फिर इसी ढङ्गकी कार्रवाइयाँ होने लगीं; परन्तु अग्निनिर्वापक दलने बड़ी कठिनतासे जल वर्षाकर उन्हें भगा दिया और इस

तरह दूसरा दिवस भी कटा। इस समय किचनरने एक चाल और भी चली। उसके साथ कितने ही सिपाही भी आये थे जो युद्धके जहाज़से तुरत ही उतरे थे। किचनरने उन्हें चुपचाप ही यह आज्ञा दे दी, कि मेशीन तोपें लेकर तुम उपद्रवियों की ओर अग्रसर हो। यह आज्ञा इस तरह दी गई और यह कार्य इस तरह किया गया मानो किचनरको इस उपद्रवका कोई हाल मालुम न हो और न इस कार्यसे उसका किसी प्रकारका सम्बन्ध ही हो। जिस समय ये सैनिक तोपें ले नगरमें घुसे हैं; उस समय उन तोपोंको देखते ही सब उपद्रव शान्त हो गया और फिर इटैलियनोंके विरुद्ध कोई कार्य करनेका साहस उन लोगों को न रहा।

यह समाचार जब विलायत पहुँचा; उस समय उन पुरुषोंको भी, जिन्होंने किचनरके राजप्रतिनिधि चुने जानेपर आपत्तियाँ प्रकट की थीं, मालुम हो गया, कि ऐसे भीषण समयमें मिश्रको निरपेक्ष रखना कोई साधारण पुरुषका कार्य्य नहीं था और उस स्थान पर किचनरके अतिरिक्त कोई दूसरा पुरुष बैठने योग्य भी न था।

सन १९०९ में मिश्रकी रुईकी फसल बहुत ही खराब हुई थी। लार्ड किचनर तुरत ही उसकी उन्नतिकी चेष्टा करने लगा। अच्छा चारा सबोंको दिया गया और रुईकी खेती नष्ट करने वाले रोगोंसे खेतोंकी रक्षा करनेका प्रबन्ध होने लगा। किचनर सामरिक नीतिमें जिस तरह निपुण था उसी तरह आर्थिक सम्बन्धमें भी उसकी बहुदर्शिता दिखाई देती थी। कुछ ही दिन बाद एक दूरके स्थानमें रुई सम्बन्धी नवीन रोगका उसे समाचार मिला। उसने उसके अन्वेषणके लिये सरकारी मनुष्य भेजे। कुछ दिन बाद उसने अन्वेषणका फल जानना चाहा और उसे

समाचार मिला, कि अधिकारी अभी विचार ही कर रहे हैं। किचनर चुप रहनेवाला न था। कुछ ही देरमें वह एक खास गाड़ीमें सवार हो उस स्थान पर जा पहुँचा।

इसी तरह सभी स्थानोंमें उसके एकाएक पहुँच जानेका बड़ा ही सुन्दर फल होता था। एक बार वह एक मोटर गाड़ी पर कैरोसे हेलुअन जा रहा था। अबोदियामें जाकर उसकी गाड़ी सड़क न रहनेके कारण एकदम रुक गई। सड़क खराब ही नहीं; बल्कि इसी स्थानपर समाप्त हो गई थी। उसने तुरत ही अपनी गाड़ी एक कैदखानेकी ओर मोड़नेकी आज्ञा दी और वहाँ पहुँचकर उस स्थानके प्रबन्ध कर्त्तासे उसने पूछा:—

"क्या कल सवेरेसे ही कार्य करने योग्य एक हजार मनुष्य तुम्हारे पास हैं?"

प्रबन्ध कर्त्ताने कहा—"आवश्यकता हो तो चार हज़ार मनुष्य मैं दे सकता हूँ।"

किचनरने कहा—"उनमेंसे एक हजार मनुष्य चुनकर अबोदियासे हेलुअन तक सड़क बनानेमें लगा दो। ठीक कल सवेरे उनके औजार यहाँ आ पहुँचेंगे।"

१९१३ में जब लार्ड किचनरके भारतके राजप्रतिनिधि बननेकी सम्भावना हुई उस समय मिश्रवासियोंके हृदयमें बड़ा दुःख हुआ। क्योंकि १९११ से उसने ऐसे कार्योंमें हाथ लगाया था; जिससे मिश्रकी बहुत कुछ उन्नति होती। उसका मिश्रके अधिवासियोंसे सम्बन्ध बढ़ता ही जाता था; क्योंकि वह सर्वसाधारणसे बिना किसी प्रकारका भेद भाव रखे मिलता था, सब जातिके पुरुष अपने घराऊ कामोंमें भी उससे परामर्श लेने आते थे और मिश्रकी भाषामें बोलनेका अभ्यास रहनेके कारण वह उनकी बातें अच्छी तरह समझता और दरिद्रसे दरिद्र तथा

धनीसे धनी सबके प्रश्नोंका उत्तर देकर उनके हृदयपर अधिकार जमा लेता था। इसी तरह उसने मिस्रवासियोंके हृदयपर अपना अधिकार जमा लिया था।

ऐसे स्थानमें जो जातीयताके प्रश्नमें इतना जटिल हो रहा था, ऐसे पुरुषका आपदासे वञ्चित रहना भी कठिन ही था, जो सब श्रेणीके पुरुषोंसे मिलता हो। इसलिये जिस तरह किचनरके माननेवाले मिस्रमें बहुत थे, उसी तरह उसके विपक्षियोंकी संख्या भी वहाँ कम न थी; परन्तु वे गुप्तरूपसे छिपकर अपना कार्य किया चाहते थे। इसका प्रमाण भी मिल चुका है। सन् १९१२ में लार्ड किचनरके प्राणघातका प्रबन्ध भी वहाँ हो चुका था; परन्तु एकाएक जेनरल फिजेरल्डको इस षड्यन्त्रका पता लग गया और उसने उस मनुष्यका एक फोटो ले लिया जो यह पापका बोझ उठाना चाहता था। एक बार लार्ड किचनर जब गाड़ीपर सवार हो रहा था, तब उसने उसी मनुष्यको किचनरकी गाड़ीके पास खड़े देखा। इस समय किचनर गाड़ीपर चढ़ना ही चाहता था। उस मनुष्यको देखते ही जेनरल फिजेरलडने ऐसी तीखी दृष्टिसे उसे देखा, कि उसका पापी हृदय डर गया और जेनरल फिजेरल्ड भी किचनरके सामने आकर उसे अपने पीछे लेता हुआ खड़ा हो गया। यदि वह दुष्ट उस समय आक्रमण करता तो गोली सीधी जेनरल फिजेरलडको छेदती हुई बाहर निकल जाती; परन्तु कर्नलकी तीखी दृष्टिने उस पापीका साहस विलुप्त कर दिया, उसका हृदय काँप उठा और उसी समय वह पकड़ लिया गया।

मिस्रमें कितने ही अङ्गरेजोंका शासन जमाने और सुशृङ्खलता फैलानेमें बलिदान हो चुका था। यह लार्ड किचनर ही था; जिसने मादीके अन्धकारमय मतसे उस देशकी रक्षा की और अब जिन पुरुषोंका उसे शासन करना था, उनकी प्रकृति और

वालोंको पहिचान कर वह कितने ही और भी ऐसे सुधारोंकी नींव डाला चाहता था, जिससे प्रतिद्वन्द्विताके समय वह प्राचीन देश किसीसे पीछे न रह जाये।

मिस्र उस समय चुपचाप था जब इटलीने उसके साथी अथवा मालिकसे युद्ध छेड़ा था; परन्तु १९१४ में टर्कीने इस भयानक महासमरमें योगदान दिया और ब्रुटेनके विरुद्ध पक्षमें जा मिला। अब्बास हिलमी जो उस समय खेदिव था जर्मनीके पक्षमें मिला रहनेके सन्देहपर गद्दीसे उतार दिया गया और शहज़ादा हुसेन कामिल मिस्रका सुल्तान बनाया गया। परन्तु यह विपक्षमें परिचालित किया हुआ सुल्तान भी अपनी प्रजाको अपने पक्षमें न मिला सका और कुछ ही दिन बाद मिस्र ब्रुटिश साम्राज्यका एक अंश बना लिया गया।

वास्तवमें बात भी ऐसी ही थी। मिस्रके अधिवासी उस रूमी कठोर शासनसे अपना छुटकारा ही चाहते थे, जिसने अन्तमें अफ्रिकाका अपना अन्तिम प्रदेश भी अपने व्यवहारसे खो दिया।

इक्कीसवाँ अध्याय ।

अन्तिम पद ।
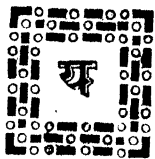
यह बतानेकी कोई आवश्यकता नहीं, कि १८१४ की ५ वीं अगस्तको यह भयानक यूरोपीय महासमर किस तरह छिड़ गया और किस तरह सामान्य एक देशीय झगड़ेने अपना भयानक आकार धारण कर यूरोपके नौ देशोंको सम्मिलित कर लिया और किस तरह दिनों दिन इस युद्धने भीषणसे भीषणतर आकार धारण करते हुए इतिहासमें अपना नाम अजर अमर कर डाला। कई वर्षों से कितने ही भविष्यवक्ताओंके यह कहने पर भी, कि कैसर और वृटेनमें अवश्य झगड़ा खड़ा हो जायगा; सभी उनकी उपेक्षा करते हुए उनके विचारोंकी बड़ी दिल्लगी उड़ाया करते थे और कभी यह बात स्वप्नमें भी समझमें न आती थी, कि इतनी सुदृढ़ सन्धि कागजका टुकड़ा समझकर उड़ा दी जायगी और एक ऐसी भयानक युद्धाग्नि भभक उठेगी; जिसकी आँच केवल युरोपको ही नहीं बल्कि समस्त भूमण्डलको हानि पहुँचाये बिना शान्त न होगी। वृटेनका महासागर द्वारा ही सब कार्य सम्पादित होता था, और उसे इस विषयमें गर्व था, कि जब तक उसकी जल सेना सुदृढ़ है; तब तक कोई उसकी ओर आँखें उठाकर भी नहीं देख सकता। परन्तु बेलजियम और फ्रांससे सन्धि और राष्ट्रीय सम्मानने इसे बाध्य बनाकर युद्धक्षेत्रमें खड़ा कर ही दिया और इस तरह वृटेनको भी अपनी सम्मान रक्षाके लिये युद्ध क्षेत्रमें जझना पड़ा।

इस युद्धके आरम्भमें बृटिश सेनाके सम्मुखकी पंक्तिके योग्य कुल २००००० मनुष्य थे। परन्तु उस समय भी इस बातका पूरा पूरा भरोसा था; कि यह थोड़ी सेना भी बृटेनका नाम न डूबने देगी और अपने पूर्व पुरुषोंके समान ही अपनी कीर्त्ति बनाये रखेगी।

ऐसा कई बार हुआ है, कि जब किचनरकी इङ्गलैण्डमें आवश्यकता पड़ी है तब वह बिना बुलाये ही उस स्थानपर जा पहुँचा है। इस बार भी ऐसा ही हुआ और किचनर एकाएक उसी अवसर पर इङ्गलैण्ड जा पहुँचा जब यह युद्ध छिड़ा। बस इसके वहाँ आते ही बृटिश जनताका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ जो अनुभवकी भट्टीमें कई बार तपाया जा चुका था और जो आज तक किसी कार्य्यमें कभी भी विफल मनोरथ न हुआ था।

परन्तु अभीतक विलायतके राजनीतिज्ञ किचनरको समर सचिव बनानेमें हिचकते थे और उस समय प्रजाको और भी दुःख हुआ, जब यह बात प्रचारित हुई, कि किचनर फिर मिस्र लौट जायगा। एक विख्यातपत्रने लिख भी दिया, कि बृटेन अपने जीवनके लिये युद्ध कर रहा है और लार्ड किचनर मरुभूमिमें घूमने जा रहा है। यह समय शान्त, सुदृढ़, अचल और अनुभवी मनुष्य माँगता है। लार्ड किचनर वैसा ही है। हमें उसे न छोड़ना चाहिये।

इसके बाद जब वह मिस्रकी ओर यात्रा करना ही चाहता था, कि उसी समय उसके एक बन्धुने उससे कहा था, कि शायद बृटिश सरकार युद्धके विषयमें परामर्श करनेके लिये तुम्हें यहाँ रखेगी और यहाँसे जाने न देगी। किचनरने उसी समय उत्तर दिया था "मैं आज्ञा देता हूँ परामर्श नहीं देता।"

इसके बाद जब लार्ड किचनर मिस्र जानेके लिये जहाज़ पर सवार हो गया; उस समय उसके पास बिना तारका तार पहुँचा

जिसमें लिखा था, कि उसे युद्ध सचिवका पद दिया गया और अब उसे मिश्र न जाना होगा। इस समय तक इस योग्य कोई पुरुष न मिलनेके कारण प्रधान मन्त्री मिस्टर ऐस्क्विथ ही युद्ध सचिवके पद पर कार्य कर रहे थे।

इस बातके विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है, कि किन शर्तों पर उसने यह कार्य भार ग्रहण किया। कहना यही है, कि योग्य मनुष्य को उचित पद दिया गया और जिस समय बृटिश प्रजाके कानोंमें यह समाचार पहुँचा; कि किचनर युद्ध सचिव बनाया गया है वह प्रसन्न हो उठी।

जिस समय यह युद्ध छिड़ा था; उस समय सर्वसाधारणकी यही धारणा थी, कि यह लड़ाई थोड़े ही दिवस चलेगी और लगभग तीन मासोंमें ही समाप्त हो जायगी और यदि अधिक दिनों तक चली तो आठ माससे अधिक समय कभी व्यतीत न होगा और इतने समयमें संसारमें शान्ति स्थापित जो जायगी; परन्तु उसी समय अपने अनुभव और दूरदर्शिता द्वारा किचनरने कह दिया था; कि यह युद्ध तीन वर्ष तक चलेगा और तीन वर्षों के लिये ही वह तय्यारियाँ कर रहा है। उसी समय लार्ड सभामें वक्तृता देते हुए उसने कहा था "हमलोगोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि यह झगड़ा शीघ्रही न निपटेगा और यह हम लोगोंके लिये बड़ा ही आवश्यक है, कि मजदूरोंको सशस्त्र सैनिक बना दिया जाये जिससे इस लड़ाईका अन्त सफलता पूर्वक हो।"

यद्यपि उस समय उसकी बातोंपर विश्वास न हुआ; परन्तु अब मालुम हो गया, कि किचनरकी भविष्यवाणी सत्य थी और उस समय न तो बृटेन और न उसके कोई भी साथीके ध्यानमें यह बात थी, कि कैसरकी बहुत वर्षों से परिश्रम कर तयार की हुई सेनासे जिसे उसने समस्त संसार नहीं तो समस्त युरोपको

प्रशियाकी अधीनतामें लानेके लिये तयार किया है; जूझना पड़ेगा।

लार्ड किचनरके आगे सबसे आवश्यक कार्य्य नवीन सेनाका संगठित करना, उसे शिक्षा देना और उस सेनाको जो युद्धक्षेत्रमें जूझ रही थी सहायता पहुँचाना था। इसी लिये उसने पहले एक लाख मनुष्य बुलाये। जब ये मिल गये तब २००००० फिर २००००० फिर एक लाख और फिर दस लाख। इस तरह किचनर बराबर सेना एकत्र करता गया। उसने कितने ही उपनिवेशोंसे भी सेना बुलाई और इस तरह बराबर नवीन सेनासे शत्रुका सामना करता गया। इस तरह इतनी सेना एकत्र हो गयी, कि १८१६ की २१ वीं मैके अन्तमें पचास लाख मनुष्योंकी इतनी बड़ी सेना देख सम्राट् जार्ज को भी प्रजाके इस उत्साहके लिये धन्यवाद देना पड़ा।

उस समय सर्व साधारणकी सभामें इस सेनाकी ओर दृष्टि डालकर प्रधानमन्त्री ऐस्क्विथने कहा था—

"मैं समझता हूँ, कि सेना, देश और साम्राज्य लार्ड किचनरकी उस सेवाके लिये जो इस समय उसने की है; ऋणी है, और इस ऋणका अनुमान मुखसे नहीं किया जा सकता है......उसने कई बार यह कार्य ग्रहण करनेकी अनिच्छा प्रकट की थी, जो मैंने उस पर सौंप दिया है। परन्तु अन्तमें बहादुर सैनिकके समान उसने वह कार्य परिपूर्ण किया। इसके अतिरिक्त भी उसपर कार्य्य सौंपे गये थे और उस समयसे आजतक एक दिन भी ऐसा न बीता है, कि लार्ड किचनरने कठोर परिश्रम, प्रबल अनुराग और स्वदेशप्रीति जनित आत्मत्यागसे कार्य्य न किया हो और मैं अपने हार्दिक विचार और नित्यके अनुभवसे कह सकता हूँ, कि वह सब प्रकारकी प्रशंसाओंके योग्य है।

"इस देश या साम्राज्यमें ऐसा कोई दूसरा मनुष्य नहीं है, जो इतने थोड़े समय और इतने कम प्रतिबन्धके भीतर इतनी विशाल सेना एकत्र कर सके, जो इस समय यहाँ और विदेशमें सम्मान प्राप्त कर रही है।

"इतिहास इस घटनाको एक अभूतपूर्व घटना समझेगा तथा मैं कह सकता हूँ और हृदयसे कहता हूँ, कि इस कार्यके लिये लार्ड किचनर ही एक मात्र धन्यवादके पात्र हैं।"

यदि १८१४ के जुलाई मासमें कोई मनुष्य यह कहता, कि वह इतनी विशाल सेना एकत्र कर देगा तो वह पागल समझा जाता; क्योंकि उस समय यह बात किसीके ध्यानमें ही न थी, कि इतनी बड़ी सेनाकी आवश्यकता आ पड़ेगी और बिना इतनी बड़ी सेनाके मित्र-राष्ट्रोंको सहायता न पहुँच सकेगी। परन्तु किचनरकी प्रार्थनाने विचित्र कार्य्य दिखाया और यह कहनेमें किसी प्रकारकी अत्युक्ति न होगी, कि उसकी सूरत और नामने वह जादू डाल दिया, कि इतनी विशाल सेना, बिना किसी झगड़ेके एकत्र हो गई।

फ्लैण्डर्स, फ्रान्स, मिस्र, गैलीपोली, मैसोपोटामिया तथा अफ्रिकाके अन्य जर्म्मन उपनिवेशोंमें तथा जल युद्धोंमें इस सङ्गठित सेनाने कैसे कैसे कार्य्य किये हैं और किस तरह अपने देश और साम्राज्यके लिये अपने जीवनकी आहुति दी है, उसका विशेष वर्णन करनेकी आवश्यकता नहीं है। यद्यपि किचनर यह कार्य्य इङ्गलैण्डमें बैठकर ही करता था, तथापि उसे कितनी ही बार युद्ध-क्षेत्रमें ब्रटिश जेनरल तथा जेनरल जाफरेसे परामर्श करनेके लिये जाना पड़ा था।

१८१५ के नवेम्बर मासमें उसे गैलीपोली जाना पड़ा, क्योंकि यहाँ ब्रटिश सेना बड़े सङ्कटमें पड़ गई थी और यह उसकी उपस्थितिका ही फल था, कि वह सेना सहीसलामत लौट सकी।

मई १९१६ के अन्तमें इस महायुद्धके कारण लाखों मनुष्योंतक मृत्यु संख्या पहुँच चुकी थी ; परन्तु अबतक भी इस युद्धको बन्द करनेका विचार किसीका न था और न अबतक है। उस समय भी इङ्गलैण्ड रसद तथा सेनाकी सब ओर सहायता पहुँचा रहा था और खासकर मित्र-राष्ट्रोंको तो बहुत कुछ सैनिक सामान बराबर भेजे जाते थे ; क्योंकि उनके पास इसका बड़ा अभाव था। जिस समय, कि इस तरह ब्रटिश सैन्य अन्तिम विजयकी ओर तय्यारियाँ कर रही थी उस समय बृटिश जङ्गी बेड़ा भी जर्म्मनीके बेड़ेको कैद किये हुए था। लगभग बीस महीनेतक जर्म्मनीके जहाज़ अपने घरमें ही लङ्गर डाले पड़े रहे और जब कभी निकले भी तो हार खाकर पीछे भाग गये। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि बृटिश राष्ट्रको बहुत कुछ जनहानि सहनी पड़ी ; परन्तु इसका परिणाम भी जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ था, उस समयकी अवस्थासे अच्छा ही होता गया।

सब बातें आशा जनक ही दिखाई देती थीं। यद्यपि बृटिश जाति लम्बी खाई खोद रही थी ; परन्तु बराबर सीधी खोदती जाती थी ; क्योंकि यह युद्ध न्याय सम्मान तथा देश-रक्षाके लिये हो रहा है और इसका परिणाम भी वही होगा, जिससे संसारका उपकार साधित होगा।

अभी जूटलैण्डकी समुद्री लड़ाई हुए केवल छः दिवस हुए थे और बृटिश-प्रजा इस विजयका पूरा समाचार जाननेके लिये व्यग्र हो रही थी। परन्तु हा! उस समय किसीके भी ध्यानमें यह बात न थी, कि आगे कैसे समाचार मिलेंगे!!

बाईसवाँ अध्याय।

अन्तिम काल।

लार्ड किचनरको जो पद दिया गया था, वह कितना दायित्व पूर्ण था ; इसका पता पाठकोंको इसी बातसे लग सकता है; कि उसे एक क्षणके लिये भी विश्राम न था और समस्त बृटिश जाति उसका मुँह देखा करती थी, कि वह किस तरह इतना बड़ा भयानक युद्ध सञ्चालन करता है ।

गत अध्यायमें जैसा कहा जा चुका है, जर्मनी बहुत दिनोंसे युद्धकी तय्यारियाँ कर रहा था और वह यूरोपको अपना प्रबल सेनाबल दिखा, सबको दबा रखनेका अवसर ढूँढ रहा था। यही कारण था, कि वह एकाएक युद्धक्षेत्रमें उतर पड़ा; परन्तु जिस तरह जर्मनीका सैन्यबल तय्यार था, ठीक उसके विपरीत न तो बृटिश सेना ही युद्धके लिये प्रस्तुत थी और न बृटिशपक्ष ग्रहण करनेवाले मित्रोंकी सेना ही इतने बड़े शत्रुसे जूझनेके लिये तय्यार थी। जिस समय किचनरने यह भार ग्रहण किया है; उस समय सेनाकी क्या अवस्था थी, यह पाठकोंको गत अध्यायमें बताया जा चुका है और इसके बाद किचनरने किस तरह सैन्यसंख्या बढ़ाई यह भी गत अध्यायमें बताया जा चुका है; परन्तु सबसे अधिक ध्यान देनेयोग्य बात यह है, कि केवल सेना बढ़ाना ही किचनरका काम न था। इङ्गलैण्ड जैसे शान्तिमय और आरामतलब देशमें देश-सेवाका भाव जागरित कर देना भी

किचनरका ही कर्त्तव्य था और यह कर्त्तव्य पालन करनेके लिये उसे प्रत्येक स्थानमें जाकर वक्तृता देनी, लोगोंको उपस्थित कठिनाइयाँ समझाना और देशमें शान्ति स्थापित रखना भी उसका ही काम था। और यह कर्त्तव्य उसने कितनी दृढ़तासे प्रतिपालन किया; इसका पता पाठकोंको इसी बातसे लग सकता है, कि उसने कितना शीघ्र इतना बड़ा सैन्यबल एकत्र कर लिया, जो उसके कालके गालमें चले जानेपर भी, अपने प्राणोंकी पर्वाह न कर अभीतक रणक्षेत्रमें युद्ध कर रहा है।

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि किचनरके कथनानुसार देश-सेवा ही जीवनका एक मात्र कर्त्तव्य है; क्योंकि जिस देशके प्राणियोंमें अपने देशकी ममता नहीं होती, जिस देशके प्राणी देश-सेवाका गौरब और महत्व नहीं समझते और जिस देशके अधिवासी अपनी मातृभूमिकी ओर अपना कर्त्तव्य नहीं पालन करते, वह देश रसातलको चला जाता है। प्रमाण स्वरूपमें यदि ब्रिटिश जाति अपने देश, अपने सम्मान और अपनी मातृभूमिका गौरव नहीं समझती। यदि उस देशके अधिवासी भी यही विचारकर, कि "कोउ नृप होहि हमैंका हानि" चुपचाप बैठे रहते और लार्ड किचनरके लाख चिल्लानेपर भी अपनी विलास-प्रिय निद्रासे न जागरित होते तो आज क्या अवस्था होती? क्या कभी सम्भव था, कि ब्रटेन इतने प्रचण्ड शत्रुसे इतने दिनोंतक युद्ध-कर अपनी मान रक्षा कर सकता था? कदापि नहीं और इसका प्रधान कारण यही था, कि अपने देश और अपने साम्राज्यको विपत्तिमें पड़ते देख, उनकी मोहनिद्रा भङ्ग हो गई थी; उनके हृदयमें देशप्रेम जागरित हो उठा था, उनकी नस नसमें देशसेवा और सम्मानरक्षा-की बिजली दौड़ गई थी और जिस तरह शान्तिके समय मनुष्य जीवनधारण और अन्यान्य कार्य करना अपना कर्त्तव्य समझता

है; उसी तरह युद्धके समय उन लोगोंने आत्म-बलि देना भी अपना कर्त्तव्य समझ लिया और रणमें जानेके लिये प्रस्तुत हो गये। इन्हीं बातोंसे मालूम होता है, कि किस देशके प्राणियोंमें कितना जीवन है और उन्हें अपने देशको कितनी ममता है।

इसका एक कारण और भी है, केवल लार्ड किचनर ही क्यों, उस देशके अन्यान्य नेतागण भी इसी तरह उस देशके अधिवासियों-को जागरित कर रहे थे और देशसेवाका बीज उनके हृदयमें बो रहे थे। अस्तु,

इस विषयको छोड़ अब हम फिर लार्ड किचनरकी ओर झुकते हैं, किचनर कितना उत्साही और कार्यपटु था यह बात आप लोग अच्छी तरह जान चुके हैं और इसीका यह ज्वलन्त प्रमाण है, कि भूमध्यसागरमें चुपचाप बैठकर वेतन लेना उसने उचित न समझा था और वह पद न ग्रहण किया था।

सन् १९१६ की ७ वीं जूनको दोपहरके समय ऐडमिरल सर जान जेलिको जो ब्रटिश जलसेनाके प्रधान सेनापति थे; उनका यह पत्र प्रकाशित हुआ:—

"मुझे बड़े दुःखसे यह समाचार प्रकाशित करना पड़ता है, कि सम्राट्का हैम्पाशायर नामक जहाज जिसपर अपने साथियोंके साथ लार्ड किचनर भी था गत रात्रिके आठ बजे ओर्कनीजके पश्चिम प्रान्तमें सुरङ्गसे या टार्पीडोसे टकराकर टूट गया।

किनारेके अधिवासियोंने जहाजसे चार नावें उतरती देखी थीं उस समय हवा उत्तर पश्चिमी चल रही थी और समुद्रकी अवस्था बड़ी भयानक थी।

"रक्षक और नाशक जहाज उसी समय घटना स्थलपर गये और किनारे पर खोज करनेके लिये एक अन्वेषी दल भी भेजा गया; परन्तु अभी तक कुछ लाशें और एक नाव मिली है।

"क्योंकि किनारा अच्छी तरह खोज लिया गया है। अतः मुझे बड़ा भय है, कि अब किसी मनुष्यके बचनेकी आशा नहीं है। उस अन्वेषकदलसे अभी तक कोई समाचार नहीं मिला है।

सम्राटका "हैम्पशायर" रूस जा रहा था।"

किचनर मर गया; यह बात बड़ी भयानकतासे केवल ब्रटेनमें ही नहीं समस्त साम्राज्यमें फैल गई। यह समाचार फैलते ही चारों ओर शोक दुःख और निराशाकी काली घटा छा गई। क्या इतना बड़ा प्रतिभाशाली और कर्मशील मनुष्य जातीय जीवनकी गोदसे छीन लिया गया? उस मनुष्यका सब हाल पाठकोंको अवगत है; जिसने कितनी ही उपाधियाँ तथा कितने ही सम्मान सूचक पदक पाये थे और अन्तमें १८१४ में वह अर्लकी उपाधिसे विभूषित किया गया था और अब केवल जर्मनीपर विजय ही इसका अन्तिम सम्मान रह गया था।

इस समय जनसाधारणके हृदयमें यह विचार जागरित हो रहा था, कि जो चार नावें हैम्पशायरसे उतरती देखी गई हैं, सम्भव है कि उनमें किचनर हो और आर्कनीज़ाई टापूके किसी प्रान्तमें ये नावें लगी हों और इस तरह किचनरका प्राण बच गया हो। परन्तु इसके बाद ही यह समाचार मिला; कि कर्नल फिज जेरल्डका शव किनारेपर मिला है। यह कर्नल लार्ड किचनरके साथ ही साथ उस जहाजपर था और उसके मन्त्रीके स्वरूपमें कार्य करता था, क्योंकि सन १८०७ से ही इस कर्नल तथा किचनरमें बड़ी घनिष्टता उत्पन्न हो गयी थी। पाठकोंको स्मरण होगा, कि मिस्रमें यह एक बार किचनरकी जीवन रक्षा भी कर चुका था; शुक्रवार को यह समाचार मिला, कि एक नावपर बारह मनुष्य किनारेकी ओर पहुँचे हैं। यह समाचार सुनते ही किचनरके जीवित रहने की आशा फिर जागरित हो उठी; परन्तु इसके बाद ही ऐडमिरल

जेलिकोने जो समाचार भेजा उससे आशालता एक दम मुर्झा गई। ऐडमिरल जेलिकोने लिखा था:—

'यह निश्चित हो गया है कि, हैम्पशायर गत सोमवारको सुरङ्गसे टकराकर डूब गया।

'हैम्पशायरके साथ ही साथ दो नाशक जहाज भी थे; परन्तु समुद्रकी गति भयानक रहनेके कारण सात बजेके समय उसके कैप्टेनको जहाज रोक देना पड़ा।

'कुछ बचे हुए मनुष्योंकी बातोंसे यह मालुम होता है, कि यह दुर्घटना ८ बजनेके कुछ पहले ही घटी और वह जहाज दस मिनिटोंमें डूब गया।

'यह समाचार मिलते ही नाशक और रक्षक जहाज घटना स्थलपर भेजे गये और मोटर गाड़ियोंमें अन्वेषक दल भी किनारेकी ओर भेजा गया।

'यह समाचार मिला था, कि चार नावें जहाजसे उतरती हुई देखी गई हैं; इनका पता लगाने और इन्हे सहायता पहुँचानेके लिये सब जहाजोंको आज्ञा दे दी गई थी।

'परन्तु मुझे बड़े ही शोकसे लिखना पड़ताहै, कि इतने कार्य करनेपर भी भयानक समुद्रके कारण सब नावें नष्ट हो जानेमें कोई सन्देह नहीं रहा और उन बारह मनुष्योंके अतिरिक्त और किसीके भी जीवनकी आशा नहीं है, जो किनारे आ पहुँचे हैं।"

'इन बचे हुए मनुष्योंमेंसे कितनों होका कथन है, कि लॉर्ड किचनर अपने साथियोंके साथ एक नावमें सवार होकर उतर पड़ा था; परन्तु कुछ ऐसा भी कहते हैं, कि वह जहाज़ डूबनेके अन्तिम समयतक भी कैप्टेन सेविलसे शान्तिसे बातें कर रहा था।"

जब यह समाचार फैला, उस समय सम्राट् पञ्चम जार्जको भी इस सेनापतिके लिये बड़ा ही शोक हुआ और सम्राट्की ओरसे

सेना-विभागको यह समाचार भेजा गया :—

"राजाको उस भीषण घटनाका हाल सुनकर बड़ा ही शोक हुआ है, जिसमें युद्धसचिवने अपना प्राण गँवाया है, जबकि वह रूस सम्राट्से किसी आवश्यक विषयपर परामर्श करनेके लिये रूस जा रहा था।"

"फील्ड मार्शल लार्ड किचनरने पैंतालीस वर्षों तक साम्राज्यकी सेवा की है और यह उसीकी असाधारण कार्य प्रतिभा तथा अदम्य उत्साहका फल है, कि यह देश युद्धक्षेत्रमें इतनी बड़ी सेना भेज सका है, जो अभीतक साम्राज्यकी कीर्त्तिकी रक्षा किये हुए है।

'लार्ड किचनरको वीर सैनिक समझकर सैन्य उसके लिये शोकान्वित होगी, क्योंकि कितनी ही कठिनाइयोंके उपस्थित होनेपर भी सैन्य और साम्राज्यकी अतुलनीय सेवा की है।"

उसी समय सम्राट्ने उसकी बहन मिसेज पार्करके पास भी तार भेजकर दुःखमें सहानुभूति प्रकट की।

लार्ड किचनरका ब्रटिश-जनता कितना सम्मान करती थी, इसका पता इसी बातसे लगता है, कि मिस्टर बाल्फ़ोरने उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए कहा था :—

"लार्ड किचनरकी मृत्यु समस्त साम्राज्य पर पाला मार गई है और उसने हम लोगोंको समयके सबसे बड़े समयानुकूल व्यक्तिसे वञ्चित किया है। मेरे लिये यह अवसर वैसा नहीं है, कि मैं उसके बृहत कार्योंकी आलोचना करूं उसके कार्योंका घनिष्ट सम्बन्ध गत बीस वर्षोंमें घटी हुई साम्राज्यकी अनेकानेक विचित्र घटनाओंसे है और जब १९१४ के आरम्भमें, इस देशने देखा, कि कर्त्तव्य पालन करनेके लिये, सन्धिके दायित्व और कर्त्तव्यको पूर्ण करनेके लिये तथा प्रीति और सम्मानकी रक्षा करनेके लिये, उसे सबसे बड़ी सामरिक शक्तिसे युद्ध करना पड़ा है, तो इस देशके

सब पुरुषोंकी दृष्टि किचनरकी ओर घूम गई; क्योंकि वही इस कार्यको परिचालित करने और सम्हालनेके योग्य था।

'मैं बड़े साहससे जब कभी उस घटनाकी ओर विचार करता हूँ, जो उसकी स्मृतिमें सदा उसके नामके साथ ही लगी रहेगी, कि उसने किस प्रकार उद्योग कर इतनी बड़ी विशाल सेना एकत्र कर ली, जिसका दो वर्ष पहले नाम निशान भी न था और जो इस समय केवल अपने ही लिये नहीं, बल्कि अपने मित्रोंके लिये भी युद्धमें भाग ले रही है तो मेरा हृदय उसके लिये व्याकुल हो उठता है।

'किचनरका वियोग राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि आन्तजातिक वियोग हुआ है। यह मेरी नहीं सबकी धारणा है। मैं कह सकता हूँ, कि हम लोगोंमेंसे कोई भी हमारे मित्रों और निरपेक्ष देशोंके महानुभावोंमें इतना परिचित और साथ ही साथ सम्मानित नहीं हुआ है, जितना कि लार्ड किचनर। राजनीतिज्ञोंके साधारण दलका थोड़ा ही नाम विदेशोंमें है; परन्तु लार्ड किचनरके भयानक परिश्रम और उद्योगने उसके जानने वालोंके साथ ही साथ उन लोगोंमें भी उसे परिचित करा दिया; जिन्होंने उसे कभी नहीं देखा था। मुझे विश्वास है, कि उसने हमारे मित्रशक्तियोंकी दृष्टिमें हमारी सेनाका सम्मान बढ़ा दिया।

"हम लोग अपने लिये रोते हैं। हमें उसके लिये न रोना चाहिये। मैं जानता हूँ, कि कीर्तिके उन्नत तरङ्गोंके बीच उस कार्य्यके लिये वह मरा है, जो देशसेवाके लिये आवश्यक था और मैं समझता हूँ, कि वह ऐसी ही मृत्युकी इच्छा भी करता था।"

इसी प्रकारसे लार्ड रोजबेरी तथा विलायतके अन्यान्य प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञोंने भी उसकी इस आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रकट किया था। यही एक ऐसा मनुष्य था, जिसके लिये विलायतके टाइम्स, डेली टेलीग्राफ, डेली क्रानिकल, डेली मेल,

मॉर्निङ्गपोस्ट, डेली एक्सप्रेस आदि पत्रोंने एक स्वरसे शोक प्रकट किया था।

इसी प्रकारसे उसके धार्मिक भावों पर विचारकर विलायतके जितने बड़े बड़े पादड़ी थे; सभोंने उसकी दृढ़ धार्मिकता की प्रशंसा करते हुए उसके लिये आँसू बहाये थे

इस तरह एक सैनिकके शोकमें केवल ब्रटेन ही नहीं बल्कि अन्यान्य देशोंके भी नेताओंने कम शोक न प्रकाशित किया था। आस्ट्रेलिया कैनेडा, आदिने भी बड़ा दुःख प्रकट करते हुए लिखा था;—

"लार्ड किचनरकी मृत्युके भयानक समाचारने समस्त साम्राज्य पर भीषण आतङ्क छा दिया है। यही एक ऐसा मनुष्य था; जिसका बल और व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य इतिहासके इस विशाल सङ्कटमय समयमें शरीर धारण खड़ा हो गया था।

आस्ट्रेलिया उसका बहुत कुछ ऋणी है। उसने ही आस्ट्रेलियाकी रक्षाकी नीव डाली थी। उसने हमलोगोंको अपने अनुभवका बहुत कुछ अंश दिया था और हम लोगोंके पैर उस ओर बढ़ा दिये थे; जिसपर चल कर हम लोग अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रताकी रक्षा कर सकते थे। आस्ट्रेलियाके सैनिक उसे एक बड़ा ही बहादुर योद्धा समझते हैं और उनका विश्वास है, कि उनके पास एक ऐसा मनुष्य था, जो साम्राज्यके मनुष्योंको विजय प्राप्त करनेमें लगा सकता था।"

न्यूजीलैण्डने भी इसी प्रकारसे उसके शोकमें निमग्न हो कितनी ही बातें कही थीं।

वही जेनरल बोथा जो एक बार उसके विपक्षमें था उसने भी लार्ड किचनरके लिये कम शोक न प्रकाश किया था। उसने कहा था—"लार्ड किचनर युद्धमें अभ्यस्त हो गया है। उसने जिस तरह सैन्य संख्या एक सौसे एक हजार, एक हजारसे

दस हजार, दस हजारसे लाखों तक पहुँचाई है ; उस पर ध्यान देनेसे ही सबको आश्चर्य्य चकित रह जाना पड़ता है। यह वह काम था जो देशको स्वतन्त्रता और सुखके लिये किया गया था।"

जिस तरह इन सैनिक पुरुषोंने ये बातें कही थीं ; उसी तरह ब्रटेनको मित्रशक्तियाँ —फ्रांस प्रजातन्त्रके सभापति पोइनकेर, जेनरल जाफरे, फ्रेञ्च सेनाके प्रधान सेनापति आदि तथा इटली, बेलजियम, जापान आदि कितने ही देशके माननीय नेताओंने इसके लिये महान शोक प्रकट किया था।

तेईसवाँ अध्याय।

उपसंहार।

कालस्य कुटिला गतिः।

किचनर अब नहीं है। कठोर कालने अपने कराल गालमें उसे दबा लिया है। अब इस संसारमें उसकी कीर्त्तिके अतिरिक्त और कुछ न रह गया है। यही कीर्त्ति उसकी स्मृतिको वीर सैनिक, महिमान्वितसे देश सेवी तथा साम्राज्यके शुभचिन्तकोंके हृदयमें सदा जागरित किये रहेगी और इस तरह असमयमें ही अपनी जीवन लीला समाप्त करने पर भी किचनर सदा जीवित ही रहेगा ; क्योंकि जिसकी कीर्त्ति है, वह सदा जीवित रहता है।

इस संसारमें जन्म लेकर जिसने देशसेवाकी ओर ध्यान न दिया; जिसने अपनी मातृभूमिके लिये कष्ट सहना स्वीकार न किया; जिसने अपनी समाजकी उन्नति अथवा अवनतिपर लक्ष्य न दे उसे अधोगतिसे ऊपर उठानेका उद्योग न किया; जो किसी न किसी प्रकारसे भी अपने देशके काम न आया—उसका जीवन वृथा है और उसका इस वसुन्धरापर जन्म ग्रहण करना निष्फल है। वह ईश्वरके आगे उसके नियमका पालने वाला कहलाकर स्वर्गका अधिकारी न होगा; उसके स्वार्थपर बन्धु बान्धवोंके अतिरिक्त कोई भी दूसरा उसे अपना समझकर उसके लिये आँसू न बहायगा और वह जब तक जीवित रहेगा; इस पृथ्वीका भार स्वरूप होता हुआ अन्तमें चितानलमें दग्ध हो जायगा—परन्तु मृत्युके समय उसके हृदयमें शान्ति न रहेगी। वह मरनेपर भी जीवित न रह सकेगा; क्योंकि वह अपनी कीर्त्ति स्थापित नहीं कर गया है, उसकी मृत्युके साथ ही साथ उसका नाम निशान भी इस संसारसे चला जायगा।

यही नियम है, और इसी नियमसे संसारमें वे प्राणी अपनी कीर्त्ति छोड़ जाते हैं, जो स्वार्थत्याग सीखे हैं। इतिहासके हजारों पृष्ट उलट डालिये यही बात दिखाई देगी। नैपोलियनने देशके लिये आत्मबलि देना सीखा था; उसकी कीर्त्ति आज भी स्थाई है। जेनरल वाशिङ्गटन आदिने अपने देशके लिये सब पकारके सुखोंका त्याग किया था। उनके न रहने पर भी उनकी कार्यपटुता हम लोगोंको उपदेश देती हुई उनकी स्मृति सदा जागरित रखती है। राणा प्रतापसिंहने अपनी मातृभूमिके लिये बनबन भटकना अङ्गीकार किया था; उनका नाम इस जगतमें अजर अमर हो रहा है। किचनरने भी अपने देशकी अतुलनीय सेवा की, उसकी कीर्त्ति भी संसार पटलपर सदा स्थाई रहेगी।

इतिहासके समुज्वल पृष्ठोंमें उसकी कीर्त्तिको भी स्थान मिलेगा।

यद्यपि वह सागर जलके गम्भीर गह्वरमें समा गया है, यद्यपि उसके देशवासियोंको अन्तमें उसका पीतमुख देखनेका भी अवसर नहीं मिला; परन्तु इससे क्या हुआ? जिसने अपने देशके लिये कुछ भी कष्ट उठाया है। उसका मुख क्या कोई कभी भूल सकता है? यही कारण था; कि उसकी मृत्युका समाचार प्रकाशित होते ही सबको उसका मुख मण्डल स्मरण हो आया और सभी मित्र देश उसकी इस असामयिक मृत्युपर शोक पूर्ण आँसू बहाये बिना न रह सके।

यद्यपि उसका शव न प्राप्त हुआ; परन्तु उसकी स्मृति स्वरूपमें उसका स्मृतिरूपी शव सेण्ट पालके गिर्जेमें बड़े समारोह से गाड़ा गया। जिस समय उसका अन्तिम समारोह उस गिर्जे में हो रहा था; उस समय गिर्जेका बड़ा घण्टा बड़े जोरसे बज रहा था और तोपें छूट रही थीं। इसी तरह इसी स्थान पर ड्यूक आफ़ वेलिङ्गटन भी गाड़ा गया था।

जिस समय लार्ड उल्सली इसी स्थानपर गाड़ा गया था; उस समय किचनरने उसके लिये बहुत कुछ आँसू बहाये थे और वही प्रधान शोककर्त्ता था; क्योंकि इसने उल्सलीकी अधीनतामें बहुत समय तक कार्य किया था। इसके बीस मास बाद ही उस लार्ड राबर्टसको इसी स्थानमें मिट्टी दी गई जो अपने बुढ़ापे की अवस्थामें शत्रुके गोलोंसे रणक्षेत्रमें मरा और इस बार भी लार्ड किचनर ने बहुत कुछ शोक प्रकट किया था। इसी स्थान पर गोर्डनको भी अधिकार मिला था; यद्यपि उसकी लाश मादीके प्रदेशमें पड़ी थी परन्तु उसकी स्मृति यहीं स्थापित हुई थी और आज उस देशसेवीसे अन्तिम विदा लेनेके लिये विलायतके सभी धुरन्धर पुरुष यहाँ एकत्र हुए थे, जो अपने देशकी सेवा करता हुआ ही परलोक सिधारा था। उसके स्मृति स्तम्भपर लिखा था:—

फील्ड मार्शल अर्ल किचनर,

के० जी०, के० पी०, जी० सी० बी०, ओ० एम० जी०सी०, एस० आइ, जी० सी० एम० जी०, जी० सी० आई० ई०

सेक्रेटरी आफ स्टेट फॉर वार (युद्ध सचिव) कर्नल कम्माण्डेण्ट, रायल एञ्जीनियर्स, कर्नल आयरिश गार्डस।

इस समय रायल एञ्जीनियर्स सैन्यके बाजे बज रहे थे। प्रधान मन्त्री, लार्ड सभा तथा साधारण सभाके सभी सभ्य तथा सेनाके अन्यान्य पदाधिकारी गण तथा मित्र राष्ट्रोंके राजदूत और किचनर के कितने ही आत्मीय बन्धु उस स्थान पर उपस्थित थे। कुछ ही देर बाद सम्राट् और सम्राज्ञी भी उस गिर्जेमें आ पहुँचे। इनके साथ महारानी अलेकज़ेण्ड्रिया तथा प्रिन्सेस विक्टोरिया भी थी। इनके अतिरिक्त कितने ही प्रान्तोंके शाहज़ादे और शाहज़ादियाँ वहाँ उपस्थित थे। इस तरह देशके सभी नामी नामी पुरुषोंने उस गिर्जेमें उपस्थित हो, किचनरका सम्मान बढ़ाया था।

बड़ी धूमधामसे उस गिर्जेमें उसकी स्मृति स्थापित हुई। दस हजार मनुष्योंने एक स्वरसे वियोगान्त पद गाते हुए इससे विदा ली। और इस तरह उस वीर पुरुषकी अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त हुई जो अपने समयका एकता ही गिना जाता था। ईश्वर उसकी आत्माको सद्गति दे।

अन्तमें इतना लिखना और भी आवश्यक जान पड़ता है, कि यद्यपि किचनरकी अन्त्येष्टि तक हो चुकी है; परन्तु अभी उसकी बहिन मिसेज़ पार्करको यही विश्वास है कि उसका भ्राता अभी तक जीवित और सम्भवत: कहीं कैद है।

जादूका महल

यह उपन्यास भी अपने ढङ्गका निराला ही है। इसमें ऐय्यारों और जादूगरोंकी विचित्र लड़ाईका हाल बड़ी खूबीके साथ लिखा गया है इसमें स्त्रियोंकी ऐय्यारीका हाल भी बड़े विचित्र ढङ्गसे लिखा गया है ग्रन्थ ऐसा है कि हाथमें लेनेसे छोड़नेका दिल नहीं करता दाम २ भागोंका १)

प्रेमका फल

यह उपन्यास उर्दूकी प्यारी बोल चालमें लिखा गया है और अपने ढङ्गका एक ही है। इसमें शुद्ध प्रेम और उसका परिणाम ऐसी खूबीके साथ दर्शाया गया है कि एक बार हाथमें उठानेसे बिना समाप्त किये दिल नहीं मानता। इतना दिल चस्प होनेपर भी यह उपन्यास शिक्षाका भण्डार है। हम जोर देकर कह सकते हैं कि ऐसा बढ़िया तथा दिलचस्प उपन्यास मिलना कठिन है। दाम केवल ॥)

विचित्र जाल

यह भी एक घटना पूर्ण जासूसी उपन्यास है। इसमें जाल साजोंकी जाल साजी तथा जासूसोंकी चालाकी बहुत मीठी तथा सुन्दर भाषामें वर्णित है। इस पुस्तकको पढ़कर कोई पुरुष कभी जालसाजोंके चङ्गुलमें नहीं फंस सकता। इतना उपयोगी होनेपर भी दाम केवल ।) मात्र है।